सुरेन्द्र मोहन पाठक

सुरेन्द्र मोहन पाठक
दस
मिनट
थ्रिलर

दस मिनट

Surender Mohan Pathak

(थ्रिलर)

First Edition: 1986

Author Website: www.smpathak.com
Author e-mail: contact@smpathak.com

Chapter 1

प्रेम सागर दिल्ली शहर के उन महाहरामी लोगों में से था जिसकी पैंतीस साला मुकम्मल जिन्दगी का फलसफा ही यह था कि मर्द से धोखा खाना, उसके हाथों खराब होना, ही औरत की नियति थी । वह सिर्फ औरत को खराब ही करता होता तो कोई बात न थी, वह तो उसका खानाखराब करता था, उसे यूं तबाह करता था कि मौत में ही उसे कोई पनाह दिखाई देती थी । बकौल उसके वह बाकायदा डायरी बनाकर अपनी जिन्दगी में आयी औरतों का हिसाब न रखता होता तो वह खुद न याद कर पाता कि उसके हाथों बरबाद हुई औरतों का स्कोर क्या हो चुका था । इस सिलसिले में उसकी कार्यप्रणाली कुछ यूं थी कि कम से कम तीन औरतों से वह हर वक्त जुड़ा रहता था - एक वो जो उससे खता खा चुका थी, दूसरी वो जो खता खाने जा रही थी और तीसरी वो जो खता खाने के लिए तैयार की जा रही थी । इनमें से खता खा चुकी औरत का नाम याद रखना तो वह निरी हिमाकत मानता था, खता खाने जा रही औरता का नाम अनुराधा नांगिया था और जिसे वह खता खाने के लिए आज कल तैयार कर रहा था, उसका नाम दीपा साही था । उसकी राइटिंग टेबल पर एक चांदी का फ्रेम मौजूद था जिसमें अनुराधा नांगिया की हंसती-मुस्कराती तस्वीर जड़ी हुई थी लेकिन बहुत जल्द उसकी जगह दीपा साही की वैसी ही हंसती-मुस्कराती तस्वीर लेने वाली थी । उससे पहले जो तस्वीर उस फ्रेम में थी, वह जाकर उसके उन औरतों के रिकार्ड में गर्क हो गई थी जो आज या तो अरब देशों के सस्ते चकले आबाद कर रही थीं और या अपने आपसे शर्मिन्दा होकर मौत के आगोश में पहुंच चुकी थीं ।

अपनी जलील हरकतों में कामयाब होने के लिए खुदा ने उसे दो बहुत कार आमद खूबियां बख्शी थीं । एक तो वह खूबसूरत बहुत था, दूसरे बातें बहुत बढिया करता था । खूबसूरत तो ऐसा था कि कामदेव का अवतार मालूम होता था । किसी नौजवान लड़की की तरफ मुस्करा कर देख भर लेता था तो लड़की के दिल की धड़कन तेज हो जाती थी, टांगें थरथराने लगती थीं और जेहन में बड़े ही सुनहरे सपने तैरने लगते थे । प्रेम सागर की कल्पना वह परी कथाओं के उन शाहजादों जैसी करने लगती थी जो अपनी प्रेयसियों को सोने के हिंडोले में बिठाते थे और बादलों से पार ले जाते थे । बातें वह ऐसी लच्छेदार करता था कि सुननेवालियां मन्त्रमुग्ध होकर सुनती थीं । यह प्रेम सागर का ही कमाल था कि वह जिस लड़की से भी मिलता था, उसे यही लगता था कि वही उसके सपनों का राजकुमार था, उसी में उसके सारे सपने साकार होने वाले थे ।

उसने एक भरपूर निगाह अनुराधा नांगिया की तस्वीर पर डाली ।

लड़की यकीनन खूबसूरत थी - उसने सोचा - लेकिन दौलत उसे किसी भी खूबसूरत लड़की से ज्यादा खूबसूरत लगती थी । अनुराधा पिछले चार महीने से उसके साथ फंसी हुई थी और अभी तक सारा सिलसिला घाटे का ही रहा था ।

लेकिन अब घाटा पूरा करने का मौका आ गया था । अब वह उसे फिल्म स्टार बनवाने बम्बई ले जा रहा था ।

लड़कियां फंसाने के लिए उसके पास जो दो सबसे ज्यादा कारआमद लटके थे, वह थे उन्हें फिल्म स्टार बनवाने का झांसा और शादी का झांसा । अधिकतर लड़कियां पहले लटके की बलिवेदी पर कुरबान होती थीं । लेकिन कभी कोई फिल्म स्टार बनने की खास

ख्वाहिशमन्द नहीं दिखाई देती थी और वह उसे शादी का झांसा देता था ।
अनुराधा फिल्म स्टार बनने की ख्वाहिशमन्द थी, ख्वाहिशमन्द क्या थी मरी जा रही थी फिल्म स्टार बनने के लिए ।
वह एक कोई चौबीस साल की लम्बी, छरहरी, निहायत खूबसूरत लड़की थी और फिल्म स्टार बनने लायक तमाम खूबियां उसमें यकीनन थीं । कनाट प्लेस के एक होटल में वह बतौर रिसैप्शनिस्ट कार्यरत थी और समझती थी कि वहां अपनी जिन्दगी खराब कर रही थी ।
अनुराधा की दूसरी बड़ी खूबी यह थी कि उसके एकाएक गायब हो जाने पर हायतौबा मचाने वाला कोई नहीं था । मां-बाप उसके दोनों मर चुके थे और अपने जिस मामा के साथ वह रहती थी वह वैसे ही भांजी की जिम्मेदारी उठाने के नाम से कलपता रहता था ।
प्रेम सागर इस बात का भी खास ख्याल रखता था कि जो लड़की वह फंसाये, वह या तो अनाथ ही हो और या फिर ऐसे परिवार की हो जो कोई कोहराम खड़ा कर पाने की कतई कुव्वत न रखता हो ।
प्रेम सागर को वह 'किट-कैट' डिस्को में मिली थी । वहां वह अपने एक ब्वाय फ्रैंड के साथ आई थी लेकिन पहली ही शाम को उस ब्याव फ्रैंड की जगह प्रेम सागर ने ले ली थी जिसके बारे में उसे बाद में मालूम हुआ था कि वह उस डिस्को का फिफ्टी पर्सेंट का पार्टनर भी था ।
डिस्को की पार्टनरशिप से प्रेम सागर को दो फायदे थे । एक तो वह दिल्ली शहर की अत्याधुनिक लड़कियों तक पहुंच बनाने के काम आता था और दूसरे वह उसकी उस तगड़ी कमाई की ओट था जो कि उसे अरब देशों में लड़कियां पहुंचाने के काम से हासिल थी । अशोक रोड पर नयी बनी मल्टी स्टोरी बिल्डिंग के एक शानदार फ्लैट में वह रहता था जहां उसका घरबार हबीब नाम का एक सजायाफ्ता मुजरिम चलाता था । फ्रॉड के एक केस में प्रेम सागर खुद भी एक साल की जेल की सजा काट चुका था । जेल में ही उसकी हबीब से मुलाकात हुई थी । हबीब उससे चार साल बाद जेल से छूटा था । तब तक प्रेम सागर दिल्ली में अपने पांव जमा चुका था और वह खुद भी एक खतरनाक लेकिन वफादार नौकर की तलाश में था ।
हबीब को उसने फौरन अपनी मुलाजमत में रख लिया था ।
वैसे वह अपने आपको खुशकिस्मत मानता था कि दिल्ली शहर में कभी किसी को यह भनक नहीं मिली थी कि वे मालिक और नौकर दोनों ही सजायाफ्ता मुजरिम थे ।
अपने विशाल, ऐश्वर्यशाली, फ्लैट के जिस कमरे में वह उस वक्त बैठा हुआ था, वह उसकी स्टडी थी । उसके एक पहलू में दायें से बायें और ऊपर से नीचे तक एक भारी पर्दा खिंचा हुआ था जिसके पीछे एक दरवाजा था जो कि फ्लैट की बाल्कनी पर खुलता था लेकिन जिसे प्रेम सागर ने कभी नहीं खोला था । सामने बैडरूम का बन्द दरवाजा था जिसके पहलू में एक साइड बोर्ड फिट था और फायर प्लेस थी । एक अन्य दीवार पर एक विशाल घड़ियाल टंगा हुआ था जो कि निश्चय ही किसी म्यूजियम में रखे जाने के काबिल था । घड़ियाल पर शीशा आरम्भ से ही नहीं था । वास्तव में उस पर ऐसा कोई फ्रेम ही नहीं था जिस पर कि शीशा लग सकता ।
घड़ियाल पर उसकी निगाह पड़ी तो उसके माथे पर बल पड़ गए ।

घड़ियाल जो वक्त बता रहा था, उसके मुताबिक अनुराधा को वहां कब का पहुंच चुका होना चाहिए था ।

कहां मर गई साली ! - वह मन ही मन भुनभुनाया ।

उसने हबीब के लिए घन्टी बजाई ।

हबीब जैसे अंडों पर पांव रखता हुआ वहां पहुंचा । उसके चलने का स्टाइल ऐसा ही था कि वह सिर पर आ खड़ा होता तो उसके आये होने की भनक मिलती थी ।

प्रेम सागर और हबीब दिखावे के लिए ही मालिक नौकर थे । असल में वे दोनों पक्के यार थे और उनमें खूब गाढी छनती थी ।

"अनुराधा का फोन तो नहीं आया था ?" - उसने पूछा ।

"नहीं ।" - हबीब भावहीन स्वर में बोला ।

"सफर के लिए मेरा एक सूटकेस पैक कर छोड़ो । मैं एकाएक रवाना हो सकता हूं ।"

"कहां ?"

"यह कोई पूछने की बात है, मियां !" - प्रेम सागर बड़े धूर्ततापूर्ण स्वर में बोला ।

"यानी कि मुर्गी हलाल होने को तैयार है ?"

"पूरी तरह से ।"

"पहले बम्बई फिर दुबई ?"

"दुरुस्त । पहले हनीमून फिर मनीमून ।"

"प्रोग्राम वही पन्द्रह दिन का !"

"कम से कम । मुर्गी ज्यादा लजीज निकली तो एकाध हफ्ता और ।"

"क्या बात है ? अभी तक चखी नहीं मुर्गी ?"

"चखी है लेकिन चबाई नहीं ।"

"क्यों ?"

"वो क्या कहते हैं कि सहज पके सो मीठा होय ।"

हबीब तनिक मुस्कराया ।

"उस छोकरे की बाबत कुछ पता लगाया तुमने ?"

"किस छोकरे की बाबत ?"

"लगता है तुम्हारा ध्यान कहीं और है ।" - प्रेम सागर तनिक झुंझलाकर बोला - "मैंने तुम्हें क्या कोई सौ-पचास छोकरों की पड़ताल करने को कहा था !"

"अच्छा, वो छोकरा । लोकेश भार्गव । नई चिड़िया का यार !"

"दीपा का यार-वार कुछ नहीं है वो । खामखाह उसके पीछे लगा हुआ है, साला । मैंने दीपा से उसके बारे में पूछा था । वो कहती है कि उसके और लोकेश के मां-बाप कभी मेरठ में अड़ोस-पड़ोस में रहते थे । बस इतनी-सी बुनियाद है उसकी दीपा से वाकफियत की ।"

"ओह !"

"तुमने क्या जाना ? क्या चीज है वो ?"

"निहायत मामूली चीज है । आपका कम्पीटीटर बनने लायक कोई बात नहीं है उसमें । वैसे वकील है लेकिन काम-धाम नहीं है उसके पास । तीस हजारी में सारा दिन धक्के खाता फिरता है । वहां कचहरी में अपना ठीया तक नहीं है उसका । किसी और के ठीये पर बैठता है ।"

"माली हालत कैसी है ?"

"निहायत मामूली । रो-धोकर ही गुजारा चला पाता है अपना ।"

"फैमिली कैसी है ?"

"इस बाबत मुझे कुछ नहीं मालूम । दिल्ली में अकेला रहता है । करोल बाग के एक बोर्डिंग हाउस में । अपने ही जैसे एक फटीचर वकील दोस्त के साथ ।"

"वैरी गुड ।"

उसने हबीब को वहां से विदा कर दिया और अपनी मेज के एक दराज में से एक डायरी निकाली । उस डायरी में उसके भावी शिकार दीपा साही की एक रंगीन तस्वीर थी जो कि बहुत जल्द मेज पर सजे चांदी के फ्रेम में अनुराधा नांगिया की तस्वीर की जगह लेने वाली थी ।

वह कई क्षण अपलक उस तस्वीर को देखता रहा और फिर बड़े हसरतभरे स्वर में बुदबुदाया - कैसी हसीन है साली ! इस की कीमत तो और भी ज्यादा लगेगी ।

दीपा अभी मुश्किल से बाईस साल की थी, कनाट प्लेस की एक एडवरटाइजिंग एजेंसी में बतौर ले-आउट आर्टिस्ट नौकरी करती थी और कर्जन रोड पर स्थिति वर्किंग गर्ल्स होस्टल में अकेली रहती थी ।

दीपा से उसकी वाकफियत अभी मुश्किल से तीन सप्ताह पुरानी थी । दीपा की एडवरटाइजिंग एजेन्सी के आफिस वाली इमारत में उसने दीपा को लिफ्ट में सवार होते देखा था तो वह उसकी बेहिसाब खूबसूरती से प्रभावित होकर उसके पीछे लग लिया था । चपरासी को पटा कर उसने दीपा का नाम पता वगैरह मालूम किया था । दो रोज बाद उसके डिस्को में एक कल्चरल प्रोग्राम का आयोजन था जिसकी एक कम्पलीमेंट्री टिकट उसने दीपा के आफिस के पते पर भेज दी थी ।

दो दिन प्रेम सागर बहुत सस्पेंस में रहा था ।

लड़की टिकट को फाड़कर फेंक सकती थी, आगे किसी को दे सकती थी या खुद आ सकती थी ।

वह खुद आयी ।

लेकिन कबाब में हड्ड की तरह लोकेश भार्गव नाम के अपने एक युवा मित्र को साथ लेकर आई ।

लोकेश भार्गव एक कोई अट्ठाईस साल का मामूली शक्ल सूरत वाला नौजवान था जो कि सूरत से प्रेम सागर को नीम-पागल लगा ।

बहरहाल दीपा के न आने से उसका मित्र के साथ आना फिर भी अच्छा था ।

वह दीपा से मिला ।

टिकट के बारे में उसने यह सफाई दी कि अपने डिस्को के प्रचार के लिए ऐसी कम्पलीमेंट्री टिकटें लोगों को भेजने का उसके यहां रिवाज था । उसने डायरेक्ट्री खोल कर उसमें से कुछ नाम पते छांटे थे और उन्हें टिकटें पोस्ट कर दी थीं । यह मात्र संयोग था कि ऐसा एक पता दीपा का भी था ।

प्रेम सागर के सौजन्य से उस रात 'किट-कैट' डिस्को में दीपा साही और लोकेश भार्गव की बेमिसाल खातिरदारी हुई जिससे दीपा तो बहुत खुश हुई लेकिन जिसे लोकेश ने बहुत शंका की निगाहों से देखा ।

"बिना वजह जब कोई किसी पर मेहरबान होता है तो जरूर कोई वजह होती है ।" -

उसने दीपा को कहा था ।
लेकिन दीपा ने उसकी बात की तरफ कोई खास ध्यान नहीं दिया था । वह प्रेम सागर से साफ-साफ प्रभावित मालूम होती थी जबकि लोकेश को प्रेम सागर फूटी आंख नहीं सुहाया था ।
साला ! - प्रेम सागर ने मन ही मन लोकेश भार्गव को गाली दी - अपनी नापसन्दगी छुपाने तक की कोशिश नहीं करता था कम्बख्त !
तभी काल बैल बजी ।
उसने जल्दी से दीपा की तस्वीर को डायरी में रखा और डायरी को मेज के दराज में यथापूर्व बन्द कर दिया ।
उसे हबीब के मुख्यद्वार खोलने की आवाज आई ।
वह उठ कर खड़ हो नया ।
तभी स्टडी का दरवाजा खुला और एक निहायत खूबसूरत युवती ने भीतर कदम रखा ।
"हल्लो, डार्लिंग" - लड़कियों को दीवाना कर देने वाली अपनी गोल्डन जुबली मुस्कराहट अपने चेहरे पर लाता हुआ प्रेम सागर बांहें फैलाए उसकी तरफ बढा - "वैलकम ! वैलकम !"
युवती जो कि अनुराधा नांगिया थी, उसकी बांहों में समा गई ।
प्रेम सागर ने हौले से उसके कपोल पर एक चुम्बन अंकित किया और फिर बोला - "क्या बात है, आज तो कहर ढा रही हो ।"
"छोड़ो !" - वह शर्माई और उसकी बांहों से निकल गई ।
प्रेम सागर ने एतराज नहीं किया । लड़की फंसाने का उसका पसन्दीदा और कामयाब तरीका ढील देकर डोर खींचने वाला ही था ।
"क्या बात है ?" - वह अपने स्वर में मिश्री घोलता हुआ बोला - "आज तुम कुछ फिक्रमन्द क्यों लग रही हो ?"
"क्योंकि मैं हूं ही फिक्रमन्द ?"
"वजह ! फिक्र की कौन-सी बात हो गई ! और फिर लानत है मुझ पर कि तुम मेरे होते फिक्र कर रही हो ।"
"प्रेम" - वह बड़ी संजीदगी से बोली - "तुम मेरे एक सवाल का जवाब दो ।"
"एक हजार सवाल पूछो, स्वीट हार्ट । मैं सबका जवाब दूंगा ।"
"तुम वाकई मेरे से प्यार करते हो ?"
"लो ! यह भी कोई पूछने की बात है !"
"करते हो ?" - वह जिदभरे स्वर में बोली ।
"डार्लिंग । हाथ में एक खंजर थामो, मेरा कलेजा चाक करो और फिर देखो कि उस पर किसका नाम लिखा है ।"
वह खामोश रही ।
"अगर इस वजह से फिक्र कर रही हो तो यह तुम्हारी मूर्खता है । मेरी जान, मैं तुम्हारे से इतना प्यार करता हूं जितना आज तक कभी किसी ने किसी से नहीं किया होगा ।"
"मैं एकट्रेस वाकई बन पाऊंगी ? मुझे ब्रेक मिलेगा ?"

"क्यों नहीं मिलेगा ? उस ब्रेक की खातिर ही तो मैं तुम्हें बम्बई ले जा रहा हूं । तुम्हारे सामने ही तो मैंने अपने उस दोस्त को फोन किया था जो बम्बई का माना हुआ प्रोड्यूसर डायरेक्टर है । तुम्हारा तो बम्बई जाते ही कान्ट्रैक्ट साइन हो जाना है । उसके बाद तुम्हें शूटिंग के लिए दुबई जाना है जहां कि मैं तुम्हारे साथ चल रहा हूं ।"

"हम शादी कब करेंगे ?"

"जब तुम बतौर एक्ट्रेस इण्डस्ट्री में स्थापित हो जाओगी ।"

"पहले क्यों नहीं ?"

"अनुराधा । मेरी जान । हमारा सिनेदर्शक हीरोइन की कल्पना कुमारी कन्या के तौर पर ही करता है । वह यह जानकर उखड़ जाता है कि नई होरोइन पहले से शादीशुदा है । इसमें उसकी कल्पना शक्ति वो उड़ानें नहीं भर पाती जो कुमारी कन्या का ख्याल करके भरती है ।"

"हम शादी को राज रख सकते हैं ।"

"नहीं रख सकते । ऐसे राज खुल जाते हैं । ये फिल्मी मैगजीनों वाले नई अभिनेत्रियों की बाबत ऐसी बातें खोद निकालने में बहुत माहिर हैं ।"

"मैं चाहती थी कि शादी पहले हो जाती ।"

"मुझे कोई एतराज नहीं । मैं कल ही तुमसे शादी करने को तैयार हूं लेकिन डार्लिंग, फिर तुम्हें अपने फिल्म कैरियर को गुड बाई ही कहनी पड़ेगी । सोच लो ।"

वह फिर खामोश हो गयी । उसके चेहरे पर उलझन और अनिश्चय के भाव और गहरे हो गये ।

"तुम पागल हो ।" - वह फिर उसे अपनी बांहों में लेता हुआ बोला - "बेमानी, गैरजरूरी बातें सोच-सोच कर खामख्वाह हलकान हो रही हो ।"

"लेकिन..."

"सुनो, सुनो ! पहले मेरी बात सुनो । फिर कुछ कहना ।"

"अच्छा ।"

"तुम्हें मेरे प्यार पर शक है ?"

"वो बात नहीं है लेकिन...।"

"क्या मैं मन वचन और कर्म से पहले ही तुम्हें पत्नी नहीं मान चुका ? अग्नि के चार फेरे लेने की ही तो कसर बाकी है । वो भी मैं अभी लेने को तैयार हूं लेकिन इतनी सी बात अगर तुम्हारे फिल्म कैरियर के रास्ते में अड़ंगा बनकर खड़ी हो गयी तो तुम्हें अफसोस नहीं होगा ?"

"होगा ।"

"सो देयर !"

"प्रेम...!"

"हां, हां । बोलो ।"

"लोग कहते हैं कि तुम पहले से शादीशुदा हो और तुम्हारे बच्चे भी हैं ।"

प्रेम सागर ने जोर का अट्टहास किया ।

"कहां है बीवी !" - वह वैसे ही हंसता हुआ बोला - "कहां हैं बच्चे ! होते तो क्या वो मेरे सिर पर न नाच रहे होते ! तब क्या मैं इस बूढे नौकर हबीब की अधपकी रोटियां और अधगली बोटियां चबा रहा होता ?"

"लोग कहते हैं ।" - वह रुंआसे स्वर में बोली ।
"लोगों का तो काम है बकवास करना । कोई समझदार शख्स ऐसी बेहूदा, बेबुनियाद अफवाहों की ओर ध्यान देता है !"
"लेकिन..."
"और फिर मुझे इससे क्या मतलब कि लोग क्या कहते हैं । मुझे तो इस बात से मतलब है कि तुम क्या कहती हो । मैंने तुमसे मुहब्बत की है, लोगों से थोड़े ही की है । विश्वास बिना मुहब्बत नहीं चलती । अगर तुम्हें मेरे पर शक है तो बेहतर यही होगा कि तुम मुझे छोड़ दो ।"
"नहीं, नहीं" - वह हड़बड़ा कर बोली - "ऐसा कैसे हो सकता है ?"
"लेकिन अगर शक..."
"मुझे तुम पर कतई शक नहीं । मुझे तुम पर पूरा भरोसा है ।"
"दैट्स लाइक ए गुड गर्ल ।"
"प्रेम, इतने साधनसम्पन्न होते हुए भी तुमने मेरे जैसी मामूली लड़की से मुहब्बत की, इसके लिए मैं अहसानमन्द हूं तुम्हारी ।"
"चल, पगली ! मुहब्बत में कहीं अहसान होता है !"
"तुम बहुत अच्छे हो ।"
"मैं तुम्हें इसलिए बहुत अच्छा लगता हूं" - वह जोर से उसे अपनी छाती के साथ भींचता हुआ बोला - "क्योंकि तुम खुद बहुत अच्छी हो ।"
"ओह, प्रेम !" - वह कस कर उसके साथ लिपट गयी ।
कुछ क्षण और दोनों प्रगाढ आलिंगन में बंधे रहे ।
"अब बोलो" - फिर वह उसे अपने से अलग करता हुआ बोला - "क्या अभी भी फिक्रमन्द हो ?"
"नहीं ।"
"पक्की बात ?"
"हां ।"
"और फैसला क्या किया ?"
"वही जो तुम चाहते थे कि मैं करूं । मैंने आज अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया है । कल मैं अपने मामा का घर छोड़ दूंगी ।"
"वैरी गुड । फिर तो हम कल ही बम्बई रवाना हो सकते हैं ।"
वह खामोश रही ।
"तुम्हें कोई एतराज ?"
"नहीं । मुझे क्या एतराज होगा । मेरी तरफ से तो चाहे अभी चलो ।"
"नहीं । अभी तो मुमकिन नहीं । टिकट का इन्तजाम करना होगा । कल ही ठीक रहेगा । ओके ?"
"ओके । अब मैं जाती हूं । तैयारी वगैरह करनी होगी ।"
"ठीक है । अपना पासपोर्ट साथ ले चलना न भूलना ।"
"नहीं भूलूंगी । स्पेशल तो आनन-फानन बनवाया है । भूल कैसे जाऊंगी !"
"तुम्हें अपनी तैयारी में कितना वक्त लगेगा ?"
"एक-डेढ घण्टा ।"

प्रेम सागर ने घड़ियाल पर निगाह डाली ।

"अभी तो सात ही बजे हैं" - वह बोला - "फिर तो तुम ऐसा करो । तैयारी वगैरह करने के बाद नौ बजे डिस्को में आ जाना । वहां हम दिल्ली शहर में तुम्हारी आखिरी रात सैलीब्रेट भी कर लेंगे और मैं तुम्हें यह भी बता दूंगा कि टिकट का क्या इन्तजाम हुआ है ।"

"ठीक है ।"

"मैं डिस्को में तुम्हारा इन्तजार करूंगा । नौ बजे आ जाना, कोई तैयारी रह जाये तो कल सुबह कर लेना । हम ट्रेन से जायें या प्लेन से, जाना हमारा शाम को ही होगा । कल भी बहुत वक्त होगा तुम्हारे पास ।"

"ठीक है ।"

प्रेम सागर ने उसे फिर बांहों में भींचकर प्यार किया और फिर उसे वहां से विदा कर दिया ।

फिर तुरन्त उसने बम्बई फोन किया ।

"खांडेकर" - सम्पर्क स्थापित होते ही वह बोला - "नई चिड़िया फंस गई है । दुबई पहुंच जा ।"

"कब ?" - आवाज आयी ।

"शुक्रवार तक । मैं शुक्रवार दुबई पहुंच जाऊंगा । 'खारतूम' में ठहरूंगा । वहीं लाबी में बाई चांस टकरा जाना ।"

"अच्छा ! माल कैसा है ?"

"बहुत बढिया । बहुत शानदार देखेगा तो गश खा जायेगा । बेचने की जगह अपने लिए बचाकर रखने की सोचने लगेगा ।"

"वाह ! वाह !" - खांडेकर का प्रशंसात्मक स्वर सुनाई दिया - "भाया, टाप का हरामी है रे तू ।"

"शुक्रिया ! शुक्रिया !"

"भाया, उसका कोई रंग रोगन, कल पुर्जे तो बयान कर ।"

"खूब गोरी चिट्टी है । लम्बी ऊंची । बड़ी-बड़ी छातियां, पतली कमर, भारी कूल्हे, लम्बी टांगें, घने लम्बे बाल ।"

"उम्र ! उम्र बोल ।"

"चौबीस ।"

"ज्यादा है । ज्यादा है, भाया ।"

"साले, वो क्या साथ में अपना हायर सैकेन्ड्री का सर्टिफिकेट ला रही है ? मैंने तुझे असलियत बताई है । तूने आगे असलियत थोड़े ही बतानी है ।"

"लगती कितने की है ?"

"मुश्किल से बीस की ।"

"फिर क्या वांदा है । अब बोल, तू कितने दिन बाजा बजायेगा उसका ?"

"यही कोई दस बारह दिन ।"

"बड़ी हद पन्द्रह दिन में वो अपुन को मिल जायेगी ?"

"शुक्रवार के बाद पन्द्रह दिन में ।"

"वही बोला । ठीक है । शुक्रवार को मिलता हूं तेरे को 'खारतूम' में ।"

"ठीक है ।"
प्रेम सागर ने रिसीवर रख दिया ।
फिर उसने अपने ट्रैवल एजेन्ट को फोन किया ।

***

निर्धारित समय पर अनुराधा डिस्को में पहुंच गई ।
उस रोज डिस्को में कुछ खास ही रौनक थी ।
अपनी कामयाबी की वजह से प्रेम सागर खूब अच्छे मूड में था । अनुराधा आरम्भ में तनिक उदास और उखड़ी सी लगी लेकिन दो लार्ज ड्रिंक्स पी चुकने के बाद और डांस फ्लोर के दो राउन्ड लगा आने के बाद वह भी मूड में आ गई ।
ग्यारह बजे के करीब प्रेम सागर एक बार उसके पास से उठ कर आफिस में गया तो एक औरत अनुराधा के करीब पहुंची ।
अनुराधा उससे वाकिफ थी । उसका नाम मोहिनी था और वह वहां की होस्टेस थी । उम्र में वह पैंतीस के पेटे में पहुंची हुई औरत थी । पहले वह कैब्रे डांसर हुआ करती थी लेकिन जब उम्र ने दगा देना शुरू कर दिया था तो प्रेम सागर की मेहरबानी से वह वहां की होस्टेस बन गई थी । अपनी उम्र के लिहाज से वह अभी भी खूबसूरत थी, अलबत्ता उसकी खूबसूरती की चमक दमक खत्म हो चुकी थी ।
"क्या बात है ?" - मोहिनी बोली - "आज बहुत खुश हो । बहुत जगमग-जगमग कर रही हो ।"
"आजादी जो हासिल हो गई है ।" - अनुराधा बोली ।
"आजादी ! कैसी आजादी ?"
"आजाद पंछी की तरह जिधर जी चाहे उड़ चलने की आजादी ।"
"किधर उड़ चलने का इरादा है ?"
"परदेस ।"
"क्यों ?"
"क्यों क्या ? यूं ही मौज-मेले के लिए । सैर-सपाटे के लिए । शापिंग के लिये ।"
"कोई लाटरी निकल आयी है ! कोई रईस चाचा-मामा मर गया है ?"
जवाब में अनुराधा हंसी ।
"यह परवाज तनहा है या हमारी चिड़िया के साथ कोई चिड़ा भी है ?"
तभी प्रेम सागर आफिस से बाहर निकला । अनुराधा ने बड़ी अनुरागपुर्ण निगाहों से उसकी तरफ देखा । प्रेम सागर ने उसे पांच मिनट और इन्तजार करने का इशारा किया और डिस्को के एक कर्मचारी को बुलाकर वापस आफिस में घुस गया ।
"हे भगवान !" - मोहिनी एकाएक नेत्र फैला कर बोली - "तुम्हारा यह मौज-मेला, सैर-सपाटा, शापिंग का प्रोग्राम कहीं सागर साहब के साथ तो नहीं होने वाला ?"
"मैंने सागर साहब का नाम कब लिया ?"
"नाम तो नहीं लिया लेकिन आसार मुझे ऐसे ही लग रहे है ।"
"क्यों लग रहे हैं ?" - अनुराधा इठला कर बोली - "क्या दिल्ली शहर में सागर साहब के अलावा कोई और मर्द मेरा एडमायरर नहीं हो सकता ?"
"क्यों नहीं हो सकता ? तुम्हारी नौजवानी की उम्र है । इस उम्र में तो मर्द कुत्तों की तरह दुम हिलाते हुए तुम्हारे पीछे फिर सकते हैं ।"

"तो फिर ?"
"अनुराधा, मैं बात डिटेल में नहीं जाना चाहती लेकिन एक बात फिर भी कहना चाहती हूं ।"
"क्या ?"
"अगर तुम अपनी आइन्दा जिन्दगी का कोई गंठजोड़ सागर साहब से करने वाली हो तो यह खतरनाक इरादा छोड़ दो ।"
"क्यों ?"
"क्योंकि तुम बरबाद हो जाओगी ।"
"क्यों बरबाद हो जाऊंगी ?"
"अब मैं तुम्हें कैसे समझाऊं ?"
"तुम जलती हो इसलिए मुझे गुमराह करने की कोशिश कर रही हो ।"
"अरी नादान लड़की, मैं तो तुझे सही रास्ता दिखाने की कोशिश कर रही हूं । मैं तो तुझे वक्त रहते चेताने की कोशिश कर रही हूं ।"
"मुझे नहीं चेतना ! तुम्हीं चेती रहो ।"
"वो आ रहा है ।" - मोहिनी उठती हुई बोली - "मैं जाती हूं । लेकिन फिर कहती हूं उसके साथ कहीं मत जाना ।"
अनुराधा ने एक उपेक्षापूर्ण हंसी हंसी ।
मोहिनी के वहां से विदा होते ही प्रेम सागर वहां पहुंचा ।
"मोहिनी से क्या बातें हो रही थीं ?" - वह बोला ।
अनुराधा हिचकिचाई । अगर वह हकीकत बयान करती तो शर्तिया मोहिनी की शामत आ जाती । वह अपनी दिल्ली में गुजरी आखिरी रात को किसी का कोई बुरा करके नहीं जाना चाहती थी इसलिए वह बोली - "कुछ नहीं । यूं ही । कोई खास बात नहीं हो रही थी ।"
प्रेम सागर भी उस घड़ी आगे जिद करने के मूड में नहीं था ।
"टिकट का इन्तजाम हो गया है ।" - वह बोला - "शाम की फ्लाइट से हम बम्बई जा रहे हैं । मैंने डिस्को के ड्राइवर को बोल दिया है । वह तुम्हें एयरपोर्ट के लिए लेने आ जायेगा ।"
"ठीक है ।"

***

दुबई के 'खारतूम' होटल के एक लग्जरी सूट में प्रेम सागर और उसकी बेगम अनुराधा के 'हनीमून' का एक हफ्ता ऐसी तूफानी रफ्तार से गुजरा कि अनुराधा को सात दिन सात मिनटों में गुजर गये मालूम हुए ।
वे बम्बई पहुंचे थे तो प्रेम सागर ने उसे बताया कि उसका प्रोड्यूसर-डायरेक्टर दोस्त, जो कि अनुराधा को स्टार बनाने वाला था, एकाएक दुबई चला गया था और उनके लिए सन्देशा छोड़ गया था कि वे भी दुबई पहुंच जायें । अनुराधा के पास यह जानने का कोई साधन नहीं था कि हकीकतन ऐसा कोई शख्स था ही नहीं । अगले दिन वे दुबई पहुंच गये और जाकर 'खारतूम' होटल के एक सूट में बुक हो गये । वहां प्रेम सागर ने अगली खबर यह सुनाई कि हीरो, जो कि मद्रास में शुटिंग कर रहा था, पर पहुंच नहीं पाया था और हफ्ता भर पहुंचने वाला भी नहीं था इसलिए प्रोड्यूसर-डायरेक्टर अपनी सपोटिंग

कास्ट को लेकर कुछ ऐसे दृश्यों की शूटिंग करने के लिये सिंगापुर चला गया था जिनमें कि हीरो हीरोइन की जरूरत नहीं थी । यानी कि, बकौल प्रेम सागर, अब मुनासिब यही था कि उसके वापिस दुबई लौटने का इन्तजार किया जाता और तब तक जी भरकर जिन्दगी का आनन्द लिया जाता ।

जो कि सात दिन उसने जी भरकर लिया ।

फिर आठवें दिन दोनों में ऐसी तकरार हुई कि तौबा भली ।

अनुराधा को तो उस तकरार ने भौंचक्का कर छोड़ा । वह तो यह भी न समझ सकी कि आखिर तकरार का माहौल कैसे बना था, वह शुरू क्योंकर हुई थी और कैसे वह न चाहते हुए भी उसमें शरीक हो गयी थी । वह इश्क से चौंधियाई न हुई होती तो उसके लिये यह समझ लेना कोई बहुत बड़ी बात न होता कि वह तकरार एक पूर्वनिर्धारित योजना के अनुसार, एक खास मकसद की खातिर जानबूझ कर छेड़ी गयी थी और सरासर एकतरफा थी ।

उस रोज गुस्से में भुनभुनाता प्रेम सागर दोपहर को होटल से निकला और आधी रात के बाद वापिस आया ।

उसने आकर अनुराधा की थोड़ी पुचपुच की और तकरार के लिए किसी हद तक खेद प्रकट भी किया । अनुराधा ने प्रत्यक्षत: यही जाहिर किया कि सब ठीक ठाक हो गया था लेकिन हकीकतन वह कतई आश्वस्त नहीं हो पाई थी । अब उसे अपने सामने मौजूद प्रेम सागर वही शख्स नहीं लग रहा था जिसके साथ वह दिल्ली से वहां आयी थी और जो उसकी एक-एक अदा पर बलिहार जाता था । जो नया प्रेम सागर उसके सामने मौजूद था, उससे तो वह खौफ खाने लगी थी ।

उसने अनुराधा को बताया कि उसे रुपये-पैसे की कोई दिक्कत पेश आ रही थी जिसका दुबई में इन्तजाम करने के लिए उसे इतने पापड़ बेलने पड़ते थे कि वह एक निष्ठावान पति की तरह हर घड़ी उसके साथ नहीं रह सकता था । उसे यह आश्वासन देकर, कि वह दिक्कत महज एकाध दिन की थी, वह अगली सुबह होटल से रवाना हुआ तो सारा दिन वापिस न लौटा । और दो दिन बाद तो ऐसा हुआ कि रात को वापिस लौटने की जगह उसका फोन आ गया कि वह कहीं फंस गया था और रात को होटल में उसके पास नहीं लौट सकता था ।

परदेस में हालात की उन तब्दीलियों ने अनुराधा को बहुत खराब किया होता अगर दुश्वारी के उन दिनों में खांडेकर उसका मददगार न साबित हुआ होता । खांडेकर दुबई में ही बसा हुआ एक सम्पन्न और 'निहायत भला - मानस' आदमी था जो इत्तफाक से उनके दुबई प्रवास के पहले ही दिन होटल की लाबी में अपने पुराने दोस्त प्रेम सागर से टकरा गया था । वह कोई पचास साल का मामूली शक्ल वाला लेकिन निहायत खूबसूरत कपड़े पहनने वाला हट्टा-कट्टा तन्दुरूस्त मराठा था जो अनुराधा की तनहाई की उन घड़ियों में उसके बहुत काम आया । उसने इस बात के लिए अफसोस जाहिर किया और बाकायदा अपने दोस्त की लानत मलानत की कि अपनी नई ब्याही बीवी से ज्यादा उसे अपने बिजनेस का ख्याल था, अपनी बीवी की दुश्वारियों से ज्यादा उसे अपनी माली दुश्वारियों का ख्याल था ।

अनुराधा की तनहाई की घड़ियों को मनोरंजक बनाने के लिए उसने एक निहायत जिम्मेदार भद्र पुरूष की तरह, उसके पति के एक फर्माबरदार दोस्त की तरह, उसे दुबई की

खूब सैर करवाई । उसने बड़ी संजीदगी से अनुराधा की महत्वाकांक्षाओं के बारे में सुना और इस बात की तसदीक की कि फिल्म स्टार बनने के लिए दरकार सारी खूबियां उसमें बहुतायत में मौजूद थीं । एक शाम वीडियो पर श्रीदेवी को एक हिन्दोस्तानी पिक्चर दिखते वक्त तो उसने यहां तक कहा कि श्रीदेवी तो उसके मुकाबले में कुछ भी नहीं थी ।

उस रात भी जब वह खांडेकर के साथ घूम-फिरकर वापिस लौटी तो उसने प्रेम सागर के इस सन्देशे को अपना इन्तजार करता पाया कि उस रात भी वह होटल वापिस नहीं लौटा सकता था ।

खांडेकर फिर अनुराधा के साथ हमदर्दी दिखाता और अपने दोस्त को नालायक और गैरजिम्मेदार करार देता हुआ वहां से विदा हो गया ।

अगले रोज हमेशा की तरह सुबह लौटने की जगह प्रेम-सागर शाम को लौटा ।

एक निहायत बुरी खबर के साथ ।

उसने बताया कि दिल्ली में उसके डिस्को पर पुलिस की रेड पड़ गयी थी, उसका पार्टनर गिरफ्तार हो गया था और हालात इतने पेचीदा बन गये थे कि उसका फौरन दिल्ली लौटना निहायत जरूरी था ।

“कल दिल्ली के लिए सीधी फ्लाइट है” - वह बोला - “हम उससे वापिस लौट रहे हैं ।”

“दिल्ली !” - अनुराधा भौंचक्की सी बोली - “लेकिन मैं दिल्ली कैसे जा सकती हूं ?”

“क्यों ? क्यों नहीं जा सकती हो ?”

“प्रेम, मैं उस शहर से अपनी मुकम्मल रिश्तेदारी तोड़ आयी हूं । तुम शायद भूल रहे हो कि मैं अपने मामा के घर से भागकर तुम्हारे साथ यहां आयी हूं । मैं उस शहर में अब वापिस मुंह कैसे दिखा सकती हूं ?” - वह एक क्षण ठिठकी और फिर त्रस्त भाव से बोली - “खास तौर से तब जबकि अभी... अभी हमारी... शादी भी नहीं हुई है ।”

“शादी ही सब कुछ नहीं होती । प्यार भी कुछ होना है ।”

“मैं मानती हूं लेकिन दुनिया तो नहीं मानती ।”

“दुनिया की...”

प्रेम सागर के मुंह से इतनी भद्दी गाली निकली कि अनुराधा हकबका कर उसका मुंह देखने लगी । जिस गाली का निशाना दुनिया थी, न जाने क्यों उसे लगा कि हकीकतन वह उसे दी गई थी ।

“ठीक है ।” - फिर वह बोला - “तुम यहीं रहो । मैं अकेला दिल्ली जाता हूं और यहां ठीक-ठाक करके जितनी जल्दी हो सके यहां वापिस लौटता हूं ।”

“कब ? कब ?”

“अब तुम्हारी इस कब का क्या जवाब दूं मैं । इस कब का जवाब तो वहां के हालात का जायजा लेने के बाद ही दिया जा सकता है । हो सकता है मैं उलटे पांव लौट आऊं । हो सकता है बीस-पच्चीस दिन लग जायें ।”

उस अजनबी शहर में बीस-पच्चीस दिन तनहा गुजारने के ख्याल से ही अनुराधा का कलेजा लरज गया ।

“ब-बीस, प-पच्चीस दिन !” - उसके मुंह से निकला ।

“हां ।”

“म - मैं यहां - अ - केली...”

"क्या किया जाये ? मजबूरी है ।"

"लेकिन..."

"मैं लेकिन वेकिन कुछ नहीं जानता" - एकाएक प्रेम सागर गरज कर बोला - "तुम समझती हो कि..."

उस रोज, पहले की तरह ही खामखाह, उन दोनों में पहले से भी भयंकर तकरार हुई । उस बार न सिर्फ प्रेम सागर ने गालियां बकीं बल्कि अनुराधा पर हाथ भी उठा दिया और फिर वैसे ही गरजता-बरसता होटल से कूच कर गया ।

तब अनुराधा को यह समझते देर न लगी कि उनके बीच पनपते रोमांस और प्यार-मुहब्बत के जज्बे की अकाल मृत्यु हो भी चुकी थी ।

उस रोज वह बहुत रोई ।

रोने का वह लम्बा सिलसिला खांडेकर के आगमन पर खत्म हुआ ।

खांडेकर ने उसका खस्ता हाल दखकर सहानुभूति के कुछ ही शब्द कहे कि उस अजनबी देश में उसे अपना इकलौता हमदर्द मानकर उसने अपनी सारी दुश्वारियां और विपत्तियां खांडेकर के सामने उड़ेलनी शुरू कर दीं ।

"कमाल है !" - खांडेकर तिरस्कारपूर्ण स्वर में बोला - "इतनी बेहूदा बातें कीं उसने ! मुझे तो यह सोचकर शर्म आ रही है कि वह नालायक आदमी मेरा दोस्त है । मैं बात करूंगा उससे देख लेना वह तुम्हारे पास आएगा और तुम्हारे सामने नाक रगड़कर तुमसे मांफी मांगेगा । मैं जाकर ढूंढता हूं उसे ।"

अनुराधा ने बड़े कृतज्ञ भाव से सहमति में सिर हिला दिया ।

खांडेकर अगले रोज लौटा । अकेला । पहले से भी ज्यादा हौलनाक खबर के साथ ।

उसने बताया कि अनुराधा से हुई पहली तकरार के बाद से प्रेम सागर एक स्थानीय कैसीनो में जाने लगा था जहां कि वह जुए में बहुत पैसा हार गया था । और बातों के साथ-साथ उसका दिल्ली जाना इसलिए भी जरूरी था क्योंकि बहीं से वह रुपये-पैसे का कोई इन्तजाम कर सकता था ।

"अ... आप से क्यों नहीं ?" - अनुराधा ने बडे संकोच से पूछा ।

"क्योंकि मैं तो पहले ही उसे बहुत ज्यादा, अपनी हैसियत से कहीं ज्यादा, रुपया उधार दे चुका हूं । मैं समझा था कि वह किसी धन्धे की फिराक में था । अब मुझे क्या पता था कि वह सारा रुपया जुए में उड़ा रहा था ।"

कई क्षण खामोशी रही ।

"बहरहाल" - फिर खांडेकर बोला - "होटल का बिल अदा करने लायक रकम तो वो आपके पास छोड़ हो गया होगा ।"

अनुराधा को जैसे सांप सूंघ गया ।

"होटल का बिल !" - उसके मुंह से निकला ।

"यही कोई साठ-सत्तर हजार रुपये का होगा ।"

"स... साठ-सत्तर ह... हजार !"

"हां !"

"लेकिन मुझे तो प्रेम कुछ भी नहीं दे गया ।"

"न सही । आपके अपने पास भी तो चार पैसे होंगे ।"

"मेरे पास तो मुश्किल से हजार बारह सौ रुपये हैं ।"

"च... च... च ! यह तो बहुत गड़बड़ हो गयी । होटल वालों को यह बात पता लग गयी तो वो तो अभी बिल मांगना शुरु कर देंगे ।"

"बिल तो प्रेम आकर चुका देगा ।"

"जरूर चुका देगा लेकिन अभी तो वो गया है । पता नहीं कब लौटेगा ! तब तक तो बिल बढता ही जायेगा । और फिर..."

खांडेकर ने जानबूझ कर वाक्य अधूरा छोड़ दिया ।

"फिर क्या ?" - अनुराधा ने सशंक स्वर में कहा ।

"अगर वो न लौटा ?"

अनुराधा के सिर पर गाज सी गिरी ।

"ऐसा कैसे हो सकता है ?" - वह आतंकित भाव से बोली ।

"हो तो नहीं सकता । लेकिन हो गया तो ?"

"तो... तो..."

अनुराधा को जवाब न सूझा । अब एकाएक उसे अपने सामने अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई देने लगा ।

"खांडेकर साहब ।" - वह बड़े दयनीय स्वर में बोली - "मेरा तो दिल बैठा जा रहा है ।"

"बात है ही ऐसी ।" - खांडेकर पूरी संजीदगी से बोला ।

"आप कुछ कीजिये ना ।"

"मैं !"

"जी हां ! आपके सिवाय अब यहां मेरा और कौन-सा सहारा है ?"

"यह भी सच है । ठीक है, मैं देखता हूं क्या किया जा सकता है ।"

अगले दो दिन खांडेकर ने भी दर्शन न दिये । उसके न आने पर ही अनुराधा को यह सूझा कि उसने कभी बताया ही नहीं था कि दुबई में वह कहां रहता था । उन दो दिनों में उसने कई बार दिल्ली में प्रेम सागर को ट्रंक काल लगवाई लेकिन हर बार यही जवाब मिला कि दूसरी तरफ से कोई जवाब हासिल नहीं हो रहा था ।

अब उसका दिल साफ-साफ गवाही देने लगा कि प्रेम सागर लौटकर नहीं आने वाला था । फिर भी वह उम्मीद के खिलाफ उम्मीद करती रही कि वह लौटा आयेगा । वह उससे प्यार करता था । वह उसे यूयं मंझधार में नहीं छोड़ सकता था ।

प्यार !

क्या वाकई ?

उसका दिल और भी डूबने लगा ।

अब वह सोचने लगी कि प्रेम सागर के खिलाफ चेतावनी देते वक्त काश मोहिनी ने उसे ठीक से कुछ बताया होता ।

लेकिन वह उसे ठीक से भी कुछ बताती तो क्या अपनी उस मानसिक स्थति में वह मोहिनी की किसी बात पर विश्वार कर पाती ?

नहीं - उसके दिल ने यही जवाब दिया ।

खांडेकर ने तीसरे दिन सूरत दिखाई ।

"इत्तफाक से एक ऐसी सूरत निकल आयी है ।" - वह बोला - "जो आपकी रुपये-पैसे की समस्या हल कर सकती है ।"

"क्या ?" - वह आशापूर्ण स्वर में बोली ।
"अब यह आपने सोचना है कि वह सूरत आपको कबूल होगी या नहीं ।"
"सूरत क्या है ?"
"आपको डांस आता है ?"
"कैसा डांस ?"
"कैसा भी । कोई भी । कैब्रे स्टाइल । फिल्मी ।"
"शौकिया आता है थोड़ा बहुत । क्यों ?"
"फिर तो काम बन सकता है ।"
"कैसे ?"
"आपको एक डांस परफारमेन्स देनी होगी । एक ही परफारमेन्स के पचास हजार रुपये मिलेंगे ।"
"कहां ?"
"यहां के एक अरबपित शेख के महल में । उसके मेहमानों के सामने ।"
"कोई ऊटपटांग पोशाक तो नहीं पहननी पड़ेगी ?"
"पोशाक" - वह सिर झुकाये खेदपूर्ण स्वर में बोला - "पहननी ही नहीं पड़ेगी ।"
"क्या !" - अनुराधा के छक्के छूट गये - "आप मुझे न कपड़ों के बिना नाचने की राय दे रहे हैं ।"
"मजबूरी है । रकम मैं साथ लाया हूं ।"
और उसने सौ-सौ के नोटों की पांच गड्डियां उसके सामने मेज पर रख दीं ।
अनुराधा ने आशापूर्ण नेत्रों से नोटों की तरफ देखा और फिर उधर से निगाह फेर ली ।
"ऐसी दो या तीन परफारमेन्स देने से ही आपकी तमाम दुश्वारिया हल हो जायेंगी ।" - खांडेकर बोला ।
"लेकिन... लेकिन..."
"आप बात को यूं समझिये । आप फिल्म स्टार बनने की ख्वाहिशमन्द हैं । न होने जैसे कपड़ो में डांस तो आजकल बड़ी-बड़ी फिल्म अभिनेत्रियों से कराये जाते हैं । आप यह समझिये कि आप फिल्म के लिए ऐसा डांस कर रही हैं । फिल्म दर्शक न हुए, शेख और उसके मेहमान हो गए । ऊपर से इस वक्त आपकी जरूरत है । आपने यह मौका हाथ से छोड़ दिया तो आगे पता नहीं क्या बीते ? आगे क्या पात ऐसा भी मौका दोबारा न मिले ।"
"और कोई चारा नहीं ?"
"होता तो मैं आपको ऐसा डांस करने कि लिये कहता ! आखिर आप मेरे दोस्त की बीवी हैं ।"
"वहां कोई और ज्यादती तो नहीं होगी ?"
"और ज्यादती क्या ?"
"कोई भी ।"
"मैं समझ गया आपकी बात । कोई ज्यादती नहीं होगी । मेहमान सब फोरन डिप्लोमेट हैं जिनकी सर्फ डांस में दिलचस्पी है । उनका मेजबान अरब शेख सत्तर साल का बूढा है । बड़ी हद उसकी ख्वाहिश आपको छू लेने भर की होगी । उससे आपका क्या

बिगड़ जायेगा !"

"अगर कोई ज्यादती फिर भी हुई तो आप मेरी हिफाजत करेंगे ?"

"सौ फीसदी । मैं आपको साथ लेकर जाऊंगा, साथ लेकर आऊंगा । सिर्फ आपके डांस के दौरान मैं आपके करीब नहीं होउंगा ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि" - वह सिर नीचे झुकाये, अपने जूते की नोक से कालीन को कुरेदता हुआ कातर स्वर में बोला - "अपने जिगरी दोस्त की बीवी को बेलिबास देखना मुझे गवारा न होगा ।"

अनुराधा के मन में खांडेकर के लिए इज्जत कई गुणा बढ गई ।

कैसा भला आदमी था !

उसे रात से अनुराधा के सर्वनाश की शुरुआत हो गई । अरब शेख के महल में डांस परफारमेन्स तो दस मिनट चली और शेख समेत वहां मौजूद ग्यारह आदमियों के बीच उसकी नोच-खंसोट सारी रात चली । उसके साथ सामूहिक बलात्कार हुआ जिसके दौरान वह 'भला आदमी' वहां मौजूद नहीं था जो उसे पचास हजार के बदले में एक रात का 'मामूली काम' बता रहा था ।

सुबह वह खांडेकर के साथ शेख के महल से विदा हुई । रास्ते में टैक्सी में उसने जब अपनी पिछली रात की दुर्गति की दास्तान सुनाई तो खांडेकर ने ऐसा रौद्र रूप दिखाया कि अनुराधा का दम निकल गया । उसने उसे शेख का धोखा करार दिया और उसी क्षण वापिस लौटकर उस शेख के बच्चे और उसके सारे मेहमानों का खून कर डालने की घोषणा की ।

अनुराधा बड़ी मुश्किल से उसे शांत कर पायी ।

दो दिन शान्ति रही । उस दौरान शेख से मिली रकम में से खांडेकर ने होटल का आधा बिल चुका दिया और दस हजार रुपये अनुराधा को पास रखने के दे दिये ।

तीसरे दिन फिर उसने वैसी ही डांस परफारमेन्स की आफर पेश की और गारन्टी की कि इस बार पहले जैसा हादसा नहीं होगा ।

उस बार उसकी पहल से भी बुरी गत बनी ।

साथ ही उस बार उसे 'भले आदमी' की असलियत भी मालूम हो गई ।

नये शेख के महल की एक नौकरानी ने उसे बताया कि खांडेकर का ता धन्धा ही अरब शेखों की नौजवान लड़कियां सप्लाई करने का था । इन्डियन लड़कियों के दलाल के तौर पर दो दुबई का बच्चा-बच्चा उसे जानता था ।

तब अनुराधा के ज्ञानचक्षु खुले और उसे पहली बार महसूस हुआ कि उनका वह अंजाम तो तभी तय हो चुका था जब प्रेम सागर नाम के कामदेव के अवतार ने पहली बार उसकी तरफ मुस्करा कर देखा था ।

उसने खांडेकर को बताया कि वह उसकी असिलयत जान चुकी थी तो उसने भी फौरन अपनी जात दिखा दी । उसने उसे बताया कि उसका पासपोर्ट उसने अपने पास जब्त कर लिया था और अब उसकी भलाई इसी बात में थी कि वह छः महीने तक उसकी हर बात मानती जाए । छः महीने में दुबई के तमाम एय्याशों में नई लड़की सर्कुलेट हो चुकी होती थी । उसके बात वह उसे उसका पासपोर्ट देकर, इन्डिया को टिकट देकर, और एक मोटी रकम देकर वापिस विदा कर सकता था ।

उन हालात में अनुराधा के पास हामी भरने के अलावा कोई चारा नहीं था । बरबाद तो वह हो ही चुकी थी, थोड़ी और बरबादी से क्या फर्क पड़ने वाला था ।

काश वह भविष्य में झांक पाती और जान पाती कि अभी तो वह कुछ भी बरबाद नहीं हुई थी । अभी तो उसकी चकला-दर-चकला बिक्री होनी थी ।

प्रेम सागर नाम का सफेद, पोशसभ्रान्त बुर्दाफरोश अनुराधा नांगिया नाम की चिड़िया की फरोख्त से पांच लाख रुपये का मुनाफा और बतौर ब्याज एक सप्ताह उसका यौवन चूस कर खुशी-खुशी वापिस अपने शहर पहुंचा जहां उसने नया जाल बिछाना था, नई चिड़िया फंसानी थी, नई रकम कमानी थी ।

अपने फ्लैट पर पहुंचते ही उसने जो पहला काम किया था, वह अपनी टेबल पर पड़े चांदी के फ्रेम में से अनुराधा नांगिया की तस्वीर निकालकर उसकी जगह दीपा साही की तस्वीर लगाने का था ।

***

मोहिनी ने एक निगाह डिस्को में एक कोने की टेबल पर तनहा बैठे लोकेश भार्गव पर डाली जो बार-बार घड़ी देख रहा था और दीपा का इन्तजार कर रहा था ।

केवल वही जानती थी कि उसका इन्तजार बेमानी साबित होने वाला था ।

कुछ सोच कर वह उसकी टेबल पर पहुंची ।

लोकेश को वहां आते कई महीने हो गये थे इसलिये अब वह मोहिनी से, उसके वहां दर्जे से, भली भांती परिचित था ।

"दीपा का इन्तजार हो रहा है ?" - वह उसके सामने पड़ी खाली कुर्सी पर बैठती हुई बोली ।

लोकेश ने बड़े उदास भाव से सहमति में सिर हिलाया ।

"उसने कहा था वो यहां आने वाली थी ?"

"आजकल वो तकरीबन रोज ही आती है यहां । मैंने सोचा आज भी आयी होगी ।"

"आज तो वो यहां नहीं दिखाई दे रही ।"

"जाहिर है ।"

"और" - वह अर्थपूर्ण स्वर में बोली - "सागर साहब भी नहीं दिखाई दे रहे ।"

लोकेश ने सकपका कर उसकी तरफ देखा ।

मोहिनी बड़ी लापरवाही से परे देखने लगी ।

"सागर साहब का जिक्र खासतौर से किसलिए ?" - लोकेश ने पूछा ।

"खासतौर से तो नहीं ।" - वह बोली - "मैंने तो यूं ही कहा था कि आज सागर साहब भी यहां मौजूद नहीं थे जब कि इस वक्त वे हमेशा यहां मौजूद होते हैं बशर्ते कि..."

"बशर्ते कि क्या ?"

"...दीपा भी यहां मौजूद हो ।"

"तुम यह कहना चाहती हो कि तुम्हारे साहब इस वक्त कहीं दीपा की सोहबत में है ।"

"क्यों ? क्या हमेशा ही वे यहां नहीं होते ?"

लोकेश खामोश रहा ।

"मिस्टर, तुम आंख रहते अंधा हो वरना हर किसी को दिखाई दे रहा है कि तुम्हारी सहेली किस बुरी तरह से मेरे बास पर फिदा है ।"

"नहीं । अन्धा तो मैं नहीं हूं ।" - लोकेश बड़ी संजीदगी से बोला - "दिखाई तो मुझे पूरा दे रहा है । छः महीने से यही नजारा तो मैं करता आ रहा हूं । वो सीधी-सादी लड़की खामख्वाह तुम्हारे हरामी बॉस के चक्कर में फंसी जा रही है ।"

"उसे समझाओ ।"

"वो नहीं समझती । यह प्रेम सागर का बच्चा पता नहीं कौन-सा जादू जानता है, पता नहीं कौन-सी पट्टी पढाता है, कौन-सा लालच देता है खूबसूरत लड़कियों को कि हर कोई इसके इशारा पर नाचने लगती है ।"

"हां ।" - मोहिनी ने सहमति जताई - "है तो यह कोई जादूगरी का ही काम ।"

"काश मेरा पास कोई ऐसा तरीका होता जो इस हरामजादे को एक्सपोज कर पाता ।"

मोहिनी खामोश रही ।

"लड़कियां तो बहुत खराब कर चुका होगा तुम्हारा बॉस ।"

"मुझे क्या पता ।"

"क्यों ? तुम्हें क्यों नहीं पता ? तुम उसकी पुरानी मुलाजिम हो । यह जगह उसका अड्डा है । तुमने तो बहुत नजारे देखे होंगे । मुझसे क्या छुपाना ?"

"हां । देखे तो हैं । यह भी मेरे बास का कमाल है कि हर नई लड़की को वह यह विश्वास दिलाने में कामयाब हो जाता है कि पहले उसमें और किसी दूसरी लड़की में जो कुछ बीता था, वह महज एक वहम था, धोखा था, दृष्टिभ्रम था, असली मुहब्बत तो उसे अब हुई थी ।"

"और लड़की मान जाती है ।"

"मान जाती है । दीपा नहीं माने बैठी ?"

लोकेश ने सहमति में सिर हिलाया ।

"तुम सचमुच दीपा से बहुत प्यार करते हो ?"

"हां । हद से ज्यादा । किसी को भी कल्पना से ज्यादा । मैं उसे दिलोजान से चाहता हूं । मैं उसकी खातिर कुछ भी कर सकता हूं । मैं उसके लिये जान दे सकता हूं, जान ले सकता हूं ।"

"सच्चा चाहने वाला ऐसा ही होना चाहिए ।"

"सुनो ।" - लोकेश व्यग्र भाव से बोला - "इस मामले में तुम्हीं मेरी कोई मदद करो ।"

"मैं क्या मदद करूं ?"

"यह तो तुम ही सोचो कि तुम क्या मदद कर सकती हो । यह सोच कर मेरी कोई मदद करो कि असल में यह एक बहुत पवित्र और निर्दोष लड़की की मदद होगी जो खामख्वाह तुम्हारे बास की कमीनगी का शिकार हई जा रही है । यह सिलसिला बन्द न हुआ तो वह हरामजादा दीपा को खराब करके रहेगा ।"

"क्या पता कर ही चुका हो ।"

"शुभ-शुभ बोलो । देखो, तुम यहां की पुरानी मुलाजिम हो । तुम जरूर ऐसा कुछ जानती होगी जो तुम्हारे बास का दीपा पर चला हुआ जादू मन्तर तोड़ने में इस्तेमाल किया जा सकता हो ।"

"जानती तो मैं एक ऐसी बात हूं" - मोहिनी धीरे से बोली - "जो अगर मैं दीपा को

बता दूं तो वह मेरे बास की परछाई से दूर भागेगी ।"

"ऐसी ही तो कोई बात मैं जानता चाहता हूं । ऐसी क्या बात है, मोहिनी । भगवान के लिए मुझे बताओ । मेरे प्यार पर और एक नादान लड़की की पाकीजगी पर तरस खाकर बताओ ।"

मोहिनी कुछ क्षण सोचती रही और फिर निर्णयात्मक स्वर में बोली - "सुनो । तुम्हें अनुराधा नांगिया नाम की एक लड़की की याद है जो कोई सात-आठ महीने पहले यहां नियमित रूप से आया करती थी और यहां आकर मेरे बास के साथ डांस किया करती थी ।"

"एक ऐसी लड़की हुआ तो करती थी तुम्हारे बास की सोहबत में ।"

"वो भी वैसी ही बुरी तरह से सागर साहब पर फिदा थी जैसे आजकल दीपा फिदा है ।"

"तो ?"

"वो लड़की कहां गई ?"

"कहां गई क्या मतलब ?"

"वो रेगुलर यहां आती थी, फिर एकाएक उसने यहां आना बन्द कर दिया । किसी ने दोबारा उसे देखा नहीं । किसी ने दोबारा उसकी बाबत कुछ सुना नहीं । बस गायब हो गई एक दम से वो । तुम्हें हैरानी नहीं होती कि कभी जो लड़की दीपा की तरह मेरे बॉस पर फिदा थी, उसने एकाएक मेरे बास का पीछा छोड़ दिया ।"

"मर वर तो नहीं गयी ? कोई एक्सीडेंट हो गया हो..."

"ऐसा हुआ होता तो क्या छुपा रहता ! खुद सागर साहब ने ही जिक्र किया होता ।"

"तो ? कहां गायब हो गई वो ?"

"बताती हूं । पहले वादा करो कि मेरे से जानी बात जब दीपा को बताओगे तो मेरा नाम बीच में नहीं लाओगे । मेरे बॉस को पता लगा गया कि मैंने उसकी चुगली खाई है तो वह मेरा खून करवा देगा ।"

"ऐसा नहीं हो सकता !"

"तुम मेरे बास को अभी अच्छी तरह से नहीं जानते ।"

"ओके । मैं वादा करता हूं कि तुम्हारा नाम बीच में नहीं आयेगा ।"

"तो सुनो । वो लड़की अनुराधा गया दुबई के एक फोर्थ क्लास रण्डीखाने में मर रही है । और उसे वहां तक पहुंचाने वाला शख्स मेरा बॉस प्रेम सागर है ।"

"तुम्हें कैसे मालूम ?"

"उसने मुझे चिट्ठी लिखी है । अपनी चिट्ठी में उसने अपनी ऐसी हौलनाक हालत बयान की है कि पत्थर का दिल भी पसीज जाये । कहती है कि चिट्ठी भी वह अपने एक ग्राहक की मेहरबानी से लिख पायी । उसके ग्राहक ने ही उसे कागज कलम दिया और उसे मेरे पते पर पोस्ट किया । उसने लिखा है कि उसकी मौत निश्चित है । वह पूरी तरह से खोखली हो चुकी है और सिर्फ महीने दो महीने की मेहमान है । वह अपनी दुर्गति की किसी को खबर करके मरना चाहती थी इसलिए उसने मुझे चिट्ठी लिखी । उसने अपनी चिट्ठी में साफ लिखा है कि प्रेम सागर ही उसके उस अंजाम के लिये जिम्मेदार है । यहां से नौजवान लड़कियों को फुसलाकर दुबई ले जाना और उन्हें वहां बेचना उसका कारोबार है । उसने मुझे सारी कहानी लिखी है कि कैसे उसे फिल्म स्टार बनाने का और फिर उससे

शादी करने का झांसा दे कर वह उसे दुबई ले गया था और फिर उसे अपने खांडेकर नाम के एक सहयोगी के हवाले अरब शेखों के हरमों में नंगी नाचने और बिकने के लिए छोड़ आया था । अब बताओ, मिस्टर, यह सोचकर तुम्हारे प्राण नहीं कांपते कि बहुत जल्द यही अंजाम दीपा साही का होने वाला है, वो तो अनुराधा से कहीं ज्यादा सुन्दर और नौजवान है ।"

"नहीं हो सकता ।"

"जरूर होगा ।"

"मैं नहीं होने दूंगा । ऐसा होने को हुआ तो मैं दुनिया जहान को आग लगा दूंगा । ऐसी नौबत आने से पहले मैं इस कुत्ते के पिल्ले का खून कर दूंगा ।"

"कहना आसान है ।"

"दीपा अनराधा को जानती थी ।"

"वाकिफ तो जरूर होगी । मैंने यहीं दोनों को एक बार बातें करते देखा था ।"

"वो चिट्ठी कहां है ?"

"मेरे पास है ।"

"वो मुझे दे दो । वो चिट्ठी प्रेम सागर के जादू का तोड़ साबित हो सकती है । वो चिट्ठी पढ़ने के बाद, मुझे पूरा विश्वास है कि, दीपा को अक्ल आ जाएगी । वैसे मैं उसको कितना भी समझा लूं वो नहीं समझने वाली लेकिन उस चिट्ठी की हकीकत को वो नहीं झुठला सकेगी । कहां है वो चिट्ठी ?"

"मेरे बैग में और बैग मेरे लाकर में है । इस वक्त मैं अपना लाकर खोलने नहीं जा सकती । तुम ऐसा करो । तुम इस वक्त यहां से चले जाओ । मैं बारह बजे यहां से छुट्टी करती हूं । सवा बारह बजे तुम मुझे टैक्सी स्टैण्ड पर मिलना । तब मैं चिट्ठी तुम्हें दे दूंगी ।"

"प्रामिस !"

"यस !"

"तुम्हारा इरादा बदल तो नहीं जायेगा ?"

"पागल हुए हो । अगर ऐसी कोई बात होती तो मैं चट्ठी का जित्र ही क्यों करती ?"

"शुक्रिया ! शुक्रिया ! तुम्हारी इस मदद के लिए मैं... और दीपा भी... उम्र भर तुम्हारे अहसानमन्द रहेंगे ।"

"ओके ! ओके ! अब जाओ यहां से । मैं चाहती हूं कि मेरा बॉस तुम्हें मेरे साथ तो देखे ही न, सिर्फ तुम्हें भी यहां न देखे ।"

लोकेश सहमति में सिर हिलाया हुआ फौरन उठ खड़ा हुआ, उसने बड़े कृतज्ञ भाव से मोहिनी का अभिवादन किया और लम्बे डग भरता हुआ बाहर को चल दिया ।

अब वह खुश था कि प्रेम सागर के सिर पर मारने के लिए उसे अब एक हथियार... एक निहायत कारआमद हथियार... हासिल होने जा रहा था ।

वह झोंक में दरवाजे से बाहर निकला तो सीधा किसी की छाती से जा टकराया । उसने सिर उठाया तो उसका मन वितृष्णा से भर उठा ।

सामने खड़ा आदमी प्रेम सागर था ।

कम्बख्त ने ऐन उसी वक्त लौटना था ।

"क्या बात है ।" - वह नकली मुस्कराहट चेहरे पर लाता हुआ बोला - "जल्दी लौटे जा रहे हो ?"
"दीपा कहां है ?" - लोकेश शुष्क स्वर में बोला ।
"मेरे साथ ही थी अभी तक । थोड़ी देर के लिये अपने टेलर के पास गयी है । और वह यहीं आयेगी । क्यों ? तुम्हें उसने टाइम दिया था ?"
"नहीं ।"
"यानी कि खामख्वाह उससे चिपकने की कोशिश कर रहे हो ।"
"तुमसे मतलब ?"
"मतलब तो कोई नहीं लेकिन वो क्या है कि इत्तफाक से आज दीपा भी तुम्हारा जिक्र कर रही थी ।"
"अच्छा !"
"हां । कह रही थी बन्दे तो तुम बहुत अच्छे हो लेकिन उसे तुम्हारा उसकी चाची, मौसी, बुआ वगैरह बनकर दिखाना बहुत खलता है ।"
"मैं उसका हितचिन्तक हूं इसलिए..."
"दीपा एक बालिग और खुदमुख्तार लड़की है, अपने हित की चिन्ता वो खुद भी कर सकती है । बखूबी । तुमसे बेहतर ।"
"दीपा ने यह सब तुम्हारी मार्फत कहलवाया है ?"
"नहीं" - प्रेम सागर लापरवाही से बोला - "मैंने ही सोचा कि तुम्हें मालूम तो होना चाहिए कि वो तुम्हारे बारे में क्या राय रखती है ।"
"तुम बड़े चौधरी हो ।" - लोकेश भड़क कर बोला ।
"हां । बड़ा भी हूं और चौधरी भी । कोई एतराज ?"
"नहीं । कोई ऐतराज नहीं । एतराज तो मुझे इस बात से भी नहीं कि तुम नौजवान लड़कियां बहला - फुसला कर दुबई ले जाते हो और फिर उन्हें वहां के रण्डीखानों में बिकने के लिए और तिल-तिल करके मरने के लिए छोड़ आते हो ।"
प्रेम सागर के नेत्र सिकुड़ गये ।
"मतलब ?" - वह उसे घूरता हुआ बोला ।
"मतलब कुछ नहीं । और सुनाओ क्या हाल चाल है । दुबई से खांडेकर की कोई चिट्ठी पत्री आयी या नहीं । उसने खबर की या नहीं कि अनुराधा नांगिया अभी जिन्दा है या मर गई ।"
"यह सब क्या बक रहे हो ? कौन है खांडेकर ?"
"अनुराधा नांगिया भी पूछ लो कौन है ?"
"वो मुझे मालूम है लेकिन तुम जो बकवास अभी ।"
"सी यू माई डियर लव ओशन । इन कोर्ट । इन जेल । इन हैवन आर हैल । कीप ऐन आई फार मी ऐवरीवेयर ।"
वह आगे बढ गया ।
प्रेम सागर कितनी देर ठगा-सा डिस्को के दरवाजे पर ही खड़ा रहा । वह छोकरा वो तमाम बातें कैसे जानता था, जिन्हें वह अभी-अभी बक कर गया था ! एक ही सूरत में वैसा सम्भव हो सकता था । जरूर वह साली अनुराधा कोई चिट्ठी निकालने में कामयाब हो गई थी । किसे लिखी होगी चिट्ठी उसने ? अपने मामा को ! सवाल ही नहीं पैदा होता

। वह तो चिट्ठी लेकर थाने पहुंच गया होता । लोकेश को ! लेकिन अनुराधा लोकेश को जानती तक नहीं थी । अपनी किसी सहेली को ! ऐसी सहेली कौन हो सकती थी उसकी ?

यही कुछ सोचता हुआ वह डिस्को में दाखिल हुआ ।

मोहिनी ने उसकी तरफ देखा और फौरन नजर फिरा ली । वह रिफ्लैक्स एक्शन प्रेम सागर को बड़ा रहस्यपूर्ण लगा । उसे अपने बॉस को आया जानकर इसके स्वागत में मुस्कराना चाहिये था जब कि वह तो निगाहें चुरा रही थी ।

कहीं - उसने सोचा - इसी के पास तो अनुराधा की चिट्ठी नहीं आयी थी ।

उड़ते पंछी के पर पहचानने में माहिर प्रेम सागर लम्बे डग भरता हुआ मोहिनी की तरफ बढा ।

मोहिनी की आंखों में फौरन भय का भाव तैर गया । प्रेम सागर को और भी गारण्टी हो गई कि चिट्ठी जरूर उसी के पास आई थी !

"लाओ ।" - वह उसकी तरफ अपना हाथ फैलाकर निर्णायक स्वर में बोला - "निकालो ।"

"क - क्या ?" - हकलाई सी मोहनी बोली ।

"चिट्ठी ।"

"चि - चिट्ठी ! कैसी चिट्ठी ?"

"जिसके चार कोने होते हैं, जो एक लिफाफे के भीतर रखी होती है, जिस पर डाक की टिकटें लगी होती हैं और जो डाकिया लाता है । चिट्ठी समझ में आई या अभी और समझाऊं ?"

"मेरा मतलब है क - किस की चि - चिट्ठी ?"

"अनुराधा नांगिया की चिट्ठी ।"

"मुझे तो उसकी कोई चिट्ठी नहीं मिली ।"

"मेरे से" - एकाएक प्रेम सागर का स्वर बेहद हिंसक हो उठा, वह सांप की तरह फुंफकारा - "मसखरी न कर, साली । मैं लाश का पता नहीं लगने दूंगा ।"

मोहिनी सिर से पांव तक कांप गई ।

"चि - चि - चिट्ठी आई थी ।" - वह हकलाई ।

"वो अब मुझे मालूम है । तुम्हारे पास दुबई से अनुराधा की चिट्ठी आई है जिसमें मेरे बारे में और उसके अपने बारे में ढेरों बकवास लिखी हुई हैं । ठीक ?"

उसने जल्दी से सहमति में सिर हिलाया ।

"तुमने वह चिट्ठी पढी ?"

"हां ।"

"किसी और को पढवाई ?"

"नहीं ।"

"दिखाई ?"

"नहीं ।"

"लोकेश भार्गव को भी नहीं ?"

"नहीं ।"

"लेकिन उसे चिट्ठी की बाबत बताया सब कुछ ?"

"हां ।"

"उसने मांगी नहीं चिट्ठी ?"
"मांगी थी ।"
"दी क्यों नहीं ?"
"बाद में देने का वादा किया था । वह सवा बारह बजे चिट्ठी के वास्ते लौटकर आने वाला है ।"
"चिट्ठी कहां है ?"
"मेरे लाकर में ।"
"चलो निकाल कर लायें ।"
दोनों हाल से निकलकर इमारत के पिछ्वाड़े के एक स्टोरनुमा कमरे में पहुंचे जिसकी एक दीवार के साथ स्टाफ द्वारा प्रयुक्त होने वाले लाकरों की कतार दिखाई दे रही थी ।
मोहिनी ने चाबी लगाकर अपना लाकर खोला, उसमें से अपना बड़ा-सा चमड़े का बैग निकाला और बैग में से चिट्ठी निकालकर कांपते हाथों से अपने बॉस को सौंपी ।
लगभग वैसे ही कांपते हाथों से प्रेम सागर ने चिट्ठी खोली और वहीं खड़े-खड़े पढी । ज्यों-ज्यों वह चिट्ठी पढता गया, उसका चेहरा गम्भीर होता गया । वह चिट्ठी तो निश्चय ही उसका सर्वनाश कर सकती थी ।
बहरहाल वह खुश था कि वह बहुत सही वक्त पर डिस्को वापिस लौट आया था ।
एकाएक उसने चिट्ठी को लपेट कर अपने कोट की भीतरी जेब में रखा, बोला - "ऑफिस में चलो ।"
दोनों आफिस में पहुंचे ।
"तुमने एक बार बताया था" - वह आफिस सेफ खोलता हुआ बोला - "कि बीकानेर में तुम्हारी एक बहन रहती है ।"
"हां ।" - मोहिनी सशंक स्वर में बोली ।
"मैं देख रहा हूं कि तुम आजकल बहुत थकी-थकी रहती हो ।"
"नहीं सागर साहब, मैं तो..."
"शटअप एण्ड लिसन ।"
"यस सर ।"
"तुम्हें आराम की जरूरत है । मैं कहता हूं तुम्हें आराम की जरूरत है । बोलो है या नहीं ?"
"है ! है !"
"वह आराम तुम्हें बीकानेर में अपनी बहन के घर में मिलेगा जहां तुमने फौरन चली जाना है । बीकानेर की गाड़ी में अभी दो घण्टे बाकी हैं ।" - वह उसके सामने पचास-पचास के नोटों की एक गड्डी फेंकता हुआ बोला - "ये पांच हजार रुपये हैं । तुम्हारी दो महीने की तनख्वाह और भाड़ा वगैरह । दो महीने बीकानेर जाकर आराम करो । लेकिन किसी को तुमने यह नहीं बताना है कि तुम कहां जा रही हो । अपने मकान मालिक को, दूध वाले को, अखवार वाले को, किसी को भी नहीं । ओके ।"
"यस, सर !"
"अपनी बहन का पता मुझे लिखकर दो ।"
उसने आदेश का पालन किया ।
"यह पता अनुराधा को मालूम है ?"

“नहीं ।”
“गुड ! अब जाओ । आज की गाड़ी तुमने हर हालत में पकड़नी है । जब वापिस लौटोगी तो बमय तरक्की तुम्हारी नौकरी तुम्हारा इन्तजार कर रही होगी ।”
“यस सर !”
“बाहर अगर लोकेश भार्गव तुमसे फिर टकरा जाये और चिट्ठी के बारे में सवाल करे तो तुमने उसे कहना है कि चिट्ठी खो गयी है । वह जितनी मर्जी जिद करे तुमने इसी जवाब पर कायम रहना है कि चिट्ठी खो गयी है । समझ गयीं ?”
“जी हां !”
“गैट गोइंग ।”
वह फौरन वहां से कूच कर गयी ।

***

प्रेम सागर अपनी स्टडी में अपनी टेबल के सामने बैठा दीपा साही के बारे में सोच रहा था ।
लोहा तप कर गर्म हो चुका था । अब वार करने का वक्त आ गया था ।
उसने चांदी के फ्रेम में से अपनी तरफ झांकती दीपा साही पर निगाह डाली और फिर उसके नंगे जिस्म की बड़ी सुखद कल्पना करते हुए हबीब को बुलाने वाली घन्टी का पुश दबाया ।
हबीब दरवाजे पर प्रकट हुआ ।
“मेरे पीछे कोई आया तो नहीं था ?” - प्रेम सागर ने पूछा ।
“नहीं ।” - हबीब भावहीन स्वर में बोला ।
“कोई टेलीफोन ?”
“टेलीफोन आया था ।”
“किस का ?”
“लोकेश भार्गव का ।”
“क्या कहता था ?”
“आपके बारे में पूछ रहा था ।”
“तुमने क्या जवाब दिया ?”
“मैंने कहा कि आप कहीं काम से गये हुए थे और रात को बहुत देर से लौटने वाले थे । वह पूछने लगा कि आप कहां गये हो सकते थे, मैंने कह दिया कि मुझे कुछ नहीं मालूम था ।”
“ठीक कहा तुमने ! वो छोकरा तो सिर दर्द बनता जा रहा है ।”
“वो आसानी से टलने वाला नहीं ।” - इस बार जब हबीब बोला तो उसके स्वर में से पहले वाला अदब का भाव गायब था - “बहुत बखेड़ा खड़ा कर सकता है वो । मेरी मानें तो...”
“मैंने तुम्हारी राय नहीं पूछी ।”
हबीब चुप हो गया । उसके चेहरे पर एक अजीब सा कठोर भाव आया और गायब हो गया ।
“तुम फिक्र मत करो, मियां ।” - प्रेम सागर नम्र स्वर में बोला - “मैं सम्भाल लूंगा उसे । मैं उस जैसे बहुतों से निपटा हूं ।”

“अनुराधा की चिट्ठी का क्या हुआ ?” - नौकर ने मालिक से यूं सवाल किया जैसे जवाबतलबी कर रहा हो ।

“वह चिट्ठी उस छोकरे के हाथ नहीं लग सकी है । चिट्ठी मैंने हासिल कर ली है और आगे के लिये ऐसा इन्तजाम कर लिया है कि अनुराधा की कोई चिट्ठी अगर क्लब में मोहिनी के नाम आये तो वह सीधे मेरे पास पहुंचे ।” - प्रेम सागर एक क्षण को ठिठका और फिर बोला - “चिट्ठी के बारे में उस छोकरे ने खुद ही बक दिया था जो कि बहुत अच्छा हुआ था । उसके हाथ लगने से पहले चिट्ठी मैंने हासिल कर ली ।”

हबीब खामोश रहा ।

“तुम लोकेश भार्गव का ख्याल छोड़ो । वो कुछ नहीं कर सकता । वो खामखाह दीपा के पीछे पड़ा हुआ है । दीपा से उसे कुछ हासिल नहीं होने वाला । देख लेना, वो अगर बाज नहीं आयेगा तो मेरे कोई कदम उठाने से पहले वह दीपा से ही बहुत बेइज्जती करवायेगा । उसका ख्याल अपने जेहन से निकाल दो, मौलाना । ही इज नथिंग ।”

“हूं ।”

“दीपा का फोन नहीं आया ?”

“नहीं ।”

“आना तो चाहिए था ।”

“नहीं आया ।”

“ठीक है । तुम जाकर आज जरा रसोई की सुध लो । आज बाहर खाने का मूड नहीं है ।”

“क्या बनाऊं ?”

“अच्छा !” - प्रेम सागर उसे घूरकर बोला - “यह भी मैं बताऊं ?”

“शाही कोरमा और चिकन बिरयानी बनाता हूं ।” - हबीब यूं बोला जैसे अपने आपसे बात कर रहा हो ।

फिर वह वहां से विदा हो गया ।

तभी काल बैल बजी ।

प्रेम सागर कान लगाकर सुनने लगा ।

“साहब हैं घर में ?” - बाहर से आती दीपा साही की आवाज उसे सुनाई दी ।

“जी हां, हैं ।” - हबीब की आवाज आई - “लाइये, सूटकेस मुझे दे दीजिए ।”

सूटकेस का नाम सुनकर प्रेम सागर के होठों पर एक मुस्कराहट आयी । यानी कि चिड़िया दाना चुग गयी थी । उसने उसके साथ दुबई चल देने का फैसला कर लिया था ।

वह स्टडी में पहुंची ।

प्रेम सागर ने उठ कर उसका स्वागत किया और बगलगीर होकर उससे मिला । उसने देखा उसके चेहरे पर वही उमंग और जोशोखरोश था जो आठ-नौ महीने पहले उसके साथ भाग चलने के वक्त उसने अनुराधा नांगिया के चेहरे पर देखा था ।

हबीब ने उसके पीछे-पीछे वहां आने की गुस्ताखी नहीं की थी ।

“बड़ी देर लगाई ।” - वह शिकायतभरे स्वर में बोला - “मैं कब से तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूं ।”

“मैं” - वह घड़ियाल पर निगाह डालती हुई बोली - “पन्द्रह मिनट ही तो लेट हुई हूं ।”

"मुझ पर तो वो पन्द्रह साल जैसे भारी गुजरे ।"

"ओह, डार्लिंग ।" - वह उसके गाल पर एक चुम्बन अंकित करती हुई बोली - "हाउ स्वीट !"

वह खुश थी । उसके चेहरे पर उत्साह की चमक थी और दिल में एडवेंचर का अहसास था । प्रेम सागर जैसा गुणग्राहक मर्द उसे पसन्द था । ऐसे ही मर्द के तो वह सपने देखा करती थी ।

"वैसे यह कहना तो मूर्खता होगी कि आज तुम बहुत खूबसूरत लग रही हो । बहुत खूबसूरत तो तुम हमेशा ही लगती हो ।"

"बातें बनाना तो कोई तुमसे सीखे ।"

"अब यह तो बताइये, मलिका आलिया ।" - वह उसके दोनों हाथ थामता हुआ बोला - "कि हमारी तकदीर का फैसला क्या हुआ ?"

"वही जो मेरी तकदीर का हुआ । तुम्हारी तकदीर मेरी तकदीर है ।"

"ओह ! शुक्रिया । शुक्रिया । आज तुमने मुझे दुनिया का सबसे खुशकिस्मत आदमी बना दिया ।"

"प्रेम !"

"हां ।"

"तुम वाकई मुझसे बहुत मुहब्बत करते हो !"

लानत ! - वह मन बोला - सालियां सब एक ही सवाल पूछती थीं ।

"लो !" - प्रत्यक्षत: उसने फुल ड्रामेटिक्स के साथ वही जवाब दिया जो वह ऐसे मौकों पर हमेशा देता था - "यह भी कोई पूछने की बात है ।"

"करते हो न ?"

"हां । हद से ज्यादा । तभी तो तुमसे शादी करने के लिए मरा जा रहा हूं । तभी तो अब मैं मौत के कगार पर खड़ी अपनी बीवी के मरने का इन्तजार नहीं कर सकता । तभी तो मैं तुमसे शादी तरने की खातिर तुम्हें दुबई ले जा रहा हूं ।"

दीपा की फिल्म कैरियर में कोई दिलचस्पी नहीं थी इसलिए उसे हीरोइन बना देने का झांसा उस पर नहीं चल सकता था । दीपा को उसने यह पुड़िया दी थी कि उसकी बीवी पागलपन का लाइलाज केस थी और उसके दिमाग में कोई ऐसा विकार पैदा हो चुका था कि एक साल में वह निश्चित रूप से मर जाने वाली थी । उसकी मौजूदा हालत यह थी कि वह अपने पति को या किसी को पहचानती तक नहीं थी । वह लगभग 'कोमा' की स्टेज में थी । लेकिन उसका दीपा के लिए प्यार दीवानगी की इस हद तक बढ चुका था कि वह उससे शादी करके उसे हासिल करने के लिए एक साल का लम्बा इन्तजार नहीं कर सकता था । उस समस्या का हल उसने यह निकाला था कि वे दुबई जाकर शादी कर लें । दीपा को उसने यह पट्टी पढाई थी कि विदेश में शादी करने की वजह से भारत में उस पर यह इलजाम नहीं आमद हो सकता था कि उसने एक पत्नी के रहते दूसरी शादी कर ली थी । वह यह कहानी न घड़ता तो दीपा उसके साथ हनीमून के लिए दुबई जाने से पहले भारत में ही उससे शादी करने की जिद करती जब कि शादी के पचड़े में तो वह पड़ना ही नहीं चाहता था । वह उसके साथ कानूनी रिश्ता जोड़कर उसे दुबई ले जाकर किसी कानूनी पचड़े में नहीं पड़ना चाहता था ।

बीमार बीवी की कहानी उसने यूं रो-रोकर और शहीद हो-होकर सुनाई थी कि दीपा

का दिल पसीज गया था और उसका प्यार और भी उमड़ पड़ा था ।

"डार्लिंग !" - दीपा बोली - "तुम्हारी बीवी की जिन्दगी में हमारी शादी क्या उसके साथ अन्याय नहीं होगा ?"

"उसमें ऐसा अहसास कहां बाकी है, मेरी जान । वह एक ऐसा मुर्दा जिस्म है इत्तफाक से जिसकी नब्ज अभी चल रही है ।"

"फिर भी..."

"क्या फिर भी ?"

"अगर हम एक साल इन्तजार कर लें तो ?"

"मैं एक पल भी और इन्तजार नहीं कर सकता । मेरे सब्र का पैमाना पहले ही छलक रहा है । मुझे लग रहा है कि अगर मुझे तुम न हासिल हुई तो मैं पागल हो जाऊंगा, दीवारों से सर टकराने लगूंगा, कपड़े फाड़कर चिल्लाता हुआ सड़कों पर भाग निकलूंगा, तुम्हारे नाम की दुहाई देता अपने बनाने वाले के समझ पहुंच जाऊंगा ।"

उसने एक बहुत फरमायशी, बहुत ड्रामेटिक, देवदासी आह भरी ।

उसके नाटक का दीपा पर प्रत्याशित असर हुआ ।

"न, न, ऐसा मत कहो ।" - वह उसके होठों पर अपनी नाजुक उंगलियां रखती हुई बोली ।

"पहले मेरे सवाल का साफ-साफ जवाब दो । मेरे साथ फौरन दुबई चलने की तैयार हो या नहीं ।"

"तैयार हूं । तुम्हारी उम्मीद से ज्यादा तैयार हूं । अपना सूटकेस साथ लेकर आयी हूं ।"

"ओह डार्लिंग ।" - बेहद भाव-विह्वल होने का अभिनय करते हुए उसने दीपा को अपने अंक में भर लिया - "आज तुमने मुझे दुनिया का सबसे खुशकिस्मत आदमी बना दिया । देखना, मैं भी कुल जहान की खुशियां तुम्हारे कदमों पर बिखेर दूंगा । मैं कुरबान हो जाऊंगा तुम पर । मैं तुमसे इतना प्यार करूंगा जितना कभी किसी ने किसी से नहीं किया होगा । मैं प्यार की एक मिसाल कायम करके दिखाऊंगा ।"

ऐसे कितने ही जज्बाती, रूमानी फिकरे उसे जुबानी रटे हुए थे । जरूरत पड़ने पर वह घण्टों ऐसे डायलाग बोलकर दिखा सकता था ।

"मुझे एक बात से डर लगता है ।" - दीपा उसके आलिंगन से निकलती हुई धीरे से बोली ।

"डर ! मेरे होते !"

"बात ही ऐसी है ।"

"क्या बात ?"

"लोकेश कोई बखेड़ा न खड़ा करे ।"

"ओफ्फोह ! इतने शानदार मूड में किसका नाम ले दिया । वह कोई बखेड़ा नहीं खड़ा कर सकता ।"

"लेकिन..."

"छोड़ो उसका ख्याल । तुमने दोबारा उसका नाम लिया तो मैं खफा हो जाऊंगा । वो तुम पर दिल रखता है तो इसमें तुम्हारी क्या सिरदर्दी है ? तुम्हारे जैसी परीचेहरा हसीना पर तो सारे शहर के नौजवान दिल रख सकते हैं । तुम किस-किस की फिक्र कर सकती हो

? ऊपर से तुम जानती हो कि वह मेरे से, तुम्हारे होने वाले पति से, नफरत करता है, फिर भी तुम उसे इतनी अहमियत दे रही हो ।”

“मैं उसे अहमियत नहीं दे रही ।”

“तो और क्या कर रही हो ? इतने शानदार माहौल में तुमने जिक्र ही क्यों छेड़ा उसका ?”

“देखो, वह मेरा हितचिन्तक है...”

“नानसेन्स ।”

“...मेरा दोस्त है ।”

“गलत । तुम्हारा दोस्त मैं हूं ।”

“तुम हो लेकिन वो भी है । फर्क यह है कि तुम्हारा मेरा रिश्ता दोस्ती की सीमाएं लांघ कर आगे भी बढेगा ।”

“यह बात उसे भी तो मालूम है, फिर वह तुम्हारा पीछा क्यों नहीं छोड़ता है ?”

“छोड़ देगा । जब मैं उसे बताऊंगी कि मैं तुमसे शादी करने जा रही हूं तो वह अपने आप ही छोड़ देगा ।”

“तुम उसे” - वह सकपकाया - “यह बात बताओगी ?”

“क्या न बताऊं ? आखिर वो मेरा दोस्त है ।”

वह बात प्रेम सागर को माफिक नहीं आने वाली थी । लोकेश आखिर वकील था और वह उसको यह पट्टी पढा सकता था कि उसकी बीवी के जिन्दा होते उसकी दुबई में या चांद पर या कहीं भी हुई शादी गैरकानूनी ही होती ।

फिर धीरे-धीरे बड़ी मेहनत से उसने दीपा को यह पट्टी पढाई कि फिलहाल शादी का जिक्र वह किसी से न करे । दुबई से लौट आने के बाद वह बड़ी खुशी से हर किसी को - लोकेश को भी - शादी की बात बताये ।

थोड़ी आनाकानी के बाद दीपा मान गई ।

अब प्रेम सागर को लगने लगा कि फौरन कूच करने में ही कल्याण था ।

“तो फिर कब चला जाये ?” - उसने दुबारा उसका हाथ थामते हुए पूछा ।

“मेरी तरफ से अभी चलो” - दीपा बोली - “मैंने अपना होस्टल का कमरा छोड़ दिया है । अपना जरूरी सामान मैं एक सूटकेस में डाल लाई हूं । मेरा बाकी सामान होस्टल की वार्डन मुझे बाद में भिजवा देगी । मैंने तो अपनी नौकरी से भी इस्तीफा दे दिया है ।”

“फिर तो आज ही चलते हैं” - वह पूरे जोशोखरोश से बोला - “मजा आ जायेगा ।”

“टिकट मिल जायेगी ?”

“ट्रेन की मिल जायेगी । मेरे ताल्लुकात हैं । बम्बई तक ट्रेन से चलते हैं आगे प्लेन पकड़ लेंगे ।”

“ठीक है ।”

“मैं बम्बई से दुबई की टिकट के लिए भी यहीं अपने ट्रैवल एजेन्ट को कह देता हूं । अपना पासपोर्ट मुझे दो ।”

दीपा ने हैंड बैग से अपना पासपोर्ट निकालकर उसे सौंप दिया ।

प्रेम सागर ने बड़े सहज स्वाभाविक भाव से पासपोर्ट के पन्ने पलटे ।

“हो गया काम ।” - एकाएक वह निराश स्वर में बोला ।

“क्या हुआ ?” - दीपा सकपकाई ।

“इस पर तो दुबई की एन्डोर्समैंट नहीं है ।”
“अच्छा !”
“डार्लिंग, मैं महीने भर से तुम्हें कह रहा हूं कि हमने दुबई जाना है, दुबई जाना है, तुमने फिर भी पासपोर्ट पर एन्डोर्समैंट करा कर नहीं रखी ।”
“मुझे पता ही नहीं था कि ऐसी कोई एन्डोर्समैंट इसमें नहीं थी ।”
साली ! अक्ल की अन्धी ! गधी ! हाथ के हाथ काम बिगाड़ दिया ।
“पता होना तो चाहिए था ।” - प्रत्यक्षत: वह बड़े मीठे लेकिन शिकायत भरे स्वर में बोला ।
“सारी, डार्लिंग ।”
“नैवर माइण्ड । बस अब इतनी गड़बड़ हो गई समझो कि हम आज नहीं जा सकेंगे । अब तुम्हारा पासपोर्ट दुरुस्त कराने में थोड़ा वक्त लगेगा ।”
“लेकिन मैंने तो अपना होस्टल का कमरा छोड़ दिया ।”
“तो क्या हुआ ? इतना बड़ा फ्लैट है, यहीं ठहर जाओ ।”
“अगर लोकेश को पता लग गया तो...”
“फिर लोकेश । हे भगवान ! यह बार-बार मेरी खीर में लोकेश नाम की मक्खी क्यों आ पड़ती है ?”
“मैं नहीं चाहती कि कोई सोचे कि तुम्हारा मेरा कोई पाप का रिश्ता है ।”
“ऐसी बात वो खरदिमाग लोकेश ही सोच सकता है ।”
“जो भी कहो...”
“ठीक है फिर । ऐसा करते हैं, आज की रात किसी होटल में गुजारते हैं । बहुत मजा आयेगा ।”
उसके चेहरे पर अनिश्चय के भाव आये ।
“अब फिर यह न कह देना कि लोकेश को पता लग जायेगा ।”
उसने कहा तो नहीं लेकिन उसकी सूरत पर यही लिखा था कि वह कहने जा रही थी ।
तभी एकाएक काल बैल बजी ।
“हबीब !” - प्रेम सागर उच्च स्वर में बोला - “जो कोई भी हो, उसे कह देना, मैं घर नहीं हूं ।”
वह फिकरा प्रेम सागर कुछ ऐसे भाव से बोला कि दीपा की निगाह अनायास ही उसके चेहरे की तरफ उठ गई । उस क्षण उसे प्रेम सागर का चेहरा बेहद क्रूर और खतरनाक लगा । उसका दिल कांप गया । प्रेम सागर ने जब उसे अपनी तरफ देखता पाया तो बिजली के आफ-आन स्विच की रफ्तार से उसके चेहरे के भाव बदले और उसके चेहरे पर फिर सौम्यता और मधुरता खिलवाड़ करने लगी । केवल एक क्षण के लिए उसका वह मुखौटा सरका था और दीपा को उसके असली चेहरे की एक झलक मिली थी ।
तभी आगन्तुक की आवाज उसके कानों में पड़ी ।
वह और भी सिहर उठी ।
आगन्तुक लोकेश भार्गव था ।
प्रेम सागर ने उसे एक दम खामोश रहने का इशारा किया ।
“सागर साहब हैं ?” - बाहर लोकेश पूछ रहा था ।
“जी नहीं । वे अभी तक घर नहीं लौटे ।” - हबीब की आवाज आयी ।

"और दीपा मेम साहब ?"
"जी, वो यहां नहीं हैं ।"
"आई तो होंगी ?"
"जी नहीं ।"
"तुम जानते तो हो न दीपा मेम साहब को ?"
"जी हां । बखूबी जानता हूं ।"
"फ्लैट में कोई भी नहीं है ?"
"मैं हूं ।"
"तुम झूठ बोल रहे हो । यह सामने जो सूटकेस पड़ा है, दीपा का है । इस पर दीपा का नाम लिखा है । जब वो यहां नहीं है तो उसका सूटकेस यहां कैसे आ गया ?"
"साहब, वो... वो तो..."
"एक तरफ हटो ।"
"लेकिन साहब..."
"हटो ।"
और दो क्षण बाद लोकेश स्टडी में उनके सामने आ खड़ा हुआ ।
"हल्लो ।" - लोकेश बोला - "मुझे अफसोस है कि मैं यूं जबरन यहां दाखिल हुआ । लेकिन मैं क्या करता ! तुम्हारा नौकर झूठ बोल रहा था ।" - वह दीपा की तरफ घूमा - "दीपा तुम यहां क्या कर रही हो ?"
"मैंने इसे यहां इनवाइट किया है ।" - प्रेस सागर कठोर स्वर में बोला ।
"सवाल मैंने दीपा से किया था ।" - लोकेश बोला - "दीपा, तुम..."
"यह क्या बेहूदगी है, लोकेश ।" - दीपा भड़ककर बोली - "अब क्या कहीं जाने के लिए मुझे तुमसे इजाजत लेनी पड़ा करेगी ? मैं क्या अपने किसी फ्रेंड से मिलने नहीं जा सकती ?"
"सूटकेस के साथ ! अपना होस्टल का कमरा हमेशा के लिए छोड़कर ! मैं अभी तुम्हारे होस्टल से ही आ रहा हूं । होस्टल की वार्डन ने मुझे बताया था कि..."
"दीपा की" - प्रेम सागर बोला - "जाती जिन्दगी से तुम्हारा क्या मसलब ?"
"है ततलब । मैं दीपा का फ्रेंड हूं । इसे ऐसा कोई गलत काम करने से रोकना मेरा फर्ज है जिसके लिए इसे आगे चलकर पछताना पड़े ।"
"लोकेश !" - दीपा पूर्ववत् भड़के स्वर में बोली - "मैं तुम्हें पहले भी कह चुकी हूं कि अपने जाती मामलों में मुझे तुम्हारा दखल गवारा नहीं । दोस्त हो तो दोस्त ही बनकर रहो । मेरा बाप या सरपरस्त बनकर दिखाने की कोशिश मत करो । मैं बच्ची नहीं हूं । मैं बालिग और खुदमुख्तार लड़की हूं । अपना भला-बुरा सोचने की अकल मुझमें है ।"
"शायद न हो ।" - लोकेश बोला ।
"क्या ?"
"तुम इस आदमी की असलियत नहीं जानती हो ?"
"मैं सब जानती हूं । और जो जानती हूं, वो काफी है । उसके इलावा मैं और कुछ जानना नहीं चाहती । और एक बात और सुन लो । सागर साहब मेरे होने वाले पति हैं । मैं इनके खिलाफ कोई गुस्ताखी, कोई बदतमीजी बर्दास्त नहीं कर सकती ।"
"तुम ऐसा नहीं कर सकतीं ।" - लोकेश हतप्रभ स्वर में बोला - "तुम इस शख्स से

शादी नहीं कर सकतीं ।"

"कौन रोकेगा मुझे ?"

लोकेश से जवाब न दिया गया ।

"अब जाओ यहां से ।"

लोकेश ने जाने का उपक्रम न किया । वह प्रेम सागर की तरफ घूमा और बोला - "सागर साहब, अब तक तुम्हारी किस्मत ने तुम्हारा बहुत साथ दिया है लेकिन अब इस बार दीपा के मामले में तुम्हारी नहीं चलने वाली ।"

"क्यों नहीं चलने वाली ?" - प्रेम सागर जबरन मुस्कराता हुआ बोला ।

"क्योंकि मैं तुम्हारा खेल जानता हूं ।"

प्रेम सागर ने एक जोर का अट्टहास किया ।

"मेरा कोई खेल नहीं है, दोस्त ।" - वह बोला - "है तो तुम उसे समझ नहीं सकते । तुम मेरे घर में मेहमान हो, जबरदस्ती के सही लेकिन हो, इसलिए मैं तुम्हारे साथ कोई बदसलूकी नहीं करना चाहता । मेहमान के साथ बदसलूकी यहां का दस्तूर नहीं है । तुम यहां दीपा की वजह से आए हो इसलिए मैं तुम्हें दीपा के पास छोड़कर दूसरे कमरे में जा रहा हूं । जब निपट जाओ तो मुझे आवाज दे देना । मैं नहीं चाहता कि मुझ पर यह इलजाम आये कि मैंने तुम्हें दीपा से बात नहीं करने दी ।"

"कहीं जाने की जरूरत नहीं, प्रेम ।" - दीपा बोली - "मैंने इससे कोई बात नहीं करनी ।"

"शायद इसने करनी हो । मैं ड्राईंगरूम में जा रहा हूं । वहां तक यहां की आवाजें नहीं पहुंचतीं । इस तरह अगर यह मुझे यहां गाली-वाली देगा तो मुझे सुनाई नहीं देगी ।"

"यह देकर तो दिखाए तुम्हें गाली ।"

"मुझे कोस कर अगर इसके दिल को ठण्डक पहुंचती है तो पहुंचने दो ।" - वह लोकेश की तरफ घूमा और बड़े अदब से तनिक सिर नवाकर बोला - "इसे अपना ही घर समझना, दोस्त । किसी चीज की जरूरत हो तो नौकर को बुलाने के लिए वो घन्टी बजा देना ।"

फिर उसने दीपा की तरफ हवा में एक चुम्बन उछाला और बड़ी शान से वहां से विदा हो गया ।

"लोकेश !" - पीछे दीपा तिरस्कारपूर्ण स्वर में बोली - "तुम्हारा व्यवहार तो बर्दाश्त से बाहर हो गया है ।"

"मौजूदा हालात में तो तुम्हें मेरी हर बात बर्दाश्त से बाहर लगेगी । लेकिन मैं क्या करूं ? मैं मजबूर हूं ।"

"क्या मजबूरी है तुम्हारी ?"

"दीपा, मैं तुमसे मुहब्बत करता हूं ।"

"अच्छा !" - वह व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली ।

"मैं तुम्हें अपना बनाना चाहता हूं ।"

"यह मुहब्बत अभी ताजी-ताजी जागी है तुम्हारे मन में ?"

"नहीं । मैं तो मुद्दत से तुम्हें चाहता हूं । तभी से जबसे तुमसे वाकिफ हूं ।"

"इजहार करना बहुत देर में सूझा ।"

"सूझा तो बहुत बार लेकिन मन की बात जुबान पर न आ सकी । मैं गरीब आदमी जो ठहरा ।अभी गृहस्थी का बोझ सम्भालने के काबिल जो नहीं मैं ।"

"जिन वजहों ने तुम्हें अपनी बात अपनी जुबान पर लाने से रोका वो तो आज भी अपनी जगह कायम हैं । फिर आज मुहब्बत की बात जुबान पर क्यों आ रही है ? इसीलिए न क्योंकि अब मैं सागर साहब को अपनाने जा रही हूं ।"

"हां ।" - लोकेश ने कबूल किया - "इसीलिए ।"

"लोकेश ! अपने आपको टार्चर मत करो । तुम मेरे दोस्त हो । तुम मेरे अच्छे दोस्त हो । लेकिन सिर्फ दोस्त हो । और कुछ नहीं । मैं तुमसे मुहब्बत नहीं करती ।"

"शायद करती होवो ।"

"नहीं करती ।"

"नहीं करती तो इसलिए नहीं करती क्योंकि मुहब्बत से ताल्लुक रखती कोई बात पहले कभी हमारे बीच हुई नहीं । तुम मुझे पसन्द करती हो । मैं जानता हूं तुम मुझे पसन्द करती हो । तुम मेरे बारे में मुहब्बत की नुक्तानिगाह से सोचोगी तो मुहब्बत करने लगोगी ।"

"लेकिन..."

"और आज मेरी हैसियत कुछ नहीं है लेकिन हैसियत बन जाती है, हैसियत बनाई जा सकती है, हैसियत बनाने लायक तमाम गुण मेरे में हैं । सिर्फ एक सही ब्रेक नहीं मिल रहा मुझे । लेकिन वो मिलेगा । जरूर मिलेगा । अपने कैरियर पर मैं बहुत मेहनत कर रहा हूं और मेरा दावा है कि मेहनत कभी जाया नहीं जाती । आज ही मैंने एक केस जीता है । मुझे पूरी उम्मीद है कि बहुत जल्द मुझे बड़े और ज्यादा फीस वाले केस मिलने लगेंगे । बहुत जल्द मैं प्रेम सागर की बराबरी करने लायक बन जाऊंगा ।"

"उसकी बराबरी तुम कभी नहीं कर सकोगे ।"

"मैं करके दिखाऊंगा । मैं उससे बेहतर बनकर दिखाऊंगा ।"

"ठीक है । अपनी मेहनत से तुम अमीर हो जाओगे लेकिन फिर भी सागर साहब की जो जगह मेरे मन में बन चुकी है, वह तुम अपनी नहीं बना सकोगे ।"

"मैं बनाकर दिखाऊंगा । तुम मुझे मौका तो दो, फिर देखना तुम्हारे दिल में जगह सागर साहब की बनती है या मेरी ।"

"ऐसा कुछ नहीं हो सकता । मैं जो फैसला कर चुकी, कर चुकी । अब तुम जाओ यहां से ।"

"दीपा, जरा अक्ल से काम लो । यह आदमी तुम्हारे लायक नहीं । वह तुम्हें तबाह कर देगा । वह तुमसे मुहब्बत नहीं करता । तुम भी उससे मुहब्बत नहीं करतीं । तुम्हें सिर्फ ऐसा लगता है । हकीकतन तुम उसके मोहजाल में फंसी हुई हो । उसके चिकने-चुपड़े व्यवहार ने तुम्हारी अक्ल पर पर्दा डाला हुआ है । तुम नहीं जानतीं कि वह कितना खतरनाक आदमी है और तुम्हारे से पहले कितनी लड़कियों को शादी का झांसा देकर दुबई ले जा चुका है । दीपा, जो लड़कियां उसके साथ दुबई जाती हैं, वो फिर लौटकर नहीं आतीं ।"

"कहां चली जाती हैं ?" - दीपा उपहासपूर्ण स्वर में बोली ।

"अरब शेखों के हरमों में । वहां के चकलों में ।"

"बकवास ! तुम मुझे डराने की कोशिश कर रहे हो और अपनी हसद की भावना से

प्रेरित होकर सागर साहब के खिलाफ जहर उगल रहे हो ।"

"लेकिन यह हकीकत है कि और कई लड़कियां..."

"मुझे इस बात से कोई वास्ता नहीं कि पहले कितनी लड़कियां सागर साहब की जिन्दगी में आ चुकी हैं ।"

"लेकिन..."

"देखो, तुम मुझे सागर साहब के खिलाफ जितना ज्यादा भड़काओगे उतना ही मेरा इरादा मजबूर होता जायेगा और उतना ही ज्यादा मैं यह सोचती जाऊंगी कि तुम कोई अच्छे आदमी नहीं हो । अब अगर तुम यह चाहते हो कि हम दोस्त बने रहें, तुम्हारा कोई अच्छा इमेज मेरे मन में बना रहे तो अब यहां से रुख्सत हो जाओ ।"

"लेकिन, दीपा..."

"फिर लेकिन !" - दीपा भड़क उठी और फिर बोली - "सागर साहब !"

मुस्कराता हुआ प्रेम सागर वहां पहुंचा ।

"हो गई बातचीत !" - वह बोला ।

"मिस्टर प्रेम सागर ।" - लोकेश एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला - "दीपा तुम्हारे साथ दुबई नहीं जाएगी ।"

"ओह माई गाड !" - दीपा असहाय भाव से बोली - "यह तो पागल हो गया है ।"

"तुम" - लोकेश बोला - "दीपा को दुबई नहीं ले जा सकते ।"

"कैसे रोकोगे ?" - वह पूर्ववत मुस्कराता हुआ बोला - "दीपा तो तुम्हारे कहने में आई लगती नहीं ।"

"नहीं आई ।"

"तो फिर क्या मेरा खून कर दोगे ?"

"मैं वो भी कर सकता हूं ।"

"खून की सजा फांसी होती है । तुम तो वकील हो, जानते होगे ।"

तभी हमेशा की तरह इतना दबे पांव हबीब वहां पहुंचा कि वह बोला तो सबको उसकी वहां उपस्थिति का आभास हुआ ।

"आपका सूटकेस तैयार हो गया है ।" - वह प्रेम सागर से बोला ।

"वैरी गुड ।"

"तुम लोग आज ही जा रहे हो ?" - लोकेश के मुंह से निकला ।

"जाना तो आज ही था लेकिन एक छोटी सी अड़चन आ गई है जिसकी वजह से रवानगी अब" - वह दीपा की तरफ घूमा - "शुक्रवार को होगी । डार्लिंग मैंने ड्राइंगरूम से अपने ट्रैवल एजेन्ट को फोन कर दिया है । उसने शुक्रवार को फर्स्ट क्लास ए सी की बम्बई की दो टिकटें कनफर्म भी कर दी हैं ।"

"तुम बम्बई जा रही हो ?" - लोकेश बोला - "दुबई नहीं ।"

"बम्बई से दुबई जाएंगे । जहां हमारी शादी होगी । लेकिन तुम्हारे जैसे लसूड़े से पीछा छुड़ाने के लिये यह फ्लैट हम आज ही छोड़ रहे हैं । हम यहां से किसी होटल में जा रहे हैं ताकि तुम्हारी हम तक पहुंच न हो सके । देख लो, हमारी शराफत है कि हमने कोई बात नहीं छुपाई तुमसे ।"

"प्रेम !" - दीपा बोली ।

"यस, डार्लिंग ।"

“अब होटल जाने का मूड नहीं रहा । अभी इतनी चिखचिख हुई है कि सारा मूड मिट्टी हो गया है । मैं अपनी एक सहेली के घर जा रही हूं ।”

“चलो ! मैं छोड़ कर आता हूं ।” - लोकेश व्यग्र भाव से बोला ।

“नहीं ।” - दीपा शुष्क स्वर में बोली - “शुक्रिया । मुझे दिल्ली शहर के रास्ते आते हैं ।”

“इतना तो बता दो कि कौन सी सहेली के घर जा रही हो ?”

“ताकि तुम वहां भी मेरा भेजा खाने पहुंच जाओ ।”

“दीपा, मुझे तुम्हारी खैरियत की तसल्ली होनी चाहिए । इसके लिये मुझे तुम्हारा पता मालूम होना चाहिये ।”

“ओह बौश एण्ड नानसेन्स ।”

“अगर तुम खुद सहेली का पता नहीं बताओगी तो पता जानने के लिये मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आ जाऊंगा ।”

“तुम ऐसी नीच हरकत नहीं कर सकते ।”

“मैं जरूर करूंगा ।”

“हे भगवान ! लोकेश, तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया ।”

“दीपा !” - प्रेम सागर बोला - “तुम जरा ड्राइंगरूम में जाओ । इसे यहां से रुख्सत करता हूं ।”

“लेकिन...”

“जाओ तो ।”

वह चली गई ।

“उसके जाते ही प्रेम सागर के होंठों पर सदा खेलती मुस्कराहट गायब हो गई ।

“अबे, साले ।” - वह दांत पीसकर बोला - “पीछा क्यों नहीं छोड़ता !”

“यह साला अब तुझे एक्सपोज किये बिना तेरा पीछा नहीं छोड़ने वाला ।”

“तेरे बस की कुछ नहीं, बच्चे । तू मेरे खिलाफ जितना मर्जी जहर उगल ले, लड़की हिल कर नहीं देने वाली अपने इरादे से ।”

“मैं उसे अनुराधा नांगिया की चिट्ठी के बारे में बताऊंगा ।”

“कौन-सी चिट्ठी ? कैसी चिट्ठी ? कहां है चिट्ठी ?”

“मैं दीपा की मोहिनी से बात कराऊंगा ।”

“कहां है मोहिनी ?”

“प्रेम सागर, कितनी लड़कियां खराब कर चुका है, कितनी ही अभी और करेगा । मेरी एक दरख्वात मान ले । खुदा के वास्ते इस एक लड़की को छोड़ दे ।”

“तेरी खातिर !”

“उसकी अपनी खातिर ।”

“तेरे ख्याल से मैं क्या करता हूं लड़कियों का ?”

“तू उन्हें दुबई ले जाकर पहले खुद उनके साथ ऐश करता है और फिर उन्हें बेच देता है ।”

“गलत ख्याल है तेरा ।”

“तू कई लड़कियों के साथ दुबई नहीं जा चुका ?”

“किसी के साथ दुबई जाने का मतलब यह है कि मैं उसे वहां बेच देता हूं ?”

"और नहीं तो क्या ? अनुराधा का क्या किया तूने ?"
"कुछ भी नहीं । यह मेरी बदकिस्मती है कि आज तक मेरा हर लव अफेयर फेल होता रहा । लड़कियों को मुझसे शिकायत होती रही और वे मुझसे झगड़ा कर अलग होती रहीं । अनुराधा ने भी यही किया था । मैं तो उसे वापिस लाना चाहता था लेकिन वही नहीं आना चाहती थी । वह कहती थी वह वहीं ठीक थी । मैं अकेला लौट आया ।"
"वह फोर्थ क्लास रण्डी खाने में कैसे पहुंच गयी ?"
"मुझे क्या पता कैसे पहुंच गयी ।"
"मुझे ऐसा भोला बनकर मत दिखा । मैं कोई छोकरी नहीं हूं जिस पर तेरी जुबान का जादू चल जायेगा । साले, तू बुर्दाफरोश है । तू लड़कियां बेचता है । तुझे तो जेल में होना चाहिए ।"
"किसी पर कोई भी इलजाम लगाना आसान होता है, बच्चे लेकिन उसे साबित करना बहुत मुश्किल होता है ।"
"मुझे औरों से कोई मतलब नहीं । तू जेल जाए या न जाये, मुझे कोई मतलब नहीं लेकिन मैं तेरे हाथों दीपा को बरबाद नहीं होने दूंगा ।"
"यह बरबादी तू यूं ही जुबानी जमा खर्च से रोक लेगा ?"
"मतलब ?"
"बेटा, ऐसे काम कुर्बानी के तलबगार होते हैं ।"
"कुर्बानी !"
"हां ! सुन । मैंने तेरी सारी बातें मान लीं । मान लिया कि मैं वही हूं जो तू कहता है । बुर्दाफरोश । मान लिया कि मैं दीपा को फंसा कर दुबई ले जा रहा हूं । अब असल बात सुन ।अपने फायदे की । लड़की के साथ जो मैं ऐश करता हूं, उसके अलावा मुझे फी लड़की पांच लाख रुपये हासिल होते हैं । दीपा जरा ज्यादा ही खूबसूरत है इसलिए और भी ज्यादा मिल सकते हैं । तू ऐसा कर, तू तीन लाख रुपये मुझे यहीं दे दे, मैं दीपा का पीछा छोड़ देता हूं ।"
"साले ! कमीने !" - लोकेश दांत पसीता हुआ बोला - "हरामी तो मुझे शुरू से पता था कि तू है लेकिन तू इतना बड़ा हरामी है यह मुझे अभी मालूम हुआ ।"
"गाली से कोई फर्क नहीं पड़ता ।" - प्रेम सागर हंसता हुआ बोला - "गाली तू दस-बीस और दे ले मुझे । लेकिन मेरी आफर पर विचार कर ले । अभी तो तू तड़फ-तड़फ कर नारे लगा रहा था कि दीपा को बर्बादी से बचाने के लिए मैं यह कर दूंगा, वो कर दूंगा और अब उसकी खातिर तीन लाख रुपये नहीं खर्च सकता ? या दीपा की खूबसूरती और नौजवानी को तू तीन लाख के काबिल नहीं समझता !"
"मेरे पास तो तीन हजार भी नहीं ।" - लोकेश के मुंह से निकला ।
"यह तेरा सिर दर्द है । जब तू लड़की की खातिर मुझे खून की धमकी दे सकता है तो किसी का टेंटुवा दबा कर तीन लाख रुपये निकाल ला । मुझे अपनी रकम से मतलब है । तू वह रकम कैसे हासिल करता है, इससे मुझे कोई मतलब नहीं ।"
लोकेश सोचने लगा ।
"सोच ले । अच्छी तरह से सोच ले । तेरी सोच में मदद करने के लिए ठहर मैं तुझे व्हिस्की पिलाता हूं ।"
वह उसे वहीं खड़ा छोड़ कर बैडरूम में चला गया ।

उसकी गैरहाजिरी में लोकेश वहां पड़े एक सोफे पर ढेर हो गया ।
उसने देखा व्हिस्की की बोतलें, गिलास, सोडा साइफन वगैरह वहां स्टडी की एक दीवार के साथ लगे साइडबोर्ड पर भी मौजूद थे लेकिन प्रेम सागर व्हिस्की के लिए बैडरूम में गया था ।
जरूर बैडरूम में कोई खुली हुई बोतल मौजूद होगी । साइड बोर्ड की सभी बोतलें तो बन्द थीं ।
कुछ क्षण बाद प्रेम सागर दो जाम हाथ में सम्भाले वापिस लौटा । एक उसने सोफे पर बैठे लोकेश को थमा दिया और फिर स्वयं अपनी मेज के पीछे की कुर्सी पर बैठता हुआ बोला - “चियर्स ।”
लोकेश का सिर अपने आप सहमति में हिल गया । उसने विस्की का एक घूंट पिया ।
“शुक्रवार में अभी दो दिन हैं” - प्रेम सागर भी विस्की चुसकता हुआ बोला - “तेरे पास दो दिन का वक्त है । इन दो दिनों में तीन लाख रुपये का इन्तजाम कर ले । फिर मैं दीपा को छोड़ दूंगा । यह मेरा कत्ल करने से आसान काम होगा ।”
“तेरा कत्ल करना भी आसान है । मैं अभी तेरा कत्ल कर सकता हूं ।”
“करना आसान है लेकिन करके बच पाना आसान नहीं । आसान क्या, नामुमकिन है । कत्ल करते ही पकड़ा जायेगा तू । यह छुप ही नहीं सकेगा कि कातिल कौन है । देख, लिफ्टमैन तुझे जानता है । वह तुझे मेरे फ्लोर तक लाया है । दीपा के सामने तू तुझे कत्ल की धमकी दे चुका है । हबीब के भी कान बड़े पतले हैं, शायद उसने भी कुछ सुना हो । ऐसे माहौल में मेरा कत्ल करके तू भला कैसे बच जायेगा ? सीधा फांसी के तख्ते पर ही पहुंचेगा ।”
“मैं मौत से नहीं डरता । दीपा के लिए मैं...”
“ठहर एक मिनट ।” - प्रेम सागर ने उसे रोका । वह मेज के करीब पहुंचा । उसका ऊपर का दराज खोल कर उसने एक साइलेंसर लगी रिवाल्वर निकाली और उसके साथ वापिस लोकेश के पास पहुंचा ।
“यह ले” - वह रिवाल्वर लोकेश को आफर करता हुआ बोला - “भरी हुई है । साइलेंसर लगा हुआ है । गोली चलायेगा तो आवाज नहीं होगी । तू मुझे शूट करके चुपचाप यहां से निकल जा । इतने से तेरे सारे मसले हल हो जायेंगे ।”
लोकेश ने रिवाल्वर की तरफ हाथ नहीं बढाया । उसने विस्की का एक और घूंट लिया ।
“फिर गयी न ऐसी की तैसी !” - प्रेम सागर व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला - “नारे लगाना आसान होता है, बच्चे । कुछ कर गुजरना बहुत मुश्किल । और मौजूदा हालात में कुछ कर गुजरना तो बिल्कुल आत्महत्या करने जैसा काम होगा । आत्महत्या पर एक बात याद आयी । अगर मैं मौजूदा हालात में इस घड़ी आत्महत्या भी कर लूं तो यकीनन तुझे मेरा कातिल ठहराया जायेगा ।”
उसने रिवाल्वर वापिस दराज में रख दी ।
“कोई ऐसा तरीका भी तो होगा” - लोकेश धीरे से बोला - “जिस से मैं तेरा कत्ल कर सकूं लेकिन खुद न फंसूं ।”
“वह तभी मुमकिन है जब तेरे पास अपने बचाव के लिये फर्स्ट क्लास, वाटर-टाइट, आयरन क्लैड एलीबाई हो । और ऐसी एलीबाई अपने लिए घड़ सकने के काबिल आला

दिमाग अगर खुदा ने तुझे बख्शा होता तो तू अभी तक दो कौड़ी का, फटीचर, नाकाम वकील ही न बना रहा होता । ऐसा कोई तरीका सोच पाना तेरे बस की बात नहीं, बच्चे । अपनी माशूका को मेरे चंगुल से निजात दिलाने का तो कोई तरीका तू सोच नहीं सकता, मेरा कत्ल करने का अपने लिये सेफ तरीका तो तू क्या सोच पायेगा !"

लोकेश को वह बात सुनकर इतना गुस्सा आया कि उसका जी चाहा कि वह उस पर आक्रमण कर दे । उसने उठकर खड़ा होना चाहा तो टांगों ने साथ न दिया । जरूर ड्रिंक ज्यादा स्ट्रांग थी ।

जरूर उसे ज्यादा नशा हो गया था । उसने विस्की का आखिरी घूंट लिया और गिलास स्टूल पर रख दिया ।

"और ?" - प्रेम सागर बोला ।

"नहीं" - लोकेश सख्ती से बोला - "मुझे विस्की पिलाने के पीछे भी तेरा कोई खास मकसद लगता है ।"

"क्या मकसद ?" - प्रेम सागर उपहासपूर्ण स्वर में बोला ।

"ऊपर से तू मुझे भड़काने वाली बातें कर रहा है । जरूर तू यह चाहता है कि यहां तेरे मेरे बीच कोई झगड़ा फसाद हो और तू पुलिस को बुलाकर मुझे गिरफ्तार करवा दे ताकि मैं दीपा के पीछे न जा सकूं ।"

"उसका इन्तजाम तो मैं कर भी चुका हूं ।"

"क्या ?"

"अभी सामने आता है ।"

तभी लोकेश को अपनी आंखें मुंदती महसूस हुई । उसने बड़े यत्न से उठने की कोशिश की तो वापिस सोफे पर ढेर हो गया ।

"तू... तूने क्या किया है, साले ?" - बड़ी कठिनाई से वह बोल पाया ।

"खास कुछ नहीं ।" - प्रेम सागर बड़े धूर्ततापूर्ण ढंग से मुस्कराता हुआ बोला - "बस जरा-सी बेहोशी की दवा तेरी शरब में घोलकर पिलाई है तुझे ।"

"साले ! धोखेबाज ! कमी..."

तभी उसकी आंखें मुंद गयीं और वह सोफे पर लुढक गया ।

प्रेम सागर ने हबीब को बुलाया ।

"यह बेहोश है ।" - वह बोला - "कोई घन्टे भर में होश में आ जायेगा । तब तक मैं न लौटूं तो तुम इसे चलता कर देना । जबरन रुकने की जिद करे तो पुलिस को फोन कर देना ।"

हबीब ने सहमति में सिर हिलाया ।

प्रेम सागर ड्राईंगरूम में पहुंचा ।

"आओ !" - वह बोला - "तुम्हें तुम्हारी सहेली के घर पहुंचा आऊं ।"

"लोकेश कहां है ?" - दीपा ने सशंक भाव से पूछा ।

"चला गया । अब वह हमें तंग नहीं करेगा । उसे समझने में मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी लेकिन अब वह समझ गया है ।"

"बेचारा ! खामख्वाह मेरी फिक्र में हलकान हुआ जाता था ।"

"अब वो समझ गया है ।"

"कहीं नीचे छुप कर मेरे यहां से निकलने का इन्तजार न कर रहा हो ।"

"इसीलिये तो मैं खुद तुम्हें छोड़ने चल रहा हूं । वैसे मुझे उम्मीद नहीं कि वह अभी भी नीचे कहीं मंडरा रहा होगा । चलो अब ।"

दीपा उसके साथ हो ली ।

***

होश आ जाने के बाद भी लोकेश भार्गव की ऐसी हालात थी कि वह उठ कर खड़ा होने लायक दमखम अपने आप में नहीं पा रहा था । उस घड़ी उसका जिस्म अभी उसका साथ नहीं दे रहा था लेकिन उसका दिमाग पूरी तरह से सक्रिय था ।

अन्धेरे में हाल के सोफे पर खामोश लेटे-लेटे उसने जागी आंखों से एक सपना देखा ।

प्रेम सागर की मौत का सपना ।

फिर उस सपने ने कत्ल की एक योजना का रूप ले लिया ।

प्रेम सागर के कत्ल की योजना का ।

प्रेम सागर की मौत की कल्पना करके उसे बड़ी सुखद अनुभूति हुई ।

तीन लाख रुपये का दो दिन में इन्तजाम तो वह खुद को नीलाम करके भी नहीं कर सकता था लेकिन कत्ल एक काम था जिसे वह अन्जाम दे सकता था ।

फिर उसके मानस पटल पर एक नया अक्स उभरा । उस अक्स में उसके हाथ उसकी पीठ के पीछे बन्धे हुए थे, उसके सिर पर गर्दन तक एक काली नकाब पड़ी हुई थी और उसके पहलू में खड़ा जल्लाद उसके सिर के ऊपर झूलता फांसी का फंदा उसकी गर्दन में पिरोने के लिए तत्पर खड़ा था ।

उसके शरीर ने जोर-जोर से झुरझुरी ली । उस हौलनाक अक्स को अपने मानस पटल से मिटाने के लिये उसने जोर से आंखें मिचमिचाईं ।

उसे अपने जेहन में प्रेम सागर की क्रूर आवाज गूंजती सुनाई दी - "फर्स्ट क्लास, वाटर-टाइट, आयरन क्लैड एलीबाई ! फर्स्ट क्लास, वाटर-टाइट, आयरन क्लैड एलीबाई !"

फिर धीरे-धीरे प्रेम सागर की मौत का सपना और उसके कत्ल की योजना आपस में गड्ड-मड्ड होने लगे और उस पर उलझाव के बादल छाने लगे । उसने अपने दिमाग पर जोर दिया तो धीरे-धीरे वे बादल छंटने लगे, उलझनें सुलझने लगीं ।

उसके मानसपटल पर उसकी योजना की न्यूज रील सी चलने लगी ।

शुक्रवार का दिन है ।

यह वो दिन है जब प्रेम सागर दीपा को साथ लेकर ट्रेन पर उस शहर से रवाना होने वाला है ।

वह प्रेम सागर के फ्लैट पर पहुंचता है ।

वह काल बैल नहीं बजाता । वह दरवाजे पर दस्तक देता है तो प्रेम सागर खुद उसे दरवाजा खोलता है । वह उसके साथ स्टडी में दाखिल होता है । प्रेम सागर अपनी टेबल के पीछे लगी कुर्सी पर बैठ जाता है और लोकेश को भी एक कुर्सी पेश करता है ।

लोकेश फोन पर प्रेम सागर से अप्वायमेन्ट फिक्स करके और कुछ जरूरी मुद्दों पर उसकी हामी भरवा कर वहां आया होता है ।

अपनी कुर्सी पर बैठा प्रेम सागर घड़ियाल की तरफ देखता है । लोकेश भी घड़ियाल की तरफ देखता है ।

वक्त दो बज कर छत्तीस मिनट ।

"बहुत जल्द पहुंच गये ।" - प्रेम सागर कहता है - "अभी तो तुम्हारा फोन आया था ।"

"छः मिनट पहले । मैंने ढाई बजे फोन किया था । प्रैस क्लब से । लंच के लिए मैं आज वहां गया था । टैक्सी में वहां से यहां पहुंचने में इतना ही वक्त लगा है ।"

"तो तीन लाख रुपये का इन्तजाम कर ही लिया तुमने ?"

"हां !"

"कैसे कर पाये ?"

"इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं होना चाहिए ।"

"जरूर किसी बैंक पर डाका डाला होगा ।"

"कहा न इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं होना चाहिए ।"

"फिर भी कमाल है तुम्हारे जैसे लड़के ने दो दिन के वक्फे में तीन लाख रुपये का इन्तजाम कर लिया ।"

"हां !"

"वक्त रहते आ गये हो । और डेढ घंटे बाद मैं दीपा के साथ बम्बई की ट्रेन में बैठा होता ।"

"जो मैंने कहा था, तुमने किया ? तुमने अपने नौकर को या किसी और को मेरे आगमन की खबर तो नहीं की ?"

"मैंने नौकर को इतना बताया था कि कोई आने वाला था लेकिन यह नहीं बताया था कि कौन आने वाला था । इसीलिए मैंने खुद जाकर तुम्हारे लिए दरवाजा खोला था ।"

"नौकर है कहां ?"

"पिछवाड़े में किचन में ।"

"उसने मुझे आते देखा तो नहीं होगा ?"

"सवाल ही नहीं पैदा होता ।"

"किचन तक यहां की आवाजें पहुंचती हैं ?"

"कतई नहीं ।"

"हूं ।"

"लेकिन इतनी गोपनीयता किसलिए ? तुम..."

"मैं नहीं चाहता कि किसी को यहां मेरे आगमन की भनक भी पड़े ।"

"वजह ।"

"वजह तीन लाख रुपये रकम से जुड़ी हुई है । मैंने वह रकम बहुत ज्यादा मुश्किल से हासिल की है । इसी वजह से..."

"छोड़ो ! मैंने क्या लेना देना है वजह से । तुमने कहा कि आज तुम्हारे यहां आने की किसी को भनक न लगे, मैंने ऐसा इन्तजाम कर दिया । अब बोलो रकम कहां है ?"

"मेरे पास ।"

"साथ लाये हो ?"

"हां ।"

"दिखाई तो नहीं दे रही ।"

लोकेश अपने कोट की भीतरी जेब से एक लम्बा, मोटा लिफाफा निकाल कर उसे

दिखाता है ।

प्रेम सागर का चेहरा खुशी से दमक उठता है । आखिर बिना कोई जहमत उठाये ही उसे रकम जो हासिल हुई जा रही थी । दीपा जैसी शानदार लड़की को भोगने का मौका जरूर उसके हाथ से निकल जाता । लेकिन वह कोई बहुत बड़ी बात नहीं थी । अभी बाड़े में बहुत मुर्गियां थीं और दीपा की खूबसूरती के आगे दुनिया खत्म नहीं थी ।

वह बड़े इत्मीनान से एक सिगरेट सुलगा लेता है और लिफाफे की डिलीवरी की प्रतीक्षा करने लगता है ।

लोकेश मेज का घेरा काट कर मेज के पीछे उसके करीब पहुंचता है ।

"सागर साहब !" - लोकेश बड़ी संजीदगी से कहता है ।

"हां ! क्या है ?"

"फर्ज करो मैं रुपये का इन्तजाम न कर सका होता और लड़की को छोड़ देने की तुमसे एक आखिरी अपील करता तो क्या तुमने उस अपील पर गौर किया होता ? तुम उसे छोड़ देते । तुम्हें सच ही तो दीपा से मुहब्बत है नहीं । और तुम्हारा मतलब कहीं और भी बखूबी हल हो सकता है । शहर में लड़कियों का घाटा तो है नहीं ।"

"यह सब बकवास सुनने के लिए मेरे पास वक्त नहीं ।" - प्रेम सागर कठिन स्वर में कहता है - "रकम का लिफाफा मुझे दो वर्ना बन्दा चला दीपा के साथ दुबई की ओर ।"

और वह अपना एक हाथ लोकेश की तरफ फैला देता है ।

"यह तुम्हारा आखिरी फैसला है ?"

"हां ।"

"तब्दील नहीं हो सकता ?"

"हरगिज नहीं । ...क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं । चक्कर आ गया ।" - वह मेज के एक कोने का सहारा ले लेता है और अपना माथा थाम लेता है - "तुम्हारी रकम के इन्तजाम में पूरे दो दिन मैं सारे दिल्ली शहर में धक्के खाता रहा हूं । एक मिनट रेस्ट नहीं किया मैंने । मुझे एक गिलास पानी पिला सकते हो ?"

"मैं विस्की पिलाता हूं ।" - प्रेम सागर उठता हुआ कहता है ।

"नहीं, नहीं । सिर्फ सादा पानी । तुम्हारी व्हिस्की का मजा मैं चख चुका हूं ।"

वह हंसता है ।

उसके मेज से घूम कर आगे बढते ही लोकेश हौले से मेज का ऊपरला दराज खोलता है और उसमें पड़ी साइलेंसर लगी रिवाल्वर निकाल लेता है । रिवाल्वर को वह धीरे से अपने कोट की दाईं जेब में सरका देता है । प्रेम सागर जब पानी के गिलास के साथ लौटता है तो वह लोकेश को पहले की तरह मेज का सहारा लिए माथा थामे खड़ा पाता है । वह बड़े कृतज्ञ भाव से गिलास थामता और और पानी पी लेता है ।

"शुक्रिया !" - वह कहता है - "जान में जान आ गयी ।"

"गुड ! अब वो रकम..."

"रकम तुम खामख्वाह भी हजम कर सकते हो ।"

"मतलब !"

"तुम मेरे से रकम भी ले सकते हो और दीपा से भी बदस्तूर रिश्ता जोड़े रह सकते हो ।"

“मैं ऐसा नहीं करूंगा ।”
“मुझे तुम पर विश्वास नहीं । दीपा तुम्हारे सम्मोहन में बुरी तरह से जकड़ी हुई है । तुम बहाना बना सकते हो कि तुम तो उसे छोड़ते हो लेकिन वही तुम्हें नहीं छोड़ती ।”
“ऐसा नहीं होगा । तुम...”
“ऐसा जरूर होगा । मैं तुम्हारे जैसे एक नम्बर के हरामी की जुबान का विश्वास नहीं कर सकता ।”
“तो ?”
“तो यह कि तुम अभी दीवान कैलाश नाथ को फोन करके यहां बुलाओ ।”
“दीवान कैलाश नाथ ? वो बैरिस्टर ?”
“हां । वे मेरे फादर के एम्पलायर होते थे । मेरी खातिर वे यहां आ जाएंगे और हमारा यह एग्रीमेन्ट बना देंगे कि मैं तुम्हें तीन लाख रुयये दूंगा, बदले में तुम दीपा साही का सदा के लिये पीछा छोड़ दोगे । दीवान साहब ही बतौर गवाह उस एग्रीमेन्ट पर साइन कर देंगे ।”
“मेरे पास इतना वक्त नहीं है कि...”
“यह ज्यादा वक्त खाने वाला काम नहीं । उनका दफ्तर जनपथ पर जिस जगह है, वह यहां से बहुत करीब है ।”
“वो न आया तो ?”
“वो जरूर आयेंगे ।”
“वो आफिस में न हुआ तो ?”
“वो जरूर होंगे । मैं उन्हें बता कर आया हूं कि दो और तीन के बीच तुम उन्हें फोन करोगे ।”
“मैं इस तमाम खटराग की कोई जरूरत नहीं समझता ।”
“मैं समझता हूं । आखिर रकम मेरी खर्च हो रही है ।”
“अगर मैं तुम्हारी बात न मानूं तो ?”
“तो नमस्ते ।”
“ठीक है ।” - प्रेम सागर हथियार डाल देता है - “अगर इसी में तुम्हरी राजी है तो...”
“मेरी राजी इसी में है ।”
“...मैं करता हूं फोन ।”
“यहां तुम्हारा नौकर तो नहीं आ जायेगा ?”
“मेरे घन्टी बजाए बिना हबीब यहां नहीं आयेगा । मेरा उसे ऐसा ही हुक्म है ।”
“वैरी गुड । अब फोन करो । नम्बर 3317195 है ।” - लोकेश घड़ी पर निगाह डालता है - “दो चालीस हुए है । पौने तीन बजे दीवान साहब यहां होंगे ।”
वह फोन करता है । उसकी दीवान कैलाश नाथ से बात होती है ।
लोकेश बड़ी फुर्ती से जेब से सफेद सूती दस्ताने निकाल कर पहन लेता है और एक तह किया हुआ सफेद कपड़ा निकाल कर हाथ में ले लेता है ।
लम्बा लिफाफा वह जेब से निकाल कर मेज पर डाल देता है ।
वह दबे पांव प्रेम सागर के पीछे पहुंच जाता है । तीन लाख रुपये की टेलीफोन काल करने में मग्न प्रेम सागर को उसकी खबर नहीं लगती ।

प्रेम सागर लोकेश भार्गव का हवाला देकर दीवान कैलाशनाथ को अपने फ्लैट पर आने को कहता है । वह उन्हें अपने फ्लैट का पता बताता है और फोन रख देता है ।

"सागर साहब ।" - लोकेश ऐसे जज की सी गम्भीरता से बोलता है जो कि किसी मुजरिम को अपना फैसला सुनाने जा रहा हो - "आखिरी बार पूछ रहा हूं । दीपा का पीछा छोड़ते हो या नहीं ।"

"मैं भी आखिरी बार जवाब दे रहा हूं" - वह रिसीवर रखता है और घूमता हुआ कहता है - "तीन लाख रुपये हासिल किये बिना नहीं ।"

"रुपये के बिना । रुपये के बिना दीपा को छोड़ते हो या नहीं ?"

"हरगिज भी नहीं ।"

"ठीक है । रकम का लिफाफा मेज पर पड़ा है । उठा लो ।"

प्रेम सागर मेज की तरफ घूमता है ।

लोकेश बड़े सहज भाव से उसकी दाईं कनपटी पर कान के ऊपर रिवाल्वर सटाता है और शूट कर देता है । वह रिवाल्वर मेज पर डाल देता है और तह किया हुआ सफेद कपड़ा गोली के सुराख के ऊपर दबाता हुआ प्रेम सागर के लहराते जिस्म को सम्भाल लेता है । कपड़ा खून को उस कमरे में कहीं बिखरने से रोक लेता है । प्रेम सागर का शरीर एक बार उसकी पकड़ में तड़पता है और फिर निश्चेष्ट हो जाता है । खुद उसका दिल उसकी पसलियों के साथ धाड़-धाड़ बज रहा होता है । वह प्रेम सागर की लाश को मेज के साथ टिकाता है और मेज पर पड़े अपने प्रयुक्त किये गये पानी के गिलास को उठाकर उस पर से अपनी उंगलियों के निशान पोंछता है और उसे प्रेम सागर के दायें हाथ में देकर उस पर उसकी उंगलियों के निशान बनाता है । गिलास वह वापिस मेज पर रख देता है । वह रिवाल्वर पर से अपनी उंगलियों के निशान पोंछता है और उससे मूठ पर प्रेम सागर उंगलियों के निशानों की छाप बनाता है । फिर वह प्रेम सागर की लाश सम्भालता है और उसे ले जाकर बैड रूम में उसके स्टडी की ओर खुलने वाले दरवाजे से जरा ही भीतर फर्श पर ढाल देता है रिवाल्वर को वह उसके बाहर को फैले दायें हाथ से कुछ इंच दूर फर्श पर रख देता है । वह प्रेम सागर की कलाई पर से उसकी घड़ी उतारता है और घड़ी में दो बजकर पैंतालीस मिनट बजा देता है । वह घड़ी के डायल को बैडरूम की एक कुर्सी के पाये के साथ जोर से टकराता है और कुर्सी को लाश के करीब ऐसी स्थिति मे सरका देता है कि देखने वाले को यह लगे कि लाश का घड़ी वाला हाथ उसके धराशायी होते समय कुर्सी के पाये से टकराया और घड़ी टूटकर दो पैंतालीस पर रुक गयी । घड़ी को वह वापिस लाश की कलाई पर बांध देता है । वह बैडरूम के दरवाजे में भीतर की ओर लगी उसकी चाबी ताले के छेद में से निकालता है, बाहर स्टडी में कदम रखकर बैडरूम का दरवाजा बन्द करता है, उसका बाहरली तरफ से ताला लगाता है और चाबी को जेब के हवाले कर देता है ।

खून से सना तह किया हुआ कपड़ा वह स्टडी की फायर प्लेस में धधकती आग में झोंक देता है ।

स्टडी में वह हर उस जगह का मुआयना करता है जहां कोई खून का धब्बा रह गया हो सकता है । कहीं कोई ऐसा धब्बा उसे मिलता है तो वह बड़े सलीके और सब्र के साथ उसे साफ कर देता है ।

वह स्टडी के घड़ियाल पर निगाह डालता है ।

दो बजकर चवालीस मिनट ।

अब वो वक्त आ गया था जबकि घड़ियाल ने उसका जीवन रक्षक बन कर दिखाना था ।

वह घड़ीयाल की सुइयों को दस मिनट पीछे कर देता है ।

अब घड़ियाल दो चौंतीस का वक्त दिखाने लगता है ।

तब वह अपने सूती दस्ताने उतारता है और उन्हें भी आग में झोंक देता है ।

फिर हर प्रकार से सन्तुष्ट होकर वह दबे पांव फ्लैट से बाहर निकलता है और ऊपर को जाती सीढियों पर थोड़ा ऊपर तक चढ कर ठिठक जाता है ।

अब इन्तजार ।

दो मिनट गुजर जाते हैं ।

लिफ्ट उस फ्लोर पर पहुंचती है ।

वह सावधानी से सीढियों की दीवार की ओट में से गरदन निकाल कर सामने झांकता है ।

दीवान कैलाश नाथ लिफ्ट से बाहर निकलते हैं । वे प्रेम सागर के फ्लैट के दरवाजे पर पहुंचते हैं और काल बैल बजाने लगते हैं ।

दरवाजा खुलता है । चौखट पर हबीब प्रकट होता है ।

"मिस्टर प्रेम सागर !" - उसे दीवान साहव की आवाज सुनाई देती है - "मेरा नाम दीवान कैलाश नाथ है । मैं उन्हीं के बुलावे पर यहां आया हूं ।"

"तशरीफ लाइये, साहब ।"

दरवाजा बन्द होते ही लोकेश सीढियां उतरता है और दरवाजे के पास पहुंचता है । वह कान लगा कर सुनने लगता है ।

"साहब अभी स्टडी में थे ।" - उसे हबीब की आवाज आती है - "शायद ड्राइंगरूम में चले गए हैं । मैं अभी देखकर आता हूं । आप तशरीफ रखिये ।"

"थोड़ी देर बाद एक दरवाजा खटखटाये जाने की आवाज आती है । प्रेम सागर को ड्राइंगरूम में न पाकर जरूर हबीब बैडरूम का वह बन्द दरवाजा खटखटा रहा होता है जिसकी चाबी उस वक्त लोकेश की जेब में होती है ।"

"साहब तो" - उसे हबीब की आवाज की आई - "लगता है फ्लैट में नहीं हैं ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है ? अभी पांच मिनट पहले तो उन्होंने मुझे फोन करके यहां आने को कहा था । तुम ठीक से देखो । मुझे बुला कर वे खुद कहीं चले कहीं चले गये नहीं हो सकते ।"

"कहा तो, साहब, उन्होंने मुझे भी यही कहा था कि एक निहायत जरूरी मीटिंग के लिये कोई आने वाला था इसलिये मैं उन्हें डिस्टर्ब न करूं । साहब, अगर साहब फ्लैट में होते तो उन्होंने दरवाजा आपको खुद खोला होता । उन्हें ऐसा करता न पाकर ही मैं खुद दरवाजा खोलने आया था ।"

"अजीब मजाक है । मैं अपने दर्जनों जरूरी काम छोड़ कर तुम्हारे साहब से और लोकेश भार्गव से मिलने यहां आया हूं । तुम लोकेश भार्गव को जानते हो न ।"

"जानता हूं, साहब ।"

"वो आया यहां ?"

"अभी तो नहीं आये, साहब । मुझे तो यह भी पता नहीं था कि भार्गव साहब यहां

आने वाले थे ।"

"आने वाला था वो ।"

"आये तो नहीं, साहब ।"

"अब मैं क्या करूं ?"

"आप थोड़ा इन्तजार कर लीजिए । साहब एकाध मिनट को ही कहीं गये होंगे ।"

लोकेश काल बैल बजाता है ।

हबीब दरवाजा खोलता है ।

लोकेश भीतर दाखिल होता है । वह स्टडी मे दीवान साहब को मौजूद देखता है और लम्बे डग भरता हुआ उनके समीप पहुंचता है और दोनों हाथ जोड़ कर उन्हें प्रणाम करता है ।

"बरखुरदार ।" - दीवान साहव भुनभुनाते हैं - "तुम्हारा दोस्त - क्या नाम है उसका..."

"प्रेम सागर ।"

"प्रेम सागर । यह तो बड़ा बेमुरब्बत निकला । मुझे घर बुलाकर खुद कहीं खिसक गया ।"

"कमाल है ।" - लोकेश कहता हैं - "उसे तो यहीं होना चाहिये था । अभी मुश्किल से छः या सात मिनट पहले मैंने प्रेस क्लब से फोन किया था । तब तो उसने हिंट तक नहीं किया था । कि वह एकाएक कहीं जा सकता था वह फ्लैट में ही होगा ।"

"साहब फ्लैट में नहीं हैं ।" - हबीब उत्तर देता है - "मैने सब जगह देख लिया है ।"

"कमाल है !"

हबीब वहां से विदा हो जाता है ।

"आप अभी आये ?" - लोकेश दीवान से पुछता है ।

"हां ।" - दीवान साहब कहते है - "तुमसे जरा ही पहले । बस तुम्हारे से आगे ही यहां पहुंचा हूं ।"

"लिफ्ट नीचे नहीं थी । वह आपको लेकर ऊपर आ रही होगी । खुद मैं तो सीढियों के रास्ते आया हूं । लिफ्ट का इन्तजार जो नहीं होता मेरे से । वैसे में लेट तो नहीं हुआ ! क्या टाइम हुआ है ?"

दोनों की निगाह एक साथ दीवार पर लगे घड़ियाल की तरफ उठती है ।

दो बजकर छत्तीस मिनट ।

लोकेश को पहले से मालूम होता है दीवान साहब आदतन घड़ी नहीं बांधते थे इसलिए अपनी कलाई घड़ी देखकर वह यह नहीं जान सकते थे कि घड़ियाल ठीक टाइम नहीं दिखा रहा था ।

"अब क्या करें ?" - दीवान साहब भुनभुनाते हैं - "यहां इन्तजार करें उसका ?"

"थोड़ी देर कर लेते हैं, साहब ।"

"माजरा क्या है, बरखुरदार ?"

"साहब !" - लोकेश उनके सवाल का जवाब गोल कर देता है - "कहीं ऐसा तो नहीं कि मुलाकात की जगह आपका आफिस निर्धारित हुई हो ?"

"टेलीफोन पर मुझे तो उसने यहीं आने को कहा था ।"

"शायद कोई गलतफहमी हो गई हो ?"

"तुम्हें भी ?"
"साहब, क्लब के फोन की लाइन ठीक नहीं थी । हो सकता है मैंने ठीक से बात न सुनी हो ।"
"तो ?"
"साहब, क्यों न हम चलकर आपके आफिस में झांक आयें । पास ही तो है आपका आफिस । पांच मिनट आने में और पांच मिनट जाने में । दस मिनट में क्या फर्क पड़ जायेगा, साहब ! क्या पता प्रेम सागर वहां बैठा हो और हैरान हो रहा हो कि हम कहां गायब हो गये थे ।"
"वह वहां न हुआ तो ?"
"तो हम यहां वापिस आ जायेंगे । साहब, जरा सा फासला है । सिर्फ दस मिनट का आना जाना है ।"
"ठीक है । जैसा तुम मुनासिब समझो ।"
लोकेश घन्टी बजा कर हबीब को बुलाता है ।
"हम तुम्हारे साहब को दीवान साहब के दफ्तर में देखने जा रहे हैं ।" - लोकेश कहता है - "वो वहां न हुए तो हम उलटे पांव वापिस लौटेंगे । तुम्हारे साहब इस दौरान अगर वापिस लौट आयें तो उन्हें खबर कर देना ।"
हबीब सहमति में सिर हिलाता है ।
लोकेश दीवान साहब के साथ वहां से रवाना हो जाता है ।
अब वह बहुत खुश होता है । सब कुछ ठीक-ठाक जो हो चुका होता है । बस लौटकर दो मामूली काम उसने और करने होते हैं । एक तो उसने बैडरूम की चाबी वापिस अपनी जगह पहुंचानी होती है और दूसरे घडियाल का टाइम दुरुस्त करना होता है ।
अब दीपा साही का भविष्य सुरक्षित था । वह उस राक्षस के चंगुल से बच चुकी थी ।
किसी ने उसे झिंझोड़ा ।
लोकेश ने हड़बड़ा कर आंखे खोलीं ।
सपना टूट गया । कल्पना की उड़ान में व्यवधान आ गया । योजना मस्तिष्क के एक अन्धेरे कोने में सिमट सिकुड़ गयी ।
उसने देखा सामने प्रेम सागर खड़ा था ।
"जाग गये, मोहन प्यारे ।" - प्रेम सागर मुस्कराता हुआ बोला ।
लोकेश हड़बड़ा कर बैठा । अपनी कल्पनाओं में वह इस कद्र गर्क हो चुका था कि उसे यही देख कर हैरानी हो रही थी कि प्रेम सागर उसके हाथों मर नहीं चुका था बल्कि जीता-जागता उसके सामने खड़ा था ।
"क्या बात है ?" - प्रेम सागर उसे घूरता हुआ बोला - "कोई डरावना सपना देखा है क्या ?"
"हां !" - लोकेश बोला - "बहुत डरावना ।"
"अच्छा ! क्या देखा ?"
"मैंने देखा कि तुम मर गये हो और मैं तुम्हारी लाश के सिरहाने बैठा जार-जार हो रहा हूं ।"
"रो रहे हो !" - उसने अट्टहास किया - "तुम्हें तो हंसता होना चाहिए था ।"
"सपना जो ठहरा । हकीकत में तो हंसूंगा ही ।"

“हकीकत में मैं मरने वाला नहीं ।”
“कौन जानता है !”
उसने सकपका कर लोकेश की तरफ देखा ।
“दीपा कहां है ?” - लोकेश ने पूछा ।
“वो ऐसी जगह है जहां शुक्रवार तक तुम्हें उसकी हवा भी नहीं मिलनी ।”
“सागर साहब, भगवान के लिए... बल्कि खुद अपने लिए... दीपा का पीछा छोड़ दो ।”
“अभी यह बात कितनी बार और कहोगे ?”
“तुम नहीं मानोगे ।”
“तीन लाख रुपये दोगे तो मान जाऊंगा ।”
“उसके बिना...”
“यहां वक्त खराब करने से अच्छा है कि जाकर कहीं से ती लाख रुपया हथियाने की कोई तिगड़म भिड़ाओ ।”
लोकेश असहाय भाव से गरदन हिलाता हुआ वहां से विदा हो गया ।

Chapter 2

हबीब ने अपने मालिक का सफर का सामान का तैयार करके रखा ही था कि टेलीफोन की घन्टी बजी । उसने घड़ियाल पर निगाह डाली ।

दो बजकर तिरतालीस मिनट हुए थे ।

“वही होगा ।” - वह बड़बड़ाया - “साला पीछा ही नहीं छोड़ता ।”

फोन लोकेश भार्गव का ही निकला । वह फिर प्रैस क्लब से ही बोल रहा था और उसके मालिक को पूछ रहा था ।

लोकेश की योजना में पहला व्यवधान तो यही आया था कि उसके द्वारा सोचे वक्त पर प्रेम सागर अपने फ्लैट पर उपलब्ध नहीं था ।

“साहब फ्लैट में नहीं हैं ।” - हबीब रुक्ष स्वर में बोला ।

“लेकिन दस मिनट पहले तुमने कहा था कि वो किसी भी क्षण आने वाले थे ।”

“कहा था लेकिन अब नहीं आये तो मैं क्या करूं ?”

“अब कब आयेगे ?”

“किसी भी क्षण !”

“इस वक्त तो तुम्हारे साहब को घर पर ही होना चाहिये था । कहीं जाने का तो मतलब ही नहीं था । उनकी ट्रेन का वक्त जो हो रहा है । तुम सच तो कह रहे हो न कि सागर साहब घर पर नहीं हैं ?”

“मै भला झुठ क्यों बोलूंगा ?”

“वो सफर के लिए रवाना तो नहीं हो चुके ?”

“नहीं । अभी उनका सामान यहीं पड़ा है । वो साढे तीन बजे से पहले यहां से रवाना नहीं होने वाले ।”

“अच्छी बात हैं । मैं थोड़ी देर बाद फिर फोन करता हूं ।”

हबीब ने रिसीवर रख दिया ।

तभी काल बैल बजी ।

हबीब ने दरवाजा खोला ।

दीपा साही के साथ प्रेम सागर ने भीतर कदम रखा । प्रेम सागर के हाथ में दीपा का सूटकेस था जो कि हबीब ने ले लिया ।

“मेरा सामान तैयार है ?” - प्रेम सागर न पूछा ।

“जी हां ।” - हबीब बोला ।

“गुड । साढे तीन बजे स्टेशन ले लिए टैक्सी बुला देना ।”

“जरूर ।”

“कोई फोन-वोन तो नहीं आया ?”

“लोकेश भार्गव साहब का कई बार फोन आ चुका है ।”

“कई बार ?”

“जी हां । लगता था वो आप से कोई बहुत ही जरूरी बात करना चाहते हैं ।”

प्रेम सागर सोचने लगा । कहीं आखिरी घड़ी में साले ने रुपये का इन्तजाम तो नहीं कर लिया था !

“वो फिर कोई फसाद न खड़ा करे !” - दीपा चिन्तित भाव से बोली ।

"डार्लिंग" - प्रेम सागर न उसका कन्धा थपथपाया - "मेरे होते वो कोई फसाद नहीं खड़ कर सकता । तुम उसकी कतई कोई फिक्र मत करो" - फिर वह हबीब की तरफ घूमा - "और क्या कहते थे भार्गव साहब ?"

"कहते थे वो फिर फोन करेंगे ।"

"ठीक है ।"

हबीब वहां से विदा हो गया ।

घड़ियाल ने पौने तीन बजाये ।

"और पौने घन्टे बाद" - वह ठिठका - "डार्लिंग, तुम कुछ फिक्रमन्द लग रही हो ।"

"नहीं तो ।" - वह हड़बड़ाई ।

"अब मुझसे क्या छुपाना ! अब हम तुम कोई दो थोड़े ही हैं । डार्लिग, तुम जरूर लोकेश के जिक्र से फिक्रमन्द हुई हो । तुम जरूर उसी के बारे में कुछ सोच रही हो ।"

"हां । कुछ सोच तो रही हूं ।"

"गलती कर रही हो । उसके बारे में सोचना बेकार है । वह अब किसी गिनती में नहीं आता ।"

"हां । शायद । लेकिन... लेकिन एक बाद मैं तुमसे पुछना चाहती हूं ।"

"क्या ?"

"क्या मेरे से पहले भी तुम किसी लड़की से... तुम्हारा किसी लड़की से अफेयर रहा है ?"

"डार्लिंग, यह कोई वक्त है ऐसी बाते करने का ?"

"फिर भी..."

"जरूर लोकेश ने तुम्हें फिर कोई पट्टी पढा दी है ।"

"तुम जानते हो ऐसे नहीं हो सकता था । उसे तो खबर भी नहीं कि पिछले दो दिन मैं कहां रही ।"

"तो फिर ?"

"उस रोज जैसी बातें वह तुमसे कर रह था, उससे मुझे ऐसा अन्दाजा हुआ था ।"

"जो बात बीत चुकी, वो क्या आज तुम्हारे और मेरे प्यार के बीच में दीवार बनकर खड़ी हो सकती है ?"

"नहीं । हरगिज नहीं ।"

"तो फिर ?"

"कुछ नहीं । अगर तुम जवाब नहीं देना चाहते तो न सही ।"

"मैं जवाब जरूर देना चाहता हू । प्यार में छुपाव नहीं चलता । मैं तुम से कोई बात छुपाऊं - कोई ऐसी बात छुपाऊं जो तुम खास तौर से जानना चाहती हो - तो लानत है मुझ पर ...नहीं-नहीं, टोको नहीं । पहले मेरी पूरी बात सुनो । पहले मेरी एक बात का जवाब दो । अगर तुम्हारे से पहले मेरी जिदगी में कोई लड़की आयी थी तो क्या यह मेरा बहुत बड़ा गुनाह हो गया ?"

"नहीं । लेकिन... लेकिन..."

"क्या लेकिन ?"

"लोकेश तो यूं जाहिर कर रहा था जैसे उस लड़की का नाम तुम्हारे किसी अक्षम्य अपराध से जुड़ा हुआ हो ।"

“वह बकवास करता है । ईर्ष्या की भावना से प्रेरित होकर भौंकता है । तुम्हारे मन में मेरे लिए नफरत पैदा करने के लिए वह कुछ भी कर सकता है, कुछ भी कर सकता है । और मुझे अफसोस है कि तुम्हें मेरे से ज्यादा उसकी बातों पर विश्वास है ।”

“नहीं-नहीं” - वह हड़बड़ाकर बोली - “यह बात नहीं ।”

“तुम मुझे प्यार करती हो न ?”

“यह भी कोई पुछने की बात है !”

“बहुत प्यार करती हो ?”

“हां ।”

“इतना कि बहुत जल्द मेरी बीवी बनने वाली हो ।”

“हां ।”

“फिर तो तुम्हें वैसे ही पूरा अधिकार है मेरे से कोई भी सवाल करने का । और मेरा फर्ज है कि मैं तुम्हारे हर सवाल का जवाब दूं । तुम्हारी हर जिज्ञासा शान्त करूं । उस लड़की की बाबत जिसका नाम अनुराधा नांगिया...”

“अगर तुम मुझे कुछ नहीं बताना चाहते हो तो बेशक मत बताओ ।”

“मैं जरूर बताऊंगा । क्योंकि उस लड़की के साथ मेरी बदकिस्मती की दास्तान जुड़ी हुई है !”

“बदकिस्मती की !”

“हां । वो बात तुम्हें मैं नहीं सुनाऊंगा तो कोई और नमक मिर्च लगाकर सुना देगा और मुझे पक्का विलेन साबित करके दिखा देगा । डार्लिंग यह तब की बात है जब कि मैं तुम्हें जानता तक नहीं था । जब कि अभी मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि तुम्हारे जैसी स्वर्ग की अप्सरा का प्यार मुझे हासिल होगा । तब तक अगर मेरी तुम्हारी मुलाकात हो चुकी होती तो मैंने उसकी तरफ या किसी भी और लड़की की तरफ, झांका तक न होता । तब मुझे यही अहसास हुआ था कि मुझे उस लड़की से - अनुराधा नांगिया से - प्यार हो गया था । मैं उसके साथ दुबई गया । वहां उसे कोई फिल्म डायरेक्टर मिल गया जिसने उसे फिल्म स्टार बनाने की पेशकश की । दीपा, तुम विश्वास नहीं करोगी उस लड़की ने, जो मेरे प्यार का दम भरती थी, जो बहुत जल्द मेरी बीवी बनने वाली थी, अपने फिल्मी कैरियर की खातिर मुझे छोड़ दिया । मैंने उसे बहुत समझाया-बुझाया, अपने प्यार की दुहाई भी दी लेकिन उसने मुझे मंझधार में छोड़कर उस डायरेक्टर का दामन थाम लेने में एक क्षण भी देर नहीं की ।”

“अब वह कहां गयी ?”

“क्या पता कहां गयी । मेरे सामने तो वह उस डायरेक्टर के साथ चली गयी थी और मैं वापिस दिल्ली लौट आया था । वैसे सुनने में आया है कि उस डायरेक्टर ने उसे बुरी तरह से धोखा दिया था जिसकी वजह से वह बहुत खस्ता हालत में पहुंच गयी थी ।”

“उसमें तुम्हारी क्या गलती है ?”

“हां ! यही तो । मेरी क्या गलती है । लेकिन मेरे दुश्मन तो यही अफवाह गर्म करते हैं न कि सारी गलती मेरी है । मेरी गलती तो इतनी है कि मैंने उससे प्यार किया और उसे अपने साथ दुबई लेकर गया । नेक इरादों से । लेकिन मेरे नेक इरादे उसे मंजूर न हुए ।”

“ओह !”

“मैं तो आज भी उसकी हर मुमकिन मदद करने को तैयार हूं लेकिन मुझे पता तो लगे

वह कहां है, मुझे पता तो लगे कि उसे कैसी मदद दरकार है, मुझे पता तो लगे कि उसे मेरी मदद कबूल होगी ।”

प्रेम सागर ऐसा भाव विह्वल हो गया कि आखिर फिकरा कहते-कहते उसका गला रुंध गया । आखिर ऐसा अभिनय करने में उसे महारत हासिल थी ।

दीपा पर उसका प्रत्याशित प्रभाव पड़ा ।

“छोड़ो अब !” - वह बड़े प्यार से उसका हाथ थामती हुई बोली - “अब हमने क्या लेना देना है इन बातों से ।”

“भड़काने वाले लोगों ने तो लेना देना है ।” - प्रेम सागर पूर्ववत रुंधे स्वर में बोला ।

“लोग जायें भाड़ में ।”

“थैंक्यू !” - प्रेम सागर उसे अपने अंक में भरता हुआ बोला - “थैंक्यू, डार्लिंग ! ऐसी ही अण्डरस्टैंडिंग...”

तभी टेलीफोन की घन्टी बजी ।

“लोकेश होगा ?” - दीपा उसके अंक से निकलती हुई सशंक स्वर में बोली ।

प्रेम सागर ने रिसीवर उठा कर एक क्षण को दूसरी ओर से आती आवाज सुनी और फिर माउथपीस पर हाथ रखता हुआ बोला - “वही है ।”

“सागर साहब !” - लोकेश बड़े व्यग्र भाव से कह रहा था - “मैं तुमसे फौरन मिलना चाहता हूं ।”

“मैं नहीं मिलना चाहता ।” - प्रेम सागर माउथपीस से हाथ हटाकर कठोर स्वर में बोला ।

उस जवाब ने लोकेश को करारा झटका दिया । कितना मुश्किल था सपने को हकीकत का रूप देना ! पहले मुलाकात में देर हो गयी और अब मुलाकात से ही इन्कार हुआ जा रहा था ।

“लेकिन मेरा मिलना बहुत जरूरी है ।”

“क्यों ? क्यों जरूरी है ?”

“क्योंकि मैंने तुम्हारी मांग पूरी करने का इन्तजाम कर लिया है ।”

“मेरी मांग ?”

“तीन लाख रुपये की मांग...”

“जरा होल्ड करो ।” - उसने फिर माउथपीस ढंक लिया और दीपा से बोला - “दीपा डार्लिंग ! तुम जरा ड्राईंगरूम में चली जाओ ।”

“वह कोई बखेड़े वाली बात कर रहा है ?” - दीपा सशंक स्वर में बोली ।

“कर रहा है लेकिन मैं उसे सम्भाल लूंगा । तुम कहना मानो । प्लीज ! मेरी खातिर कहना मानो । मैं लोकेश को कुछ ऐसी बातें कहना चाहता हूं जो मैं तुम्हारी मौजूदगी में कह नहीं पाऊंगा । डार्लिंग, प्लीज ।”

“अच्छा ।”

दीपा वहां से चली गयी ।

प्रेम सागर ने माउथ पीस से हाथ हटाया और बोला - “हल्लो, लाइन पर हो ?”

“हां ।” - लोकेश की आवाज आयी - “सागर साहब, मैं कह रहा था कि मैंने आपकी तीन लाख की मांग पूरी करने का इन्तजाम कर लिया है ।”

"अब बहुत देर हो चुकी है । तुम्हें इन्तजाम जल्दी करना चाहिये था । अब तो मैं रवाना होने वाला हूं । और फिर तुम तो कह रहे थे कि तुम रुपये का इन्तजाम कर ही नहीं सकते थे !"

"मैंने कर लिया है किसी तरीके से ।"

"अब खड़े पैर दीपा के साथ रवानगी का इरादा छोड़ने की कीमत ज्यादा होगी ।"

"क्या ?"

"अब कीमत चार लाख है ।"

"यह तो बड़ी कमीनगी की बात है ।"

"यह बड़ी मुसीबत की बात है और मैं मुसीबत की कीमत मांग रहा हूं । इस स्टेज पर तो अब दीपा ही मुझे नहीं छोड़ेगी । उसे तो..."

"ठीक है । मैं चार लाख दूंगा ।"

"तुम्हारे पास चार लाख भी है ?"

"पूरे चार लाख ही हैं ।"

"कहां से मारे ?"

"इससे आपको कोई मतलब नहीं होना चाहिये । मैं रकम लेकर आऊं ?"

प्रेम सागर ने घड़ियाल पर निगाह डाली ।

दो बज कर उनंचास मिनट ।

"नेकी और पूछ-पूछ ।" - प्रेम सागर बोला - "कहां से बोल रहे हो ? कितनी देर में आओगे ?"

"मैं प्रैस क्लब से बोल रहा हूं । पांच-छः मिनट में तुम्हारे फ्लैट पर पहुंच जाऊंगा ।"

"गुड !"

"फ्लैट में तुम्हारे साथ कोई और तो नहीं है ?"

"मेरा नौकर हबीब है ।"

"मैं चाहता हूं कि हबीब को भी मेरे आगमन की खबर न लगे ।"

"ऐसा क्यों ?" - प्रेम सागर सन्दिग्ध भाव से बोला ।

"है कोई बात । आकर बताऊंगा ।"

"फिर भी ?"

"सागर साहब, जरा सोचिये, चार लाख रुपया दो दिन में कमाकर तो पैदा कर नहीं लिया होगा मैंने । यह रकम मैंने जिस तरीके से मुहैया की है... अब मैं क्या कहूं आप से । आप प्लीज ऐसा इन्तजाम कीजिए कि मेरे रकम लेकर आपके यहां पहुंचने की किसी को खबर न लगे ।"

"ठीक है ।" - प्रेम सागर आश्वस्त हो गया - "अगर तुम चाहते हो कि हबीब को तुम्हारे आगमन की खबर न लगे तो कालबैल मत बजाना । हौले से दरवाजे पर दस्तक देना । फिर मैं खुद तुम्हें दरवाजा खोलूंगा ।"

"हबीब को दस्तक..."

"नहीं सुनाई देगी । वह फ्लैट के पिछवाड़े में होता है । वहां तक दस्तक की आवाज नहीं पहुंचेगी ।"

"किसी को कहोगे तो नहीं कि मैं आ रहा हूं ?"

"नहीं कहूंगा । अब आने की करो ।"

उसने रिसीवर रख दिया और फिर अपने अगले कृत्य से लोकेश की योजना में नया व्यवधान खड़ा कर दिया ।

उसने घन्टी बजा कर हबीब को बुलाया ।

"मियां !" - वह बोला - "वो छोकरा, लोकेश, यहां आ रहा है । वह इस बात के लिए मरा जा रहा है कि किसी को उसके यहां आने की खबर न लगे । तुम्हें भी । इसलिए उसे दरवाजा मैं खुद खोलूंगा ।"

"वह कोई घपला तो नहीं करेगा ?" - हबीब बोला ।

"घपले से मैं सावधान रहूंगा । कुछ करेगा तो मैं उससे निपट लूंगा । न निपट सका तो घन्टी बजाकर तुम्हें बुला लूंगा ।"

"आ क्यों रहा है ?"

"चार लाख रुपये में अपनी सहेली का प्यार खरीदने आ रहा है ।"

"रुपया साथ ला रहा है ?"

"कहता तो है ।"

"यानी कि सफर कैंसिल ।"

"ऐसा ही लगता है । मौलाना, अब तुम ऊंघ मत जाना । मैं घन्टी बजाऊं तो लपक कर आना और छोकरे को दबोच लेना ।"

"ठीक है ।"

"लेकिन दरवाजे से कान जोड़ने की कोशिश मत करना । मैंने लोकेश को यही कहा है कि मैं तुम्हें कुछ नहीं बताने वाला । तुम्हारी ऐसी किसी हरकत से उसे शक हो सकता है और खेल बिगड़ सकता है ।"

"मैं किचन में बैठूंगा । घन्टी बजने के इन्तजार में ।"

"गुड ! अब जाओ जरा छोकरी को बुलाकर लाओ । ड्राईंग रूम में बैठी है ।"

***

दीपा के लिए कहानी उसने पहले ही तैयार कर ली हुई थी ।

"एक अड़चन आ गयी है, डार्लिंग ।" - प्रेम सागर बोला ।

"क्या ?" - वह बोली ।

"जाने से पहले मैंने यहां किसी से एक निहायत जरूरी मीटिंग करनी है ।"

"किससे ! लोकेश से ?"

"अब सच जानना चाहती हो तो उसी से ।"

"लेकिन क्यों ?"

"वह धमका रहा है कि अगर मैंने उसे इस मीटिंग का मौका न दिया तो वह स्टेशन पर आकर कोहराम खड़ा कर देगा । आखिर गाड़ी तो हमने चढना ही है । स्टेशन पर तो हम उससे कुछ भी नहीं कर सकते ।"

"अब वो क्या कहना चाहता है ?"

"आयेगा तो पता लगेगा । तुम फिक्र न करो । मैं सब संभाल लूंगा । वह पीछा छोड़ देगा हमारा ।"

"ऐसी गारण्टी कैसे है तुम्हें ?"

"है कोई बात ।"

“मुझे बताओ । प्लीज ।”
“बात ज़ुबान पर लाने के काबिल नहीं ।”
“फिर भी बताओ । यही मानकर बताओ कि अभी खुद तुम्हीं ने कहा था कि हमें आपस में कोई बात नहीं छुपानी चाहिए ।”
“डार्लिंग, वो क्या है कि लोकेश के मुंह पर चांदी का जूता मारना होगा ।”
“क्या ?”
“वो अपनी खामोशी की कीमत चाहता है जो मैं उसे अदा कर दूंगा ।”
“विश्वास नहीं होता ।”
“उसकी माली हालत क्या किसी से छुपी हुई है ? “
“वो ठीक है लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि... कमाल है । यही शख्स अभी दो दिन पहले मेरे सामने अपनी मुहब्बत की दुहाई दे रहा था । और अब मेरा पीछा छोड़ने की कोई कीमत चाहता है । लानत !”
प्रेम सागर ने बड़ी संजीदगी से सिर हीलाया ।
“मैं लोकेश को बहुत मुद्दत से जानती हूं । बहुत पसन्द करती थी मैं उसे । इसी वजह से उसका दिल तोड़ते मुझे दुख हो रहा था । मैं तो सपने में नहीं सोच सकती थी कि वो इतना नीचे गिर कर दिखा सकता था । यह तो साफ-साफ ब्लैकमेलिंग हुई...”
“अब छोड़ो न डार्लिंग, मैं उसके मुंह पर चांदी का जूता मारना अफोर्ड कर सकता हूं ।”
“लेकिन उसने...”
“मुझे पता था यह बात जानकर तुम्हारा दिल दुखेगा । तभी तो मैं इसे ज़ुबान पर नहीं लाना चाहता था लेकिन तुम्हारी जिद थी जानने की । अब तुम समझ गयी होगी कि क्यों उस मीटिंग के दौरान तुम्हारा यहां होना मुनासिब नहीं । उसने खास तौर से मांग की है कि दीपा यहां न हो और उसे इस बात का पता न चले ।”
“अब तो मैं ही उसकी सूरत नहीं दखना चाहती । लेकिन इस वक्त मैं जाऊं कहां ?”
“कहीं और जाने की जरुरत नहीं । ड्राईंगरुम में चली जाओ । बस इतना ख्याल रखना कि लोकेश को शक न हो कि ड्राईंगरूम में कोई है । मेरा मतलब है दरवाजा बन्द रखना और कोई ऊंची आवाज न करना ।”
“ठीक है । तुम्हें उसके साथ कितना वक्त लगेगा ?”
“दो तीन मिनट ! बड़ी हद पांच मिनट ।” - उसने घड़ियाल पर निगाह डाली, दो बजकर चौवन मिनट हुए थे - “मैं तीन बजे तक हर हाल में उसकी फ्री हो जाऊंगा ।”
“न हुए तो ?”
“मैं जरूर हो जांऊगा । चाहे मुझे उसे बाल्कनी से ही नीचे क्यों न धकेलना पड़े ।”
“अच्छा ।”
“तुम खुद आकर तसदीक कर लेना । तीन पच्चीस तक मैं रवानगी के लिए पूरी तरह से तैयार होऊंगा । एक मिनट में चल दूंगा ।”
“तुम सावधान रहना ।”
“किस बात से ?”
“लोकेश से । उसकी किती खतरनाक हरकत से । याद नहीं उस रोज वह तुम्हें कैसी-कैसी धमकियां दे रहा था ।”

"तुम फिक्र न करो । मैं सब सम्भाल लूंगा । अब तुम जाओ वो आने ही वाला होगा ।"

दीपा वहां से ड्राइंगरुम में चली गयी ।

उसके जाने के बाद सबसे पहले प्रेम सागर ने मेज के दराज में पड़ी अपनी रिवाल्वर चैक की । रिवाल्वर को एकदम चौकस पा कर वह आश्वस्त हुआ । वह दराज बन्द ही करने लगा था कि फ्लैट के दरवाजे पर हल्की सी दस्तक पड़ी । उसने दराज बन्द करने की कोशिश की तो वह आधे रास्ते में कहीं अटक गया । दराज को उसी स्थिति में छोड़ कर बाहर की तरफ बढा । उस वक्त घड़ियाल में ठीक दो बजकर पचपन मिनट हुए थे । चार लाख के मुर्गे के लिए उसने अपने होंठों पर एक मीठी मुस्कराहट पैदा की फ्लैट का मुख्य द्वार खोला ।

लोकेश ही आया था ।

वह उसे स्टडी में ले आया ।

"तुम्हारे फ्लैट पर न होने ने बहुत वक्त बरबाद करवा दिया ।" - यह वह घड़ियाल पर निगाह डालता हआ बोला - "मैंने तुम्हें बहुत बार फोन किया आज ।"

प्रेम सागर ने नोट किया कि वह बड़ा बेचैन और उत्तेजित लग रहा था । और बार-बार पहलू बदल रहा था ।

"मेरे पास तुम्हारे लिये सिर्फ पांच मिनट का वक्त है ।" - वह चेतावनीभरे स्वर में बोला - "मैंने बम्बई की गाड़ी पकड़नी है ।"

"अब बम्बई की गाड़ी पकड़ने की जरुरत कहां रह जायेगी ! अब तो वक्त ही वक्त है तुम्हारे पास ।" - लोकेश बोला - "किसी को मेरे यहां आने की खबर तो नहीं ?"

"नहीं । तुमने मना जो किया था कि मैं किसी को न बताऊं कि तुम आ रहे हो ।"

"गुड ।"

"पूरी रकम का इन्तजाम है न ?"

"हां ।"

"तीन का नहीं चार का ?"

"चार का ही ।"

"पूरे चार का ?"

"हां । हां ।"

"बैठो ।"

लोकेश ने बैठने का उपक्रम न किया । बैठने के स्थान पर ऐने अपने सपने की तरह वह मेज की परली तरफ अपनी कुर्सी पर बैठे प्रेम सागर के करीब पहुंचा । उसने बड़े अर्थपूर्ण ढंग से अपने कोट की भीतरी जेब को ऊपर से थपथपाया ।

प्रेम सागर के चेहरे पर चमक आई ।

"अगर रकम का इन्तजाम न हुआ होता तो ?" - लोकेश बोला ।

"अब तो हो ही गया है ।" - प्रेम सागर नकली हंसी हंसता हुआ बोला ।

"हां । अब तो हो गया है लेकिन अगर न हुआ होता तो फिर भी मैंने तुमसे आखिरी बार दरख्वास्त की होती कि तुम दीपा का पीछा छोड़ दो तो तुम बात मानते ?"

"मानता ! फोकट में तो मैं तुम्हारी बात सुनना गवारा न करता ।"

"अच्छा !"

"हां । दीपा जैसी शानदार लड़की को छोड़ने के ख्याल से ही मेरा कलेजा फटने लगता है । ऊपर से यह काम मैं फोकट में भी करुं ! क्या कहने !"

"हूं ।" - लोकेश ने गहरी सांस ली ।

"तुम तो अपने आपको खुशकिस्मत समझो कि तुम्हें दीपा के बचाने का एक मौका मिल गया है । दीपा के पासपोर्ट में" - उसने मेज पर पड़ा एक पासपोर्ट उठा कर लोकेश को दिखाया - "दुबई की एन्डोर्समेन्ट नहीं थी जो कि अब करवाई गई है । ऐसा न होता तो मैं दो दिन पहले ही दीपा के साथ यहां से रवाना हो गया होता ।"

"यह दीपा का पासपोर्ट है ?"

"हां ।" - और उसने पासपोर्ट वहां से खोल कर लोकेश को दिखाया जहां दीपा की तस्वीर लगी हुई थी - "ड्यूली एन्डोर्स्ड फार दुबई ।"

"हूं ।" - लोकेश ने गहरी सांस ली ।

प्रेम सागर ने पासपोर्ट वापिस मेज पर डाल दिया ।

उसको यह देखकर बड़ा अचम्भा हुआ कि एकाएक लोकेश का जिस्म कांपने लगा और उसके चेहरे पर पसीने की बूंदें चुहचुहा आयीं । बड़ी कठिनाई से वह अपनी जेब में से रुमाल निकालने में सफल हुआ । उसने अपने चेहरे से पसीना पोंछा ।

"सारी" - लोकेश बोला - "मुझे जरा चक्कर आ गया । रकम के इन्तजाम में पूरे दो दिन मैं सारे दिल्ली शहर में धक्के खाता रहा हूं । एक मिनट भी रैस्ट नहीं किया मैंने । मुझे एक गिलास पानी पीला सकते हो ?"

"क्यों नहीं ?" - प्रेम सागर बोला - "वो उधर साइड बोर्ड पर पानी का जग और गिलास पड़े हैं । पी लो ।"

फिर सपना टूटा ।

सपने में तो प्रेम सागर उठकर उसके लिए पानी लेने जाता था और वह उसकी मेज के दराज में रिवाल्वर निकाल लेता था ।

लोकेश गड़बड़ा गया ।

हे भगवान ! - वह मन ही मन बोला - क्या कोई भी बात सपने के मुताबिक नहीं होने वाला थी ?

उपर से अब प्रेम सागर की निगाहों में शक की हल्की-सी चमक पैदा होने लगी थी । भारी कदमों से चलता हुआ लोकेश साइड बोर्ड तक पहुंचा । उसने पानी का एक गिलास भरा, उसमें से घूंट पिया और उसे हाथ में थामे वापिस टेबल के करीब लौटा ।

"कांप क्यों रहे हो ?" - प्रेम सागर उपहासपूर्ण स्वर में बोला - "चार लाख रुपये खोने का ख्याल हलकान कर रहा है या दीपा की आजादी की खुशी हो रही है ?"

"दूसरी बात !"

"फिर तो तुम परी कथाओं के वो राजकुमार हुए जो राजकुमारी को किसी दानव के चंगुल से छुड़ाकर राजकुमारी का दिल जीतता है ।"

लोकेश का जी चाहा कि वह हाथ में थमा गिलास उसके मुंह पर दे मारे । बड़ी मुश्किल से उसने स्वयं पर काबू किया । उसी प्रकिया में उसने जल्दी से गिलास का सारा पानी हलक में उड़ेलने की कोशिश की तो उसे उच्छू लग गया । वह जोर-जोर से खांसने लगा । अपने एक हाथ से मेज थाम ली और बुरी तरह खांसते-खांसते दूसरे हाथ में थमा गिलास प्रेम सागर की ओर बढाया । प्रेम सागर ने बिना सोचे समझे बड़े स्वभाविक ढंग

से गिलास थाम लिया ।

"थ- थ-थो- थोड़ा प-पानी और ।" - लोकेश बड़ी कठिनाई से कह पाया । प्रेम सागर अपने स्थान से उठा और गिलास थामे साइड बोर्ड की तरफ बढा ।

तब भी खांसते-खासते लोकेश ने अधखुले दरवाज में पड़ी रिवाल्वर पर अपना रुमाल डाला और रिवाल्वर उठाकर अपनी जेब में रख ली ।

प्रेम सागर पानी का गिलास भर रहा था ।

"अब रहने दो" - लोकेश ने एकाएक खांसना बन्द कर दिया - "नहीं चाहिये ।"

प्रेम सागर ने गिलास वहीं साइड बोर्ड पर रख दिया और वापिस घूमा ।

"अब रकम निकालो ।" - वह बोला ।

"सागर साहब !" - लोकेश बोला ।

"हां ।"

"तुम एक नम्बर के हरामी हो ।"

"वो तो मैं हूं ही । रकम मेरे हवाले करो, उसके बाद जी भर के मुझे गालियां देना । मैं बुरा नहीं मानूंगा ।"

"इतनी आसानी से नहीं ।"

"क्या मतलब ?"

"मैं नहीं चाहता कि तुम रकम भी रकम ले लो और दीपा से बदस्तूर रिश्ता भी जोड़े रहो । ऐसा न हो इसके लिए तुम्हें एक काम करना होगा ।"

"क्या ?"

"दीवान कैलाश नाथ को फोन करके यहां बुलाओ ।"

"वो कौन है और उसे मैं किस लिए यहां बुलाऊ ?"

लोकेश ने बताया ।

"मेरे पास इतना वक्त नहीं ।" - प्रेम सागर ने तीव्र विरोध किया ।

"तो नमस्ते ।"

"मुझे लग रहा है कि तुम मेरी गाड़ी छुड़वाने के लिए चालाकियां कर रहे हो ?"

"उससे मुझे क्या हासिल होगा ? बम्बई क्या वही एक गाड़ी जाती है ?"

प्रेम सागर सोचने लगा ।

"इस बैरिस्टर से" - फिर वह बोला - "तुम पहले ही सारी खिचड़ी पकाकर आये हो ?"

"हां ।" - लोकेश बोला - "और फोन जल्दी करो । दीवान साहब सिर्फ तीन बजे तक तुम्हारी काल का इन्तजार करेंगे । और तीन बजने ही वाले हैं ।"

प्रेम सागर ने फोन की तरफ हाथ न बढाया । वह पूर्ववत् उलझन और सन्देह भरी निगाहों से लोकेश को देखता रहा । उसके सपने में प्रेम सागर ने फोन के नाम पर हुज्जत तो जरूर की थी लेकिन फोन करने से इनकार नहीं किया था । लेकिन अब हकीकत में तो वह फोन करता लग ही नहीं रहा था ।

एकाएक लोकेश को एक तरकीब सूझी ।

"सागर साहब" - वह बोला - "दीवान साहब का इस वक्त यहां आना निहायत जरूरी है । उनकी गवाही के अलावा भी उनका यहां आना जरुरी है ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि रकम उनके पास है ।"

“तुम तो कह रहे थे वह तुम्हारे पास है ।”
“ऐसा मैंने कब कहा था ?”
“नहीं कहा था ?”
नहीं ।”
“तो मुझे क्यों लगा था कि रकम तुम्हारे पास थी ।”
“मुझे अपने कोट की जेब थपथपाई थी तो मैंने समझा था कि...”
“तम खामखाह बातों में वक्त जाया कर रहे हो ।”
“रकम तुम्हारे पास होनी चाहिए थी ।”
“उनके पास होना भी मेरे पास होने जैसा ही है । तुम क्या मुझे मूर्ख समझते हो जो मैं दो नम्बर की इतनी बड़ी रकम साथ लेकर अकेला यहां आता तुम मुझे फिर बेहोश कर सकते थे और रकम मुझसे छीन सकते थे ।”
“ओह !”
बेहोशी के हवाले ने उस पर पूरा असर किया ।
वह फोन करने को तैयार हो गया ।
“एक मिनट ।” - लोकेश बोला ।
“अब क्या है ?”
“तुम्हारा नौकर ! मैं नहीं चाहता कि वो जाने...”
“मैंने उसे पहले ही कह...”
प्रेम सागर ने होंठ काटे ।
“क्या !” - लोकेश हकबकाया - “तुमने कह दिया उसे ! तुमने वादा किया था कि तुम उसे कुछ नहीं कहोगे ।”
“मैं कहने जा रहा था कि मैंने उसे पहले ही कह दिया हुआ है कि उसने मुझे डिस्टर्ब नहीं करना था, मेरे बुलाये बिना यहां नहीं आना था ।”
“सच कह रहे हो ?” - लोकेश संदिग्ध भाव से बोला ।
“हां ! लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि तुम मरे क्यों जा रहे हो इस बात के लिए कि किसी को तुम्हारे यहां आगमन की खबर न लगे । किस फिराक में हो तुम ?” - वह कुछ क्षण अपलक उसे देखता रहा और फिर बोला - “अगर मैं तुम्हें एक निरा गावदी नौजदान न समझता होता तो मैं यही सोचता कि तुम मेरे साथ कोई चालाकी करने की कोशिश कर रहे हो । क्यों तुम चाहते हो कि तुम्हारी यहां मौजूदगी की किसी को खबर न लगे ? क्यों तुम रकम साथ लेकर नहीं आये हो ? क्यों तुम...? कही तुम मेरा पत्ता साफ करने की फिराक में तो नहीं हो ?”
“ऐसा मैं कर पाता तो मजा न आ जाता ! लेकिन तुमने खुद ही कहा था कि मेरे पास फूलप्रूफ, वाटरटाइट, आयरन क्लैड एलीबाई नहीं ।”
“शायद पिछले दो दिनों में घड़ ली हो तुमने ?”
“मेरे जैसे गावदी ने ?” - लोकेश उपहासपूर्ण स्वर में बोला ।
“कोई गड़बड़ है जरूर ।”
“क्या गड़बड़ है ?”
“यही तो समझ नहीं आ रहा...”
कुछ क्षण खामोशी रही । स्तबध वातावरण में दोनों अपलक एक दुसरे को देखते रहे

। फिर प्रेम सागर का हाथ धीरे-धीरे नौकर को बुलाने वाली घन्टी के पुश की ओर सरकने लगा । लोकेश का दिल जोर से उछला ।

सपने में वैसी घन्टी का तो कोई रोल ही नहीं था । उसकी योजना में वैसी घन्टी का तो कोई रोल ही नहीं था ।

प्रेम सागर ने बैल पुश थाम लिया । उसकी एक उंगली उसके सफेद बटन पर टिक गयी ।

"तुमने यह घन्टी बजाई !" - लोकेश सुसंयत स्वर में बोला - "तो समझ लेना चार लाख रुपये तुम्हारे हाथ से गये । विश्वास जानो, मैं किसी फिराक में नहीं हूं । मैं तो सिर्फ यहां तुम्हारे साथ हिसाब करने आया हूं ।"

लोकेश के अन्तिम वाक्य का दूसरा मतलब प्रेम सागर के पल्ले न पड़ा । वह एक क्षण ठिठका खड़ा रहा, फिर उसने पुश पर से हाथ हटा लिया ।

"नम्बर बोलो दीवान साहब का ।"

"3317195 ।"

वह फोन करने लगा ।

लोकेश घण्टी के बारे में सोचने लगा । उसका कोई इलाज जरूरी था । वह घण्टी सब गुड़ गोबर कर सकती थी ।

उसने देखा मेज पर लैटर ओपनर के साथ एक कैंची पड़ी थी । उस कैंची का हैंडल प्लास्टिक का था । उसने वह कैंची उठी ली और उसके साथ खिलवाड़ करने लगा । वह कैंची को हवा में उछालता था और फिर उसे लपक लेता था । तीन चार बार ऐसा करने के बाद एक बार उसने कैंची फर्श पर गिर जाने दी । उसने झुककर कैंची उठाने का उपक्रम किया । घण्टी की तार उसे मेज के एक पाए के पास से गुजरती और फिर कालीन के नीचे दाखिल होती दिखाई दी । कैंची से उसने वह तार काट दी ।

अब घण्टी नाकाम हो चुकी थी ।

"हल्लो ।" - प्रेम सागर फोन में कह रहा था - "जरा दीवान कैलाश नाथ से बात करा दीजिए ।... मेरा नाम प्रेम सागर है ।"

तभी घड़ियाल ने तीन बजाए ।

लोकेश ने कैंची यथास्थान रख दी, जल्दी से अपने सूती दस्ताने पहने और दबे पांव उसकी तरफ पीठ करके फोन करते प्रेम की ओर बढा ।

"दीवान साहब ।" - प्रेम सागर फोन पर कह रहा था - "लोकेश भार्गव ने आपसे मेरा जिक्र किया होगा । आप यहां मेरे फ्लैट पर तशरीफ ले आइए । कार या टैक्सी से..."

"पैदल भी सिर्फ पांच मिनट का रास्ता है ।" - लोकेश धीरे से बोला ।

"लोकेश कहता है पैदल भी सिर्फ पांच मिनट का रास्ता है ।"

लोकेश के मुंह से प्रेम सागर के लिये भद्दी गाली निकलते-निकलते रह गई । साले ने खामखाह टेलीफोन पर उसके नाम का जिक्र कर दिया था । अब दीवान साहब समझ सकते थे कि वह पहले ही फ्लैट पर पहुंचा हुआ था । उनके ऐसा समझने से उसकी सारी योजना की टांग टूट सकती थी और उसकी एलीबाई (गवाही) छिन्न-भिन्न हो सकती थी । उसका बीच में राय देना इसलिये जरूरी हो गया था क्योंकि उसकी योजना की कामयाबी के लिये यह भी जरूरी था कि दीवान साहब पांच मिनट पैदल चल कर वहां

पहुंचते । उसने वहां जिन कई कामों को प्रेम सागर के कत्ल के बाद अंजाम देना था, उनके लिए कम से कम पांच मिनट का वक्त उसके पास होना निहायत जरूरी था ।

प्रेम सागर दीवान साहब को अपने फ्लैट का पता बता रहा था ।

लोकेश ने रिवाल्वर निकालकर अपने दायें हाथ में ले ली और तह किया हुआ सफेद कपड़ा बायें हाथ में सम्भाल लिया ।

प्रेम सागर ने रिसीवर वापिस केडल पर रख दिया ।

"सागर साहब" - तब लोकेश ने ऐन अपने सपने वाले शब्द इस्तेमाल किये - "आखिरी बार पूछ रहा हूं । दीपा का पीछा छोड़ते हो या नहीं ?"

"मैं भी आखिरी बार जवाब दे रहा हूं" - उसे जवाब भी सपने वाला ही मिला - "चार लाख रुपये हासिल किये बिना नहीं ।"

"रुपये के बिना । रुपये के बिना दीपा का पीछा छोड़ते हो या नहीं ?"

"हरगिज भी नहीं ।"

"सोच लो ।"

"सोच लिया । दीपा की कीमत अदा नहीं करोगे तो वह पहले मेरी कुछ रातें रंगीन करेगी और फिर अरब शेखों के हरमों में नंगी नाचेगी । आखिरी में किसी घटिया रण्डीखाने में तिल-तिल करके एड़ियां रगड़ते दम तोड़ देगी ।"

"कमीने ! कमीने ! दीपा की खातिर नहीं तो अपनी खातिर यह ख्याल छोड़ दे ।"

"मेरी खातिर ।" - उसने जोर का अट्टहास किया ।

"हंस ले । यह तेरी आखिरी हंसी है ।"

उसकी हंसी को एकाएक ब्रेक लगी ।

"हरामजादे ! मेरे पास चार लाख रुपये न हैं और न हो सकते थे । मेरे पास तेरा दूसरा इलाज है ।"

"क्या ?"

"तेरी मौत ।" - और उसने अपने पीठ की ओट से निकाल कर अपना रिवाल्वर वाला हाथ उसकी तरफ तान दिया ।

अपनी रिवाल्वर लोकेश के हाथ में देखकर प्रेम सागर के छक्के छूट गए । वह जोर-जोर से हबीब को बुलाने वाली घण्टी का बुश दबाने लगा ।

"घण्टी नहीं बजने की" - लोकेश बोला - "मैंने इसकी तार काट दी हुई है ।"

प्रेम सागर और भी आतंकित हो उठा । उसने चिल्लाने के लिए मुंह खोला ही था कि लोकेश ने आगे बढकर उसकी कनपटी से रिवाल्वर सटा दी ।

"हब... हब... हबीब... हब...।"

लोकेश ने रिवाल्वर का घोड़ा खींच दिया ।

उसके बाद उसने वे तमाम काम किये जो उसकी योजना के अंग थे ।

योजनानुसार प्रेम सागर की कलाई घड़ी दो पैंतालीस पर रुकी होनी चाहिए थी लेकिन अब वह वक्त मुनासिब नहीं रहा था । उसने समय का नया हिसाब लगाया और घड़ी में तीन बज कर पांच मिनट बजा दिये । योजनानुसार घड़ी को तोड़ कर, ताकि वह तीन पांच पर रुक जाये उसने उसे वापिस हत्प्राण की कलाई पर बांध दिया ।

फिर उसने घण्टी की तार कारपेट के नीचे से खींची और काटे हुए सिरे को एक दूसरे के करीब किया । प्लास्टिक के हैंडल वाली कैंची से ही उसने तारों को थोड़ा-थोड़ा छीला

और कैंची से ही किसी प्रकार उन्हें ट्विस्ट करके आपस में जोड़ दिया । जोड़ मजबूत नहीं बन पाया क्योंकि ऐसा जोड़ देने में करेन्ट लगने का खतरा था लेकिन काम चलाऊ जोड़ वह बन गया था । उसने तार का जोड़ वाला हिस्सा कारपेट के नीचे दबा दिया ।

फिर उसने खून के दाग धब्बों की तरफ तवज्जो दी ।

रह रह कर उसकी निगाह घड़ियाल की तरफ उठ जाती थी ।

उसके पास वक्त बहुत कम था और काम उसने कई करने थे । उसे भय था कि कहीं कोई काम रह न जाये ।

और जो काम रहा जा रहा था, उसे देख कर उसका दम ही निकल गया ।

बैडरूम का दरवाजा खुला था ।

वह लपक कर दरवाजे पर पहुंचा । दरवाजे के भीतर से की होल में लगी चाबी वह अभी निकाल ही रहा था कि फ्लैट के किसी दरवाजे पर दस्तक पड़ी ।

लोकेश को जैसे सांप सूंघ गया ।

दोबारा दस्तक पड़ी तो वह अपनी जड़ हालत से उबरा । वह दरवाजे के भीतर हो गया । उसने दरवाजा बन्द कर लिया और कान लगाकर सुनने लगा ।

उसे दीपा की आवाज सुनाई दी । वह हत्प्राण को नाम लेकर पुकार रही थी । वास्तव में दो बार दस्तक दीपा ने खुद ड्राइंग रूम के दरवाजे पर प्रेम सागर का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए दी थी और दस्तक का कोई असर न होता पाकर वह खुद स्टडी में पहुंची थी ।

लोकेश की हालत पतली होने लगी । घबराहट से उसे अपना दम घुटता महसूस होने लगा । वह समझ नहीं पा रहा था कि दीपा के उस अप्रत्याशित आगमन से वह कैसे दो चार हो । अपने सपने में तो उसने दीपा को नहीं देखा था । उसकी योजना में तो दीपा का ऐसा कोई रोल नहीं था ।

“प्रेम !” - वह कह रही थी - “कहां हो ? वो चला गया ?”

लोकेश ने की होल में आंख लगा दी ।

उसने देखा दीपा स्टडी के बीच में खड़ी थी और चारों तरफ निगाह दौड़ा रही थी । उसकी निगाह उसने स्टडी के घड़ियाल पर भी पड़ती देखी ।

घड़ियाल की होल में से लोकेश को भी दिखाई दे रहा था ।

उस वक्त उसमें तीन बज कर तीन मिनट हुए थे ।

दीपा बैडरूम के दरवाजे पर पहुंची ।

“प्रेम !” - वह बोली - “भीतर हो ! मैं अपने पासपोर्ट के लिए यहां आई थी ।”

लोकेश सांस रोके खड़ा रहा ।

एक क्षण बाद दीपा घूमी और बाहर को बढी ।

मेज के करीब वह ठिठकी ।

उसने मेज पर पड़ा पासपोर्ट उठा लिया ।

“प्रेम !” - वह फिर बैडरूम की ओर मुंह करके बोली - “पासपोर्ट मेज पर पड़ा मिला गया है । मैं इसे लेकर जा रही हूं ।”

फिर वह स्टडी से बाहर निकल गयी ।

तब लोकेश ने डरते हुए बैडरूम का दरवाजा खोला ।

उसने दरवाजा बन्द किया, उसके ताले में चाबी फिराई और चाबी अपनी जेब में रख

ली ।
दीपा की वहां एकाएक आमद ने उसे झकझोर कर रख दिया था लेकिन अब वह फिर सम्भल गया था ।
दीपा ड्राईंग रूम में थी और अब वहां से म्यूजिक की आवाज आने लगी थी । शायद उसने कोई कैसेट चालू किया था या शायद रेडियो चलाया था ।
उसने घड़ियाल पर निगाह डाली ।
तीन बजकर चार मिनट ।
वह घड़ियाल के पास पहुंचा । उसने घड़ियाल की सुइयां दस मिनट पीछे कर दीं ।
अब उस पर दो बज कर चौवन मिनट का समय दिखाई देने लगा ।
उसकी योजना में कुछ व्यवधान जरूर आये थे लेकिन वक्त अभी भी उसका गुलाम था । उस घड़ी ने अभी भी उसे साफ बचा लेना था । वह घड़ी ही, बकौल प्रेम सागर, उसकी फर्स्ट क्लास, वाटरटाइट, आयरनक्लैड एलीबाई बनने वाली थी ।
उसने दीपा को बचाने के लिए एक हत्या की थी लेकिन वह हत्या आत्महत्या ही समझी जाने वाली थी ।
अन्त में उसने अपने हाथों पर से सूती दस्ताने उतारे और उन्हें फायरप्लेस की आग में झोंक दिया जहां कि खून से सना, तह किया हुआ कपड़ा पहले ही जलकर खाक हो चुका था ।
ड्राईंग रूम से संगीत की आवाज बदस्तूर आ रही थी । शायद वह दीपा की खुशी का इजहार कर रही थी जो अब उसे प्रेम सागर नाम के व्यक्ति से कभी हासिल नहीं होने वाली थी ।
एक आखिरी निगाह घटनास्थल पर डाल कर वह दबे पांव फ्लैट से बाहर निकल गया ।

***

दीवान कैलाश नाथ की निगाह में किसी को बुलाकर खुद हाजिर न होना उसके साथ बदसलूकी की इन्तहा थी ।
“साहब फ्लैट में नहीं हैं ?” - वे हबीब को घूरते हुए बोले - “तो म्यूजिक कौन सुन रहा है ?”
“वो... वो एक” - हबीब बोला - “मेम साहब हैं ।”
“शायद उन्हें तुम्हारे साहब के बारे में कुछ मालूम हो !”
“जी वो... मैं जरा पहले बैडरूम में देखता हूं, साहब ।”
उसने बैडरूम के बन्द दरवाजे पर दस्तक दी, दरवाजा ट्राई किया, फिर दस्तक दी ।
जवाब नदारद ।
“साहब भीतर तो नहीं मालूम होते ।” - वह खेदपूर्ण स्वर में बोला ।
“हद है बेमुरव्वती की ।” - दीवान साहब भड़के - “यूं आनन फानन मुझे तो यहां बुला लिया और खुद पता नहीं कहां चलदिये तुम्हारे साहब । जानते हो मैं खास तुम्हारे साहब के बुलाने पर यहां आया हूं ।”
“नहीं, साहब । मैं नहीं जानता । मेरे से तो साहब ने सिर्फ लोकेश भार्गव साहब के आने का जिक्र किया था ।”
“हम दोनों आने वाले थे । भार्गव साहब आये ?”

"मुझे मालूम नहीं, साहब । क्या पता भार्गव साहब आये हों और साहब उन्हीं के साथ एक मिनट को कहीं चले गये हों ।"

तभी फ्लैट की घन्टी बजी ।

दीवान साहब को स्टडी में खड़ा छोड़ कर हबीब मुख्यद्वार की तरफ बढा ।

दीवान कैलाश नाथ कोई सत्तर साल की उम्र के बड़ी नाजुक तन्दुरुस्ती वाले दुबले पतले वृद्ध थे । लोकेश के पिता कभी उनके पास स्टेनो हुआ करते थे । उन्हीं की प्रेरणा से लोकेश ने एल एल बी की थी और वकील बना था । वह अक्सर दीवान साहब के पास किसी खास नुक्ते पर उनकी सलाह हासिल करने के लिये आता रहता था ।

आगन्तुक लोकेश भार्गव निकला ।

वह हकीब को एक तरफ धकेलता हुआ स्टडी में पहुंचा ।

"गुड आफ्टरनून, सर !" - वह दीवान साहब से बोला ।

"गुड आफ्टरनून, माई ब्वाय !" - दीवान साहब बोले - "क्या बात है । हांफ क्यों रहे हो ?"

"वो क्या है कि" - लोकेश बोला - "नीचे लिफ्ट नहीं थी मैं सीढियां चढकर आया हूं ।"

"तभी तो नीचे ही तुम से मुलाकात नहीं हो गयी । तब लिफ्ट मुझे ऊपर ला रही होगी ।"

"आप अभी पहुंचे हैं !"

"हां ।"

"सागर साहब कहां हैं ?"

"फ्लैट में तो हैं नहीं । मैंने तो सोचा था कि उनका कोई पता तुम्हें मालूम होगा ।"

"मु - मुझे !" - लोकेश हड़बड़ाया - "मुझे क्यों कर मालूम होगा, साहब ? मैं तो अभी आपके सामने वहां पहुंचा हूं ।"

हबीब हल्के से खांसा और बोला - "मैंने यह राय दी थी कि शायद आप अभी पहले भी यहां आये हों और साहब आपके ही साथ एक मिनट को कहीं बाहर चले गये हों ।"

"मैं यहां पहले भी आया होऊं ?" - लोकेश अचकचा कर बोला - "मैं कुछ समझा नहीं ।"

"साहब ने कहा था कि आप आने वाले थे और वही खुद आपके लिये दरवाजा खोलने वाले थे ।"

"ऐसा तुम्हारे साहब ने तुम्हें कहा था ?"

"हां ।"

लोकेश का दिल लरज गया ।

तो हरामजादा प्रेम सागर झूठा और वादाखिलाफ भी निकला था । आखिर उसने अपने नौकर को बता ही दिया था कि वह वहां आने वाला था । क्या पता यही बात उसने हबीब के अलावा किसी और को भी बताई हो !

"नानसेंस !" - प्रत्यक्षत: वह बोला - "मैं तो अभी यहां आया हूं ।"

हबीब खामोश रहा ।

"जाओ" - दीवान साहब बोला - "अपने साहब को कहीं से ढूंढ कर लाओ ।"

ढूंढने तो हबीब कहां जाता, अलबता स्टडी से वह विदा हो गया ।

“अजीब आदमी है” - दीवान साहब भुनभुनाये - “हमें बुलाकर खुद कहीं खिसक गया ।”

“कोई ज्यादा देर तो नहीं हुई !” - लोकेश घड़ियाल की तरफ घूमा - “देखिये यह घड़ियाल तो अभी दो छप्पन ही बजा रहा है ।”

दीवान साहब की निगाह अपने आप ही घड़ियाल की तरफ उठ गयी ।

“इतना बड़ा घड़ियाल मैंने कभी नहीं देखा ।” - वह बोला ।

“बड़ा छोटा क्या !” - लोकेश हंसा - “मैंने तो घड़ियाल ही नहीं देखा ।”

“हां । आज कल क्वार्ट्ज क्लाक का रिवाज है ।” - वे एक क्षण ठिठके और फिर बोले - “बरखुरदार, जब इस प्रेम सागर ने मुझे फोन किया था तो मुझे लगा था तुम उसके पास तभी मौजूद थे ।”

“नहीं, साहब” - लोकेश बोला - “यह तो मुमकिन ही नहीं । मैं तो प्रेस क्लब में लंच कर रहा था और अभी वहीं से उठकर सीधा आया हूं ।”

“उसने फोन पर तुम्हारा नाम यूं लिया था जैसे तुम उसके पास मौजूद रहे होवो ।”

“आपको गलतफहमी हुई है, साहब । मैं उसके पास मौजूद होता तो फिर तो मैं खुद आप से बात करता ।”

“हां, यह भी ठीक है । जरूर मुझे गलतफहमी हुई थी ।”

लोकेश की जान में जान आयी ।

“अजीब आदमी है यह प्रेम सागर” - दीवान साहब फिर भुनभुनाने लगे - “मैंने बहुत चर्चे सुने हैं इसके । कहते हैं औरतों का बड़ा भारी रसिया है । उसका नौकर कह रहा था कि अभी भी कोई मेम साहब फ्लैट में मौजूद हैं ।”

“अच्छा !” - लोकेश ने हैरानी जाहिर की ।

“हां । देखो तो हमारी खातिर न सही तो अपने उस मेहमान की खातिर तो फ्लैट में रुकता ।”

“सर, मुझे एक बात सूझी है ।”

“क्या ?”

“कहीं ऐसा तो नहीं कि वो आपके आफिस में पहुंच गया हो ।”

“वो किस लिए ?”

“शायद आपसे हुए वार्तालाप का मन्तव्य यह रहा हो कि आप यहां नहीं आयेंगे बल्कि वो आपके आफिस में पहुंचेगा ।”

“ऐसा कैसे हो सकता है ! हमारे में साफ बात हुई थी कि आना मैंने था । तभी तो टैक्सी का जिक्र आया था और फिर उसने कहा था कि पैदल भी सिर्फ पांच मिनट का रास्ता था ।”

“सर, आपसे नहीं तो प्रेम सागर से बात को समझने में कोई गलती हुई होगी । उसके यूं हमें इन्तजार करता छोड़ने वाली बात कुछ पल्ले नहीं पड़ रही । मैं तो कहता हूं जरूर वह आपके आफिस में पहुंच गया है । सर, आपके आफिस में चलते हैं । जरूर वह वहीं होगा ।”

“वहां जाने की क्या जरूरत है ? फोन करके पूछ लेते हैं कि वह वहां पहुंचा है या नहीं ।”

लोकेश का दिल जोर से उछला ।

उसके सपने ने उसे इतना मामूली बात नहीं सुझाई थी कि जहां वह दीवान साहब के साथ पैदल चलकर जाना चाहता था, वहां फोन भी किया जा सकता था ।

"मैं आपके आफिस फोन करता हूं ।" - वह मरे स्वर में बोला ।

वह फोन के पास पहुंचा और काल लगाने का अभिनय करने लगा ।

"फोन खराब मालूम होता है" - फिर वह रिसीवर वापिस केडल पर रखता हुआ बोला - "डायल टोन तो है लेकिन डायल नम्बर नहीं पकड़ रहा ।"

"लाइन कहीं उलझ गयी होगी ।"

"ऐसा ही मालूम होता है ।"

"यूं उलझी लाइन अपने आप ठीक हो जाती है । थोड़ी देर बाद फिर ट्राई करना ।"

"सर, इतनी देर में तो हम वहां हो भी आयेंगे ।"

"बरखुरदार, अब यहां बैठे हैं आराम से..."

"सर, एक कानूनी नुक्ते पर मैं आप से मशवरा भी करना चाहता था ।"

"तो करो ।"

"यहां खामखाह बीच में व्यवधान आ जायेगा ।"

"तो यहां से निपटने के बाद बात कर लेंगे ।"

"सर, कमाल करते हैं आप" - परेशानी से हलकान हुए जा रहे लोकेश ने आखिरी कोशिश की - "सारा दिन तो आप आफिस में बैठे रहते हैं । आपको तो वाक का कोई मौका छोड़ना ही नहीं चाहिए, खास तौर से दिल्ली के आज जैसे सुहावने मौसम में..."

वह तरकीब कारगर साबित हुई ।

दीवान साहब फौरन उठ खड़े हुए ।

लोकेश का जान में जान आयी ।

"चलो" - वे बोले - "वैसे भी पता नहीं क्यों यह कमरा मुझे मकबरे जैसा लग रहा है । कोई खुली खिड़की नहीं, कोई रोशनदान तक नहीं । वाक के बहाने खुले में तो पहुंचेंगे ।"

"ऐग्जेक्टली सर" - लोकेश बोला - "मैं जरा नौकर को खबर कर दूं ।"

उसने घण्टी बजाकर हबीब को बुलाया ।

"तुम्हारे साहब की तलाश में हम दीवान साहब के आफिस में जा रहे हैं । वो वहां न हुए तो हम उलटे पांव लौटेंगे । हमें मुश्किल से दस मिनट लगेंगे आने जाने में ।"

"साहब यहां आयेंगे जरूर । उन्होंने सफर के लिए रवाना होना है । मैंने साढे तीन बजे उनके लिए टैक्सी भी बुलाई हुई है ।"

"सोये तो नहीं पड़े तुम्हारे साहब ?" - एकाएक दीवान साहब बोले - "शायद गहरी नींद सोये हों जिसकी वजह से उन्हें न आवाज सुनाई दी हो और न दरवाजे पर पड़ती दस्तक ।"

"मैं दरवाजा फिर खटखटाता हूं ।"

इस बार हबीब ने बहुत जोर-जोर से बैडरूम का दरवाजा खटखटाया ।

मुर्दा न बोला ।

उसने दरवाजे का हैंडल ट्राई किया ।

"दरवाजे को तो ताला लगा है ।" - वह उलझनपूर्ण स्वर में बोला ।

"छोड़ो ।" - लोकेश उतावले स्वर में बोला - "तुम्हारे साहब भीतर नहीं हो सकते । हम आते हैं । टाइम क्या हो गया ?" - टाइम के जिक्र पर दीवान साहब और हबीब की

निगाह घड़ियाल की तरफ उठ गई - “लो ? तीन बज गये । चलिये, दीवाना साहब । हबीब, हम तीन दस तक वापिस लौट आयेंगे ।”

घड़ियाल ठीक यही वक्त दिखा रहा था जबकि दीवान साहब और लोकेश प्रेम सागर की बेमानी तलाश के बाद वापिस लौटे ।

“साहब आये ?” - आते ही लोकेश ने हबीब से सवाल किया ।

“नहीं आये ।” - हबीब चिन्तित भाव से बोला - “मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा ।”

“हद हो गई यह तो ।” - दीवान साहब भुनभुनाये - “सत्तर साल उम्र हो गई मेरी । आज तक इतना अभद्र व्यवहार किसी ने नहीं किया था मेरे साथ ।”

“साहब, हमारे साहब कभी ऐसा....”

“क्या कभी ऐसा...”

जिस घड़ी दीवान साहब मालिक का गुस्सा नौकर पर उतार रहे थे, ऐन उस घड़ी लोकेश घड़ियाल की मिनट की सुई को चुपचाप दस मिनट आगे कर रहा था । घड़ियाल में तीन ग्यारह बजे थे, तब वह तीन इक्कीस दिखाने लगा ।

तभी स्टडी में दीपा साही ने कदम रखा ।

“दीपा !” - दीवान साहब हैरानी से बोले - “बेटी तू यहां ।”

दीवान साहब को वहां देखकर दीपा भी वैसे ही हैरान हो रही थी ।

“आप यहां कैसे ?” - वह बोली ।

“प्रेम सागर से मिलने आया था ।”

“प्रेम है कहां ?”

“पता नहीं ।” - जवाब लोकेश ने दिया ।

तभी दीवान साहब को सूझा कि अब ड्राइंगरूम से म्यूजिक की आवाज नहीं आ रही थी ।

“अभी ड्राइंगरूम में तू थी ?”

“जी हां ।”

“तू वहां क्या कर रही है ?”

“लोकेश ने” - वह तिरस्कारपूर्ण भाव से लोकेश की तरफ देखती हुई बोली - “आपको बताया नहीं ?”

“क्या ?”

“कि मैं और प्रेम शादी कर रहे हैं ।”

दीवान साहब सकपकाए । उन्होंने हबीब की तरफ देखा ।

“तुम जाओ ।” - वे बोले ।

बड़े अनिच्छापूर्ण ढंग से हबीब वहां से विदा हुआ ।

“तू प्रेम सागर क साथ कहीं सफर पर जा रही है ?”

“जी हां । पहले बम्बई । फिर दुबई ।”

“शादी करके ?”

“शादी दुबई जाकर करूंगी ।”

“वजह ?”

“यूं ही । प्रेम ऐसा चाहता है ।”

“मुझे तो यह भी नहीं पता था कि तू प्रेम सागर को जानती है ।”
“मैं जानती हूं । मैं उससे प्यार करती हूं ।”
“मैं तो समझता था कि तू लोकेश से प्यार करती थी ।”
“यह भी यही समझता है ।”
“मैं” - लोकेश बड़े व्यग्र भाव से बोला - “सचमुच तुमसे प्यार करता हूं ।”
“मुझे पता है कैसा प्यार करते हो तुम मुझसे । प्रेम ने मुझे बताया था कि आज तुम यहां क्या लेने आए हो ।”
“मैं !” - लोकेश हकबकाया - “यहां कुछ लेने आया हूं ?”
“और नहीं तो क्या तुम...”
“बेटी, उधर मेरी बात सुन ।” - दीवान साहब बीच में बोल पड़े । उन्होंने दीपा की बांह थामी और उसे लोकेश से परे स्टडी के एक कोने की तरफ ले चले ।
उस घड़ी का फायदा उठा कर लोकेश ने बैडरूम के दरवाजे का ताला खोल दिया और चाबी वापिस अपनी जेब में रख ली ।
“आप मुझे रोक नहीं सकते, अंकल ।” - दीपा कह रही थी - “मेरा निश्चय अटल है ।”
“बेटी, मैंने सुना है वो बहुत खराब आदमी है ।”
“आप कभी प्रेम से मिले हैं ?”
“नहीं लेकिन...”
“तो फिर जरूर यह पट्टी आपको लोकेश ने पढाई होगी कि प्रेम खराब आदमी है ।”
“इसने इस बाबत मुझे एक अक्षर भी नहीं कहा ।”
“मैंने” - लोकेश आगे बढ आया - “दीवान साहब के सामने तुम्हारा नाम तक नहीं लिया ।”
“तो फिर क्या किया है तुमने ? प्रेम यहां क्यों नहीं है ?”
“लो ! अगर प्रेम यहां नहीं है तो यह भी मेरी गलती है ।”
“साढे तीन बजने वाले हैं ।” - वह घड़ियाल पर निगाह डालती हुई बोली - “हमें ट्रेन पकड़नी है । इतनी लापरवाही वह नहीं बरत सकता कि वह ऐन मौके पर गायब हो जाए ।”
दीवान साहब ने भी घड़ियाल पर निगाह डाली ।
तीन पच्चीस हुए थे ।
उनके चेहरे पर उलझन के भाव आए । फिर उन्होंने वैसे ही उलझनपूर्ण भाव से लोकेश की तरफ देखा और बोले - “इतना टाइम हो गया !”
लोकेश ने पहले से ही तैयार किया हुआ जवाब जड़ दिया - “वाक में हमें ज्यादा वक्त लग गया होगा, साहब । हमारे में बातें भी तो बहुत गम्भीर हो रही थीं ।”
“हां ।” - दीवान साहब के चेहरे से उलझन के बादल छंट गए - “यही हुआ होगा । कानूनी नुक्ता डिसकस करते वक्त मुझे वक्त का ख्याल नहीं रहता ।”
“प्रेम को किसी ने बैडरूम में देखा ?” - दीपा बोली ।
“वो वहां नहीं है ।” - दीवान साहब बोले - “नौकर ने मेरे सामने कई बार दरवाजा खटखटाया था ।”

“किसी ने बैडरूम के भीतर झांका था ?”
“दरवाजा बन्द था ।”
“क्या पता भीतर उसे कोई दौरा-वौरा पड़ गया हो । वह और कहीं नहीं हो सकता । हमें दरवाजा जबरन खोलना चाहिए ।”
वह बैडरूम के दरवाजे के करीब पहुंची । उसने दो-तीन बार दरवाजे पर दस्तक दी, प्रेम सागर को नाम लेकर पुकारा और फिर दरवाजे का हैंडल ट्राई किया ।
“दरवाजा तो खुला है ।” - वह बोली ।
“नौकर तो कहता था कि बन्द है ।” - दीवान साहब बोले ।
दीपा ने दरवाजे को धक्का देकर खोला ।
फिर एकाएक उसके मुंह से एक तीखी चीख निकल गई । दीवान साहब ने लपक कर उसे सम्भाल न लिया होता तो वह जरूर फर्श पर ढेर हो गई होती ।
लोकेश ने दरवाजा पूरा खोल दिया ।
हबीब दौड़ता हुआ वहां पहुंचा ।
जरूर दीपा की चीख की आवाज उसके कानों में पड़ चुकी थी ।
हबीब घुटनों के बल बैठकर अपने साहब के मृत शरीर का मुआयना करने लगा ।
दीवान साहब दीपा को कुर्सी पर बिठाने की नीयत से परे ले चले ।
उस घड़ी दरवाजे के पास खड़े लोकेश ने चाबी को भीतर की तरफ से दरवाजे के ताले के छेद में डाल दिया ।
अब वह सुरक्षित था ।
सारे कामों को पूरे तसल्लीबख्श ढंग से अंजाम दिया जा चुका था ।
तभी उसने अनुभव किया कि हबीब उठ खड़ा हुआ था और अपलक उसे देख रहा था ।
“साहब मरे पड़े हैं ।” - वह बोला ।
“ओह !” - लोकेश बोला ।
“साहब गोली से मरे हैं ।”
“गोली से !” - दीवान साहब बोले - “फिर तो हमें फौरन पुलिस को फोन करना चाहिए ।”
“मैं करता हूं ।” - लोकेश बोला और लम्बे डग भरता हुआ टेलीफोन की ओर बढा ।
हबीब उसके साथ आगे बढा ।
“यह तुम्हारी हरकत है, भार्गव साहब ।” - हबीब फुंफकारता-सा बोला - “सिर्फ तुम्हारी ! सबसे ज्यादा तुम्हीं चाहते थे प्रेम सागर से पीछा छुड़ाना ।”
लोकेश ने उसकी बातों की ओर ध्यान न दिया ।
वह पुलिस का नम्बर डायल करने लगा ।

***

सिपाहियों के दल-बल के साथ मौकायेवारदात पर जो दो पुलिस अधिकारी पहुंचे, वे इन्स्पेक्टर भूपसिंह और सब-इन्स्पेक्टर महेश्वरी थे । उन्हें सन्देहग्रस्त हबीब दरवाजे पर मिला, चिन्तित एवं गम्भीर दीवान कैलाशनाथ स्टडी मे चहलकदमी करते मिले, रोती-कराहती दीपा साही एक कुर्सी पर बैठी मिली और परेशान हाल लोकेश साइड बोर्ड के साथ लगा खड़ा मिला ।

इन्स्पेक्टर भूपसिंह एक लाल भभूका चेहरे और मोटी तोंद वाला, पुराना तजुर्बेकार पुलसिया था जबकि सब-इन्स्पेक्टर महेश्वरी एक मुश्किल से सत्ताइस-अट्ठाइस साल का, लम्बा ऊंचा खूबसूरत नौजवान था ।

पुलसियों ने सबका परिचय प्राप्त किया । भूपसिंह दीवान कैलाशनाथ से पहले से वाकिफ था ।

"फ्लैट में और कौन है ?" - भूपसिंह ने पूछा ।

"कोई नहीं ।" - उत्तर हबीब ने दिया ।

"कोई पहले रहा हो लेकिन हमारे पहुंचने से पहले चला गया हो ?"

"ऐसा भी कोई नहीं ।"

"हमें सबका बयान दर्ज कराना होगा इसलिए बरायमेहरबानी कोई यहां से रुख्सत न हो ।"

सबके सिर सहमति में हिले ।

"किसी ने किसी चीज को छेड़ा तो नहीं ?"

सबके सिर इनकार मे हिले ।

"लाश कहां है ?"

हबीब ने बैडरूम के बन्द दरवाजे की तरफ इशारा किया ।

"तुम घर के नौकर हो ?" - भूपसिंह ने हबीब से पूछा ।

"जी हां ।" - हबीब बोला ।

"इन साहबान को कहीं और ले जाकर बिठाओ और खुद अपने ठीये पर पहुंचो ।"

हबीब ने सहमति में सिर हिलाया ।

सब लोग वहां से विदा हो गये तो भूपसिंह के इशारे पर एक सिपाही ने आगे बढकर बैडरूम का दरवाजा खोला ।

लाश का और मौकाएवारदात का बड़ा बारीक मुआयना शुरू हुआ ।

रिवाल्वर की नाल में एक पेन्सिल डालकर उसे उठाया गया और मेज पर रख दिया गया ।

लाश की जेबें खाली कर ली गई ।

फिर लाश को वहां से उठवाकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया गया ।

अन्त में गवाहों के बयानात शुरू हुए ।

बयान खत्म होते-होते सवा पांच बज गए । उसके बाद भी किसी को वहां से जाने की इजाजत नहीं दी गई । सब ड्राईंग रूम में चले गये और बड़े अनिच्छापूर्ण ढंग से हबीब की बनाई चाय की चुस्कियां लेने लगे ।

दोनों पुलिस अधिकारी फिर स्टडी में व्यस्त हो गये ।

स्टडी की विशाल मेज को सरका कर कमरे के बीच में कर दिया गया था । उसके एक कोने में रिवाल्वर, हत्प्राण की टूटी हुई घड़ी और उसकी जेब से निकली चीजों का ढेर सा लगा हुआ था । दूसरे कोने में मेज की दराजों से बरामद किये गये कागजात वगैरह पड़े थे जिनका अध्ययन भूपसिंह कर रहा था । उसके चेहरे पर हैरानी के भाव थे और ज्यों-ज्यों वह कागजात पढता जाता था, हैरानी के भाव और गहरे होते जा रहे थे ।

महेश्वरी बैडरूम की चौखट के करीब खड़ा था और बड़ी तल्लीनता से उस कुर्सी का मुआयना कर रहा था जो हत्प्राण की लाश के करीब पड़ी मिली थी ।

कुर्सी के जिस भाग से टकरा कर प्रेम सागर की घड़ी टूटी थी, उसका तो उसने जेब से मैग्नीफाइंग ग्लास निकाल कर मुआयना किया ।

वह मेज के करीब पहुंचा । उसने वहां पड़े सामान में से प्रेम सागर की घड़ी को उठा कर थोड़ी देर उसे भी गौर से देखा और फिर उसे वापिस रख दिया ।

फिर वह अपने उच्चाधिकारी के समीप एक कुर्सी घसीट कर बैठ गया ।

कुछ क्षण बाद भूपसिंह ने अपने हाथ में थमी प्रेम सागर की डायरी बाकी कागजात के ऊपर फेंक दी और फिर अपने मातहत सब-इन्स्पेक्टर की तरफ घूमा ।

"हमारे यहां मरने वाले की बाबत बुरा-भला कहने का रिवाज नहीं है ।" - भूपसिंह बोला - "लेकिन इस प्रेम सागर के घोड़े के बारे में इतना तो कहना ही होगा कि अगर यह आदमी जिन्दा रहता और इसके ये कागजात इसकी जिन्दगी में हमारे हाथ लगे होते तो यह कम से कम दस साल की सजा पाता । हरामजादे ने बुर्दाफरोशी की भी यूं एकाउण्ट बुक्स रखी हुई हैं जैसे मवेशियों का व्यापार करता रहा हो । किस लड़की को फंसाने में उसका अपना कितना खर्चा आया, उसको बेच कर कितनी रकम मिली, खर्चे निकाल कर क्या मुनाफा हुआ, खुद उसने उस बिकने वाली लड़की के साथ कितने दिन ऐश की, सब का सब दर्ज है उसके इन कागजों में । साले ने अपने हाथों बरबाद हुई हर लड़की की तस्वीर तक रखी हुई है अपने रिकार्ड में ।"

"ऐसे आदमी ने आत्महत्या क्यों की ?" - महेश्वरी बोला ।

"अपनी करतूतों से शर्मिन्दा होकर !"

"सर, आप यह मुझसे पूछ रहे हैं या मुझे बता रहे हैं ?"

भूप सिंह मुस्कराया ।

"जो जाहिर है, वो तो यही है ।" - भूपसिंह बोला - "मौके की तफ्तीश तो यही बताती है कि यह आत्महत्या का केस है । मिसाल के तौर पर रिवाल्वर को लो । नौकर के बयान से इस बात की तसदीक होती है कि रिवाल्वर मरने वाले की ही मिल्कियत है । दूसरे उसी की उंगलियों के निशान रिवाल्वर पर पाये गये हैं । तीसरे गोली खाकर नीचे गिरते समय उसकी घड़ी वाली कलाई करीब पड़ी कुर्सी से टकराई जिसकी वजह से घड़ी टूट गयी और तीन पांच पर रुक गयी । चौथे, तीन जनों की मौजूदगी में जब लाश बरामद हुई, तब बैडरूम का दरवाजा खुला था और चाबी ताले में अन्दर की तरफ से लगी हुई थी । फिर भी उससे कोई बीस मिनट पहले दरवाजे को मजबूती से बन्द पाया गया था । यह हमने देखा ही है कि दरवाजे के अलावा बैडरूम में दाखिल होने का और कोई रास्ता नहीं है । इसलिए सिर्फ हत्प्राण ही दरवाजे को भीतर से बन्द कर सकता था या खोल सकता था क्योंकि सिर्फ वही बैडरूम के भीतर था ।"

"सर" - महेश्वरी संकोचपूर्ण स्वर में बोला - "मे आई स्पकी फ्रीली ।"

"हां, हां । जो जी में आये कहो ।"

"पहले तो मैं यही कहना चाहूंगा कि रिवाल्वर पर साइलेंसर किस लिए ? नौकर कहता है कि रिवाल्वर इसी मेज के दराज में मौजूद होती थी, फिर उसे लेकर बैडरूम में जाने की क्या जरूरत थी ? उसने यहीं क्यों न अपने आपको शूट कर लिया ? फिर जरा वक्त पर गौर फरमाइये । तीन बजने में पांच मिनट पर वह आखिरी बार दीपा साही द्वारा जीवित देखा गया था । उस वक्त तक वह लोकेश भार्गव से और कुछ क्षण बाद दीवान कैलाश नाथ से फोन पर बात कर चुका था और दोनों उसके फ्लैट पर किसी भी क्षण

अपेक्षित थे । उनसे तनहाई में बात करने की खातिर ही वह दीपा साही को ड्राईंगरूम में भेज देता है । यानी कि ज्यों ही वह यहां स्टडी में अपने आपको अकेला पाता है, वह दराज में से रिवाल्वर निकालता है, बैडरूम में जाता है और दरवाजे को भीतर से बन्द कर लेता है । अब सैकेन्डों में तो उसका आत्महत्या का इरादा बन नहीं गया होगा क्योंकि तब उसने मुलाकात के लिए लोगों को अपने फ्लैट पर न तलब किया होता ।"

"आदमी के दिमाग का क्या पता लगता है । इरादा सैकेण्डों में भी बन सकता है ।"

"सैकेण्डों में बनने वाले इरादे को अंजाम भी तो, सर, सैकेण्डों में ही दिया गया होना चाहिए था ।"

"यानी कि उसने यहीं मेज के सामने बैठे-बैठे अपने आपको शूट कर लिया होना था ।"

"जी हां । क्योंकि रिवाल्वर यहीं उपलब्ध थी । रिवाल्वर अगर बैडरूम में होती तो कोई बात थी । बैडरूम का रिश्ता आराम से, इतमीनान से होता है । अगर उसने पलंग पर लेट कर अपने आपको शूट किया होता तो भी उसका आत्महत्या के लिए बैडरूम में जाना समझ में आता था लेकिन वह तो बैडरूम की चौखट से जरा भीतर फर्श पर पड़ा मिला । सर, अगर आप इन बातों पर गौर फरमायें तो जान देने के लिए उसका बैडरूम में जाना तर्क संगत नहीं लगता ।"

"शायद पहले वह चोरी छुपे सुनना चाहता हो कि जिन दो आदमियों को उसने अपने फ्लैट पर बुलाया हुआ था, वे आपस में क्या बातें करते थे । उस क्षण आत्महत्या का इरादा तो उसके जेहन में रहा होगा लेकिन अभी वह किसी और घटना के घटित होने की प्रतीक्षा कर रहा होगा ।"

"यानी कि वह बिना दीवान कैलाशनाथ और लोकेश भार्गव की जानकारी में आये, बिना उन पर यह जाहिर किये कि वह फ्लैट में मौजूद था, उनकी बातें सुनना चाहता था ?"

"हां । इसलिए उसने दरवाजे को भीतर से ताला लगाया हुआ था और इसीलिये नौकर द्वारा दरवाजा खटखटाया जाने पर उसने उसे कोई जवाब नहीं दिया था । वह चाहता था कि हर कोई यही समझे वह फ्लैट में नहीं था । उसकी लाश के करीब जो कुर्सी पड़ी मिली थी उसकी स्वभाविक जगह वह नहीं है । वह कुर्सी जरूर उसने दरवाजे के पास इसलिए रखी थी ताकि वह आराम से उस पर बैठ कर, दरवाजे के साथ कान लगाकर बाहर से आती आवाजें सुन सके । यह बात जंचती है तुम्हें ?"

महेश्वरी ने हिचकिचाते हुए सहमति में सिर हिलाया ।

"बहरहाल दीवान कैलाश नाथ और लोकेश भार्गव यहां पहुंचते हैं, बैडरूम में छुपा बैठा प्रेम सागर उनकी बातें सुनता है और फिर अपनी जान लेने का निश्चय कर लेता है । तीन बजे वे दोनों यहां से विदा हो जाते हैं । तीन बजकर पांच मिनट पर प्रेम सागर अपने आपको शूट कर लेता है । टूटकर तीन पांच पर रुक गई उसकी कलाई घड़ी इस बात का सबूत है ।"

"सर, जब उसने निश्चय कर ही लिया था तो फिर पांच मिनट इन्तजार करने का क्या मतलब ? उसने दीवान साहब और लोकेश भार्गव के जाते ही अपने आपको शूट क्यों नहीं किया ?"

"क्योंकि बीच में एक और व्यवधान आ गया था ।" - भूपसिंह विजेता के से स्वर में

बोला ।

"क्या ?"

"दीपा साही । लड़की के बयान को याद करो । वह भी स्टडी में आई थी और उसने खासतौर से टाइम नोट किया था । तीन बजकर तीन मिनट । लड़की के भी चले जाने के बाद प्रेम सागर ने अपने आपको शूट किया और तब तक तीन बजकर पांच मिनट हो चुके थे ।"

"सर, दीवान साहब और लोकेश भार्गव के बयानात हमारे सामने हैं । यहां उनके बीच हुआ वार्तालाप हमारे पास दर्ज है । उसमें तो ऐसी कोई बात नहीं जो प्रेम सागर को आत्महत्या के लिए प्रेरित कर पाती ।"

"जरूर वो दोनों कुछ छिपा रहे होंगे ।"

"दीवान कैलाश नाथ से तो ऐसी कोई उम्मीद नहीं की जा सकती, सर । ऊपर से वो तो प्रेम सागर को ठीक से जानते तक नहीं ।"

"लेकिन लोकेश भार्गव को तो खूब जानते हैं । क्या पता वे लोकेश भार्गव की खातिर कुछ छुपा रहे हों ।"

महेश्वरी के चेहरे पर आश्वासन के भाव न आए ।

"महेश्वरी ।" - भूपसिंह उसे घूरता हुआ बोला - "तुम्हारे पास आत्महत्या की थ्योरी के खिलाफ कुछ है ?"

"सर" - महेश्वरी कठिन स्वर में बोला - "पहली बात तो उद्देश्य ही है । आत्महत्या का उद्देश्य तो दिखाई देता नहीं । रुपए पैसे की तो मरने वाले को कोई तंगी नहीं थी, तंगी क्या, रुपए पैसे से तो वह लदा-फंदा हुआ था । ऊपर से वह एक परी जैसी खूबसूरत लड़की के साथ तफरीह के लिए रवाना हो रहा था । यह तो कोई वक्त न हुआ आत्महत्या कर लेने का । यह बात तो हरगिज भी हजम नहीं होने वाली कि उसने अपनी करतूतों से शर्मिंदा होकर आत्महत्या कर ली हो । जो आदमी एक दर्जन लड़कियों का खाना खराब कर चुका हो और अभी तेरहवीं को साथ लेकर सफर पर रवाना होने वाला हो, उसकी करतूतें उसकी अन्तरात्मा पर ऐसा बोझ हरगिज नहीं बन सकतीं कि वह एकाएक आत्महत्या कर ले । औरतें खराब करना, उन्हें अरब देशों में ले जाकर बेचना, उसका बिजनेस था और उसकी अपनी डायरी बताती है कि वह बिजनेस उसे पसन्द था । पसन्द क्या, उसे तो अपनी हरामजदगियों पर भी अभिमान था । अपनी डायरी में तो वह अपनी हर नई करतूत पर साफ-साफ खुद अपनी पीठ ठोकता मालूम होता है । नहीं साहब, मरने वाला अपनी करतूतों से शर्मिंदा होकर आत्महत्या कर लेने वाला आदमी तो हरगिज हरगिज भी नहीं था ।"

"कई बार" - भूपसिंह बोला - "उद्देश्य पहली निगाह में दिखाई नहीं देता । लेकिन होता तो है ही । और धीरे-धीरे समझ में आता है ।"

"कबूल । होगा कोई उद्देश्य । यह भी कबूल कि दीवान साहब और लोकेश भार्गव कोई बात हमसे छुपा रहे हैं । अब आप जरा यह सोचिए, सर, कि क्या आपके जेहन पर मरने वाले का कोई मेहरबान, रहमदिल, दूसरे का ख्याल करने वाले शख्स जैसा अक्स उभरता है ? क्या आप प्रेम सागर को एक भ्रद पुरुष करार दे सकते हैं ?"

"नहीं ।"

"लेकिन आत्महत्या के मामले में उसने अपने आपको भद्र-पुरुष, टाप का

जन्टलमैन, साबित करने में कोई कसर न छोड़ी ।"

"मतलब ?"

"पहले तो उसने इस बात में भारी शराफत दिखाई कि उसने हर किसी के यहां से चले जाने का इन्तजार किया । फिर रिवाल्वर में साइलेन्सर फिट करने की शराफत दिखाई ताकि कोई गोली की आवाज से डिस्टर्ब न हो । और फिर आखिर में तो उसने कमाल ही कर दिया । जिस दरवाजे को वह ताला लगाकर मजबूती से भीतर से बन्द किये बैठा था, अपने आपको शूट करने से पहले उसने उसका ताला खोल दिया ताकि लाश की बरामदी के लिए बैडरूम का दरवाजा न तोड़ना पड़े । क्या प्रेम सागर ऐसा भद्र-पुरुष हो सकता था जिसे न सिर्फ लोगों की असुविधा का ख्याल रहा हो, बल्कि दरवाजे को पहुंचने वाले सम्भावित नुकसान का भी ख्याल रहा हो ! जो शख्स उम्र भर लोगों के लिए असुविधायें ही पैदा करता रहा हो, वह एकाएक ऐसा नेकनीयत इन्सान कैसे बन गया ?"

"लेकिन ताला खोला तो उसी ने ?"

"कौन कहता है ?"

"वो चाबी कहती है जो ताले में भीतर की तरफ से लगी हुई थी ।"

"क्या ताला बाहर से खोल कर चाबी भीतर की तरफ नहीं लगाई जा सकती ?"

इन्स्पेक्टर भूप सिंह तुरन्त कुछ न बोला । वह हकबकाया-सा अपने मातहत का मुंह देखने लगा ।

"तुम यह कहना चाहते हो" - फिर वह धीरे से बोला - "कि यह हत्या का केस है जिसे आत्महत्या का लिबास पहनाने की कोशिश की जा रही है ।"

"जी हां । और अभी एक बात और भी है जो इसी हकीकत की तरफ इशारा करती है ।"

"वह क्या ?"

"जरा बैडरूम में आइये ।"

दोनों बैडरूम में पहुंचे ।

"इस कुर्सी को देखिए ।" - महेश्वरी कुर्सी को उठा कर उसका वह भाग अपने उच्चाधिकारी को दिखाने लगा जहां कि घड़ी टकराई थी - "हत्प्राण की कलाई पर बंधी घड़ी ऐन इस जगह टकराई थी । घड़ी इतनी जोर से टकराई थी कि उसका शीशा चूर-चूर हो गया था और शीशे का एक बारीक-सा टुकड़ा, देखिये, यहां लकड़ी में धंस गया है ।"

"गिरते वक्त हत्प्राण की कलाई इतनी जोर से कुर्सी से टकरा सकती है कि..."

"यकीनन टकरा सकती है । मुझे इससे कतई एतराज नहीं । बल्कि इससे ज्यादा जोर से टकरा सकती है । यह देखिये, घड़ी की साइड में जो सुइयों का गोल बटन होता है, उसका निशान तक लकड़ी में बन गया है जो कि यही साबित करता है कि घड़ी कुर्सी से बहुत ज्यादा जोर से टकराई थी । लेकिन" - महेश्वरी का स्वर एकाएक बहुत नाटकीय हो उठा - "टकराते वक्त घड़ी के जिस बटन ने सख्त लकड़ी पर अपना निशान छोड़ा, उसने मरने वाले की उस कलाई पर कोई निशान न छोड़ा जिस पर कि घड़ी बंधी हुई थी । मैंने टूटी घड़ी उतारते वक्त मरने वाले की कलाई को अच्छी तरह से देखा था । उस पर इस बटन के दबाव से बना कोई निशान नहीं था । ऐसा एक ही सूरत में हो सकता है ।"

"कि जब घड़ी टूटी थी" - भूप सिंह के मुंह से निकला - "वह हत्प्राण की कलाई पर नहीं बंधी हुई थी ।"

"ऐग्जैक्टली, सर ! घड़ी पहले तोड़ी गयी थी और फिर मरने वाले की कलाई पर बांधी गयी थी ।"

"ओह !"

"इस बात का एक सबूत और भी है कि घड़ी टूटने के बाद लाश की कलाई पर बांधी गयी थी ।"

"वो क्या ?"

"साधारणतया कलाई पर बंधी घड़ी के डायल का रुख इस प्रकार होता है कि बारह का अंक ऊपर होता है लेकिन जब मरने वाले की कलाई पर से घड़ी उतारी गयी थी तो छः का अंक ऊपर था । यानी कि कलाई पर घड़ी उलटी लगी हुई थी और यह तथ्य हमारा फोटोग्राफर अपने कैमरे द्वारा रिकार्ड भी कर चुका है ।"

"हत्यारे ने" - भपूसिंह बड़बड़ाया - "हड़बड़ी में लाश की कलाई पर घड़ी उलटी पहना दी थी ?"

"जी हां !"

"यह हत्या का केस है !"

"जिसे कि आत्महत्या का केस जाहिर करने की कोशिश की जा रही है ।"

"मैं बूढा हो गया हूं !" - भूपसिंह बड़बड़ाया - "मैं ज्यादा ही बूढा हो गया हूं ।" - फिर वह महेश्वरी की तरफ घूमा - "शाबाश ! मुझे तुम पर अभिमान है । तुम बहुत तरक्की करोगे पुलिस के महकमे में ।"

महेश्वरी शर्माया । उसने कुर्सी वापिस फर्श पर रख दी ।

"अगर यह कत्ल का मामला है" - भूपसिंह बोला - "तो हर किसी का बयान फिर से लेना होगा ।"

"जी हां ।"

तभी स्टडी में कैलाश नाथ ने कदम रखा ।

"इन्स्पेक्टर साहब" - दीवान साहब भुनभुनाये - "मैं बहुत बिजी आदमी हूं । मैं यहां इतनी देर रुका नहीं रह सकता ।"

"हम खामखाह आपको रोके रहना चाहते भी नहीं, जनाब" - भूप सिंह गम्भीरता से बोला - "लेकिन हालात ने ऐसी करवट बदली है कि आपका अभी और रुकना जरूरी हो गया है । मुझे फिर से आपका बयान लेना होगा ।"

"फिर से ? हद हो गई । दो घण्टे से तो पहले आप हमें नचा रहे हैं और अभी आपको फिर से बयान लेने जरूरी लग रहे हैं । अब क्या नई करवट बदली है हालात ने ?"

"दीवान साहब, अब यह आत्महत्या का नहीं हत्या का केस साबित हो रहा है ।"

"क्या ?"

"जी हां । प्रेम सागर ने खुद अपने आपको गोली नहीं मारी । उसे शूट किया गया है ।"

"कि-किसने-किसने..."

"यह जानना अभी बाकी है ।"

"मेरा बयान फिर से लेने से आपको क्या हासिल होगा ? मैं जो जानता था, आपको बता चुका हूं । मेरा तो किसी भी बात से कोई वास्ता नहीं । मरने वाले के बारे में मैंने सुना काफी कुछ हुआ था लेकिन उससे मिलने का इत्तफाक कभी नहीं हुआ था । मैंने यहां सिर्फ

लोकेश की दरख्वास्त पर आना कबूल किया था । सच पूछिए तो मुझे तो यह भी नहीं मालूम - अभी भी नहीं मालूम - कि मेरी यहां क्या जरूरत थी । लोकेश ने मुझे कहा कि अगर प्रेम सागर लोकेश का हवाला देकर मुझे यहां आने को कहे तो मैं आ जाऊं । मैं आ गया । अब यह झमेला..”

“आप दीपा साही से वाकिफ हैं ?”

“हां ।”

“आपको मालूम है दीपा आज शाम चार बजे की गाड़ी से प्रेम सागर के साथ बम्बई रवाना हो रही थी । उससे शादी बनाने की नीयत से ।”

“पहले नहीं मालूम था लेकिन यहां आने के बाद मालूम हुआ था ।”

“यह सुनकर आप पर क्या प्रतिक्रिया हुई थी ?”

“पहले मुझे हैरानी हुई थी । फिर मुझे बेचारी लड़की की फिक्र लग गयी थी ।”

“आपने उसे समझाने की कोशिश की थी ?”

“तब तक समझाने की स्टेज गुजर चुकी थी । और फिर और थोड़ी देर बाद तो लाश ही बरामद हो गयी थी ।”

“आप जानते हैं कि लोकेश के यहां आने के पीछे जो उद्देश्य था, वह दीपा की रिहाई ही था । प्रेम सागर ने लोकेश से वादा किया था कि अगर लोकेश उसे चार लाख रुपया नकद अदा करेगा तो वह हमेशा के लिए दीपा का पीछा छोड़ देगा ।”

“मुझे ऐसी कोई बात नहीं मालूम थी । मुझे अब भी विश्वास नहीं होता ।”

“आपको यह बात अजीब नहीं लगी थी कि प्रेम सागर आपको यहां बुलाकर खुद गायब हो गया था ?”

“लगी थी । लेकिन मैंने यही समझा था कि शायद लोकेश मेरे से पहले पहुंच गया था और वह लोकेश के साथ थोड़ी देर के लिये कहीं चला गया था । लेकिन हकीकतन यह बात नहीं निकली थी । लोकेश तो मेरे बाद यहां पहुंचा था ।”

“आई सी ! दीवान साहब, जरा याद कीजिये । लाश बरामद हो जाने के बाद यह बात सबसे पहले किस की निगाह में आयी थी कि चाबी बैडरूम के दरवाजे के ताले में अन्दर की तरफ से लगी हुई थी ?”

“उस नौकर की, क्या नाम है उसका ?”

“हबीब !”

“हां, हबीब । मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं दीपा को सम्भाल रहा था, लोकेश आप लोगों को फोन कर रहा था, उस घड़ी उस नौकर ने... हबीब ने... ही देखी थी चाबी ।”

“फिलहाल शुक्रिया, दीवान साहब ! मैं सिर्फ एक बार और तकलीफ दूंगा आपको । तब तक ड्राईंगरूम में ही ठहरियेगा ।”

“आप लोग कत्ल का शक मेरे पर तो नहीं कर रहे ?”

“फिलहाल मैं सिर्फ तफ्तीश कर रहा हूं ।”

“मालूम हो कि मैं यहां किसी भी क्षण अकेला नहीं था । हमेशा कोई न कोई मेरे पास था ।”

“मुझे बखूबी मालूम है । आप निश्चिन्त रहिये । मुझे आपकी एलीबाई पर पूरा विश्वास है । अब आप वापिस ड्राईंग रूम में तशरीफ ले जाइये ।”

दीवान साहब वहां से विदा हो गये ।

"चाबी हत्या के बाद से ही हत्यारे के पास रही होगी ।" - भूप सिंह बोला - "उसने बैडरूम को बाहर से लाक किया हुआ होगा और लोग समझते रहे होंगे कि दरवाजा भीतर से खुद प्रेम सागर ने बन्द किया हुआ था । इसका यही मलतब हो सकता है कि हत्यारा नहीं चाहता था कि किसी खास वक्त से पहले लाश बरामद हो ।"

"करेक्ट, सर !" - महेश्वरी बोला ।

"और हत्यारा है भी यकीनी तौर पर यहां मौजूद चार जनों में से एक ।"

"कौन ?"

"देखो, दीवान साहब और लोकेश के दीवान साहब के आफिस के लिये यहां से रवाना होने के वक्त तो दरवाजा पहले ही बन्द था । इसका मतलब है कि कत्ल उनके आगमन से पहले हो चुका था । इस लिहाज से ये दो तो बरी हो गये ।"

"बाकी बचे हबीब और दीपा ।"

"फ्लैट इतना बड़ा है । इन दोनों में से कोई भी एक दूसरे की जानकारी में आये बिना यह काम कर सकता था ।"

"लड़की नहीं । वो तो उस घड़ी तक प्रेम सागर के नाम की माला जप रही थी और उसके साथ अपना नया संसार बसाने जा रही थी । उस घड़ी तक तो प्रेम सागर की हकीकत भी उस पर नहीं खुली थी । खुल चुकी होती तो यह मान लिया जाता कि उसने गुस्से में आकर एक फरेबी, एक धोखेबाज, को शूट कर दिया था ।"

"फिर तो बाकी वो नौकर ही बचा ।"

"जो कि एक सजायाफ्ता मुजरिम है । करोल बाग की एक बैंक डकैती में वह फंसा था और छ: साल के लिए नपा था । मैंने ही उसे सजा दिलवाई थी ।"

"सिर्फ इसी बिना पर तो उसे कातिल करार नहीं दिया जा सकता, सर । इतनी अक्ल तो उसे भी होगी कि उस पर शक किया जाना लाजमी था ।"

"अगर इसे आत्महत्या का केस मान लिया जाता तो फिर शक कैसे हो जाता उस पर ? चालाक तो वो है । तजुर्बेकार भी है । वह हत्या को आत्महत्या बनाने का खेल बखूबी खेल सकता है ।"

"सर, अगर बात हत्या को आत्महत्या बनाने की ही थी तो उसने मरने वाले की कलाई घड़ी क्यों तोड़ी ? उसने यह जाहिर करने के लिए इतनी जहमत क्यों गवारा की कि हत्या तीन-पांच पर हुई थी ।"

"इसी से तो उसकी और भी ज्यादा चालाकी जाहिर होती है । उसने अपने बचाव का दोहरा इन्तजाम किया था । उसने ऐसा इसलिए किया था कि अगर आत्महत्या की थ्योरी फेल हो जाती तो वक्त में की गई गड़बड़ कत्ल का इलजाम किसी और के सिर मढ देती ।"

"और कौन ?"

"लोकेश भार्गव । यह स्थापित हो चुका है कि हबीब को मालूम था कि लोकेश किसी भी क्षण वहां पहुंचने वाला था ।"

"लेकिन, सर । लोकेश यहां अकेला थोड़े ही आ रहा था । उसके साथ तो दीवाना साहब भी आ रहे थे ।"

"दीवान साहब के आगमन की बाबत हबीब को नहीं मालूम था । उसे सिर्फ लोकेश के आगमन की खबर थी । उसके साहब ने उसे यह तक बताया था कि लोकेश उससे अकेले में

मिलना चाहता था और चाहता था कि उसके आगमन की किसी को - हबीब को भी - खबर न हो ।"

"आप ठीक कह रहे हैं ।"

"उसे बुलाते हैं ।"

भूपसिंह ने हबीब को बुलाने वाली घन्टी का पुश दबाया ।

दोनों प्रतीक्षा करने लगे ।

हबीब वहां न पहुंचा ।

भूपसिंह ने फिर पुश दबाया ।

हबीब फिर भी वहां न पहुंचा ।

"पता नहीं कम्बख्त फ्लैट से कहीं खिसक गया है या घन्टी नहीं बज रही ।"

"मैं देखकर आता हूं ।" - महेश्वरी बोला ।

"जरा ठहरो ।"

भूपसिंह उस स्थान को देख रहा था जहां घन्टी की तार कालीन के नीचे दाखिल हो रही थी ।

उसने झुककर कालीन का वह सिरा उठाया ।

"घन्टी कैसे बजेगी ?" - भूपसिंह नीचे बैठकर तार का मुआयना करता हुआ बोला - "तार में तो ब्रेक है ।"

महेश्वरी भी उसके करीब उकड़ू बैठ गया ।

"सिरों पर तारें चमक रहीं हैं ।" - महेश्वरी बोला - "तार हाल ही में काटी गई मालूम होती है ।"

"हां ।" - भूपसिंह बोला - "जरूर किसी ने करेन्ट आफ किए बना तारों को दोबारा जोड़ने की कोशिश की थी जिसकी वजह से जोड़ मजबूत न बन सका । हमने जब मेज सरकाई थी तो तार खिंची होगी और जोड़ खुल गया होगा ।"

"ऐग्जेक्टली, सर ।"

"यह तार जरूर हत्यारे ने काटी होगी ताकि प्रेम सागर घन्टी बजाकर हबीब को तलब न कर सके ।"

"फिर तो सर, यह भी मुमकिन है कि हकीकतन प्रेम सागर का कत्ल यहां हुआ हो और लाश को बाद में ले जाकर बैडरूम के फर्श पर डाल दिया गया हो ।"

भूपसिंह सकपकाया । फिर उसने सहमति में सिर हिलाया और बड़ी बारीकी से आसपास का मुआयना करने लगा ।

"कहीं कोई निशान नहीं ।" - वह हड़बड़ाया - "खून का कोई हल्का-सा धब्बा तक नहीं ।"

"सर, जरा यह देखिए ।"

भूपसिंह ने सिर उठाया । उसने देखा महेश्वरी कमरे के मध्य में खड़ा था और फर्श पर बिछे मोटे कालीन के एक स्थान पर इशारा कर रहा था ।

भूपसिंह उसके समीप पहुंचा ।

"कत्ल निश्चय ही घन्टी के करीब हुआ था ।" - महेश्वरी तनिक उत्तेजित स्वर में बोला - "फिर हत्यारा लाश को उठाकर नहीं बल्किर घसीट कर बैडरूम तक लेकर गया था । यह देखिए, कालीन पर हत्प्राण के एड़ियों की घिसटने से बनी हल्की-सी लकीर

साफ दिखाई दे रही है । बेशुमार कदमों के इस पर पड़ चुके होने के वजह से लकीर कहीं-कहीं से गायब है लेकिन जहां-जहां है वहां से साफ मालूम हो रहा है कि लकीर मेज की असली पोजीशन से बैडरूम के दरवाजे की तरफ खिंची है ।"

"हां" - भूपसिंह बोला - "अब तो यह जरूर ही हबीब का काम है । कत्ल किसी और ने किया होता तो उसने लाश को मेज पर ही पड़ा रहने दिया होता । लेकिन हबीब को मालूम था कि कुछ ही क्षणों में लोकेश यहां पहुंचने वाला था इसलिए उसने लाश बैडरूम में छुपा दी और घड़ी तोड़कर उस पर कत्ल का टाइम ऐसे रिकार्ड कर दिया कि इल्जाम लोकेश पर ठुक सके ।"

महेश्वरी खामोश था । प्रत्यक्षत: वह अपने बॉस की थ्योरी से आश्वस्त नहीं लग रहा था । वह कुछ और ही सोच रहा था ।

"हबीब को बुलाओ ।" - भूपसिंह ने आदेश दिया ।

"यस, सर ।"

महेश्वरी हबीब को बुलाने चला गया ।

भूपसिंह ने कालीन को फिर इस प्रकार सीधा कर दिया कि कटी हुई तार के दोनों सिरे कालीन के नीचे छुप गए ।

भूपसिंह कई क्षण अपलक हबीब को देखता रहा ।

हबीब विचलित होकर परे देखने लगा और पहलू बदलने लगा ।

"हबीब" - अन्त में भूपसिंह बोला - "तूने मुझे पहचाना नहीं या तू सोच रहा है कि मैंने तुझे नहीं पहचाना होगा ?"

हबीब ने उत्तर न दिया । उसने अपने सूखे होंठों पर जुबान फेरी ।

"मैंने तुझे करोल बाग की बैंक डकैती के केस में छ: साल के लिए नपवाया था । तब मैं करोल बाग थाने में सब-इंस्पेक्टर होता था । कुछ याद आया ?"

"आया ।" - वह धीरे से बोला ।

"अब कैसी कट रही है ?"

"ठीक ।"

"आगे कैसी कटेगी ?"

"पता नहीं ।"

"क्यों ? अपने मालिक का खून करके कोई माल पानी पीटने का मौका नहीं लगा, इसलिए ?"

"आप गलत सोच रहे हैं ।" - वह तीखे स्वर में बोला - "मैंने सागर साहब का खून नहीं किया । उनका खून भला मैं कैसे कर सकता था ? उनका खून करने से बेहतर तो मैं खुद अपना गला काट लेना समझता ।"

"मुझे पट्टी पढाता है, साले !"

हबीब खामोश रहा । एकाएक उसके चेहरे पर हवाईयां उड़ने लगी थीं ।

"तेरे साहब ने तुझे बताया था कि यहां दीवान कैलाश नाथ भी आने वाले थे ?"

"नहीं । मुझे उन्होंने यही कहा था कि भार्गव साहब अकेले आ रहे थे । मुझे यह बात बड़ी अजीब लगी थी ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि अभी दो दिन पहले भार्गव साहब और मेरे साहब की बड़ी भयंकर तकरार

हुई थी । उस तकरार की रूह में भार्गव साहब का यहां आना या मेरे साहब का उन्हें यहां आने देना दोनों ही बातें मुझे अजीब लगी थीं ।"

"सागर साहब ने भार्गव साहब के आगमन की कोई वजह भी तो बताई होगी !"

"नहीं । कोई वजह नहीं बताई थी ।"

"तेरे साहब ने तुझे यह नहीं बताया था कि भार्गव साहब चार लाख रुपया लेकर आ रहे थे जिसके बदले में उसने दीपा साही को अपने साथ बम्बई ले जाने का इरादा छोड़ देना था ? हबीब !" - भूप सिंह आंखें निकाल कर बोला - "मेरे साथ झूठ न बोलना । झूठ बोलेगा तो पछतायेगा ।"

"ऐसी एक रकम का जिक्र आया तो था ।" - हबीब दबे स्वर में बोला ।

"तुझे मालूम था कि वो रकम किस काम के लिए थी ।"

"हां । सच बात यह है कि साहब ने मुझे खुद बुला कर बताया था कि अब उनका बम्बई जाना जरूरी नहीं रह जाने वाला था ।"

"और क्या कहा था तेरे साहब ने ?"

"उन्होंने कहा था कि उन्हें भार्गव साहब का कोई भरोसा नहीं था । उन्हें यह बात भी शक में डाल रही थी कि भार्गव साहब यह क्यों चाहते थे कि किसी को उनके आगमन की खबर न लगे । इसीलिए उन्होंने मुझे वार्निंग दी थी कि मैं सावधान रहूं, अगर भार्गव साहब कोई शरारत करें तो उनकी घण्टी की आवाज सुनकर मैं एक सैकेण्ड भी बरबाद किए बिना दौड़ा चला आऊं । लेकिन" - एकाएक हबीब का गला भर आया - "घण्टी तो बजी ही नहीं । साहब को मौका ही नहीं मिला घण्टी बजाने का ।"

"तेरे ख्याल से पहले ही किसी ने सागर साहब का खून कर दिया ।"

"हां ।"

"किसी ने या खुद तूने ?"

"इन्स्पेक्टर साहब, आप ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि मेरे और सागर साहब के जो असली ताल्लुकात थे, उनकी बाबत आप कुछ जानते नहीं । मैं साहब का सिर्फ नौकर ही नहीं था, उनका दोस्त था, बड़ा भाई था । यहां सिर्फ लोगों की निगाह में मेरा दर्जा एक नौकर जैसा था । खुद सागर साहब की निगाह में नहीं । रुपये पैसे के मामले में भी वो मुझ पर हमेशा हद से ज्यादा मेहरबान रहे थे । अपने ऐसे मोहसिन के कत्ल का तो मैं सपने में ख्याल नहीं कर सकता था । आपका मेरे खिलाफ जो वाहिद इलजाम है, वो यही तो है न कि मैं एक सजायाफ्ता मुजरिम हूं । लेकिन क्या एक बार जेल हो जाने भर से ही..."

"तुम खामखाह जज्बाती हो रहे हो, हबीब ।" - महेश्वरी बोला - "हम सिर्फ पूछताछ कर रहे हैं जो कि हमारी ड्यूटी है ।"

"पूछताछ भी तो सही आदमी से कीजिए, मालिक ।" - हबीब बोला ।

"सही आदमी कौन है ?" - भूप सिंह बोला ।

"सही आदमी वो हरामजादा लोकेश भार्गव है ।" - हबीब फट पड़ा - "उसी की साहब से रंजिश थी । उसी को साहब की मौत से कुछ हासिल था । उसी ने साहब को कत्ल कर देने की धमकी दी थी ।"

"कब ?" - भूप सिंह के कान खड़े हो गये ।

"दो दिन पहले ।"

"तुझे कैसे मालूम ?"

"मैंने अपने कानों से लोकेश भार्गव को सागर साहब को कत्ल की धमकी देते सुना था । तब दीपा भी मौजूद थी । लोकेश ने साफ कहा था कि दीपा को साहब के साथ दुबई जाने से रोकने के लिए वह साहब का खून भी कर सकता था । मेरी बात पर विश्वास न हो तो दीपा से इस बात की तसदीक कर लीजिये । उसने भी लोकेश को साहब को कत्ल की धमकी देते सुना था । दीपा से क्या, खुद लोकेश से पूछिये कि उसने साहब को कत्ल की धमकी दी थी या नहीं । मालिक, मेरा विश्वास जानिये वही खूनी है । उसे गिरफ्तार कीजिये और उसे उसके किये की सजा दिलाइये । आपने अगर ऐसा न किया तो मैं खुद उस हरामजादे की गर्दन मरोड़ दूंगा । मैं खुद..."

"शट अप !" - भूप सिंह गर्ज कर बोला ।

हबीब सहम कर चुप हो गया ।

"साले ! मेरे सामने ही अला बला बक रहा है ।"

हबीब खामोश रहा ।

"अब फूट यहां से । अभी थोड़ी देर में फिर बुलाऊंगा मैं तुझे ।"

मन मन के कदम रखता हबीब वहां से विदा हो गया ।

"देखा साले को !" - भूप सिंह बोला - "मैंने कहा था कि हत्यारा अपना अपराध किसी दूसरे के सिर थोपने की कोशिश करेगा । पट्ठे ने शुरु कर भी दिया यह काम । कैसा मरा जा रहा था अपना अपराध लोकेश के सिर थोपने के लिए ।"

"सर !" - महेश्वरी दबे स्वर में बोला ।

"हां ।" - उसकी आवाज में तब्दीली नोट करके भूप सिंह सकपकाया ।

"सर, यह हबीब का काम नहीं । हबीब ने अपने साहब का खून नहीं किया ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि घण्टी की कटी हुई तार उसके हक में गवाही दे रही है ।"

"उसके हक में या उसके खिलाफ ?"

"उसके हक में ।"

"वो कैसे ?"

"सर, वो घण्टी हबीब को बुलाने के काम आती थी । वो काटी इसलिए गयी थी ताकि मरने वाला घण्टी बजाकर मदद के लिए हबीब को न बुला सके । अब अगर हत्यारा हबीब ही होता तो उसे घण्टी काटने की क्या जरूरत थी ! उसका साहब उसे अपने कत्ल के लिए आमादा पाकर ऐसी घण्टी क्यों बजाता जिसे सुनकर उसी आदमी ने जो आना था तो उसके सामने खड़ा था !"

"उसने हमें गुमराह करने के लिए घण्टी की तार काटी हो सकती है ।"

"उस सूरत में उसने तारें वापिस न जोड़ी होतीं और जोड़ को छुपाने की कोशिश न की होती । तब तो उसने तार को जान बूझकर ऐसी हालत में छोड़ा होता कि वह कटी हुई दिखे ही दिखे ।"

भूप सिंह कुछ क्षण सोचता रहा और फिर प्रभावित स्वर में बोला - "कह तो तुम ठीक रहे हो ।"

"सर, हबीब के दूसरे बयान से एक बात तो स्पष्ट होती है ।"

"क्या ?"

"कि अगर हत्या का कोई उद्देश्य किसी के पास था तो वह लोकेश भार्गव के पास था । हमें लोकेश से बात करनी चाहिए ।"

"नहीं । पहले लड़की से । देखें वो प्रेम सागर को लोकेश से मिली खून की धमकी वाली हबीब की बात की तसदीक करती है या नहीं ।"

"बैठिए ।" - भूप सिंह बड़े मीठे स्वर में दीपा से बोला ।

दीपा उसके सामने एक कुर्सी पर बैठ गयी और आंसुओं से पहले से भीगे रूमाल से अपनी आंखें पोंछने लगी ।

भूप सिंह ने देखा उसकी आंखें रो रोकर लाल सुर्ख हो चुकी थीं ।

"हालात ने" - भूप सिंह हमदर्दीभरे स्वर में बोला - "कुछ ऐसा रुख बदला है कि आपका दोबारा बयान लेना जरूरी हो गया है ।"

वह खामोश रही ।

"अब यह बात स्थापित हो चुकी है कि सागर साहब ने आत्महत्या नहीं की, उनकी हत्या की गई है । हम आप से उम्मीद कर रहे हैं कि हत्यारे को पकड़वाने में आप हमारी मदद करेंगी ।"

"इस काम के लिए तो मैं हर मुमकिन मदद करने को तैयार हूं ।" - दीपा बोली - "अब तभी मेरे दिल को ठण्डक पड़ेगी जब हत्यारा मुझे फांसी पर झूलता दिखाई देगा ।"

"शुक्रिया । अब न चाहते हुए भी मुझे आपसे कुछ बहुत व्यक्तिगत सवाल भी पूछने पड़ेंगे ।"

"आप बेहिचक पूछिए । मैं आपके हर सवाल का जवाब दूंगी ।"

"सीधा और सच्चा ? बिना किसी लाग लपेट के ?"

"हां ।"

"आपके हत्प्राण से बहुत नजदीकी ताल्लुकात थे ?"

"मैं उससे मुहब्बत करती थी ।" - वह उदास स्वर में बोली ।

"तो फिर शादी क्यों नहीं की ?"

"शादी के चक्कर में ही तो मैं उनके साथ दुबई जा रही थी ।"

"क्यों ? यहां शादी में क्या दिक्कत थी ?"

"वो क्या है कि सागर साहब पहले से शादीशुदा थे । उनकी बीवी पागलपन का लाइलाज केस है और एक साल में निश्चित रूप से मर जाने वाली है । हम क्योंकि शादी के लिए एक साल तक इन्तजार नहीं कर सकते थे इसलिए शादी करने दुबई जा रहे थे ।"

"जो शादी यहां नहीं हो सकती, वो दुबई कैसे हो सकती थी ?"

"सागर साहब कहते थे कि दुबई हो सकती थी । ऐसी शादी विदेश में हो तो पहली बीवी की मौजूदगी कानूनी अड़चन नहीं बनती ।"

"आपने इस बात की कहीं से तसदीक की थी ?"

"किस बात की ?"

"इसी बात की कि जो शादी हिन्दोस्तान में गैरकानूनी थी, वो दुबई में कानूनी करार दी जा सकती थी ?"

"नहीं ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मैंने जरूरी नहीं समझा ।"

“यानी कि मरने वाले की हर बात पर आपको मुकम्मल विश्वास होता था ?”
“हां ।”
“यह लोकेश भार्गव भी आपकी मुहब्बत का दम भरता है । इसी वजह से वह नहीं चाहता था कि आप प्रेम सागर के साथ दुबई जायें ?”
“हां । न सिर्फ चाहता नहीं था बल्कि मेरे सागर साहब के साथ दुबई जाने को रोकने के वास्ते वह कुछ भी करने को आमादा था ।”
“क्या यह सच है कि इसी बात को लेकर दो दिन पहले लोकेश और सागर साहब में बड़ी तगड़ी तकरार हुई थी ?”
“सच है ।”
“उस तकरार के दौरान लोकेश ने सागर साहब को जान से मार डालने की धमकी दी थी ?”
वह हिचकिचाई ।
“मुझे याद नहीं ।” - फिर वह बोली ।
“याद करने की कोशिश कीजिए । यह बड़ा अहम सवाल है ।”
“आप... आप लोग ...लोकेश पर कातिल होने का शक कर रहे हैं ?”
“अभी हमने किसी के बारे में कोई पक्की राय कायम नहीं की । अभी हम सिर्फ तफ्तीश कर रहे हैं ।”
तभी घड़ियाल एक बार खड़का ।
सबकी निगाहें अपने आप घड़ियाल की तरफ उठ गयीं ।
“साढे पांच बजे थे ।”
“मैं आपके जवाब का इन्तजार कर रहा हूं ।” - भूप सिंह बोला ।
“हां” - दीपा कठिन स्वर में बोली - “ऐसी धमकी दी थी लोकेश ने सागर साहब को ।”
“कैसे बात हुई थी ?”
“लोकेश मुझे सागर साहब के साथ दुबई जाने से रोकना चाहता था । सागर साहब ने पूछा था कि ‘मुझे रोकने के लिए क्या तुम मेरा खून कर दोगे’ तो लोकेश ने कहा था कि मैं वो भी कर सकता हूं ।”
“यह गम्भीरता से कही गई बात थी या मजाक में ?”
“गम्भीरता से । पूरी गम्भीरता से ।”
“लोकेश को मालूम था कि आज शाम की गाड़ी से आप प्रेम सागर के साथ बम्बई रवाना होने वाली थीं ?”
“हां ।”
“आपको लोकेश से उमीद थी कि ऐन मौके पर वह फिर कोई फसाद करने की कोशिश करेगा ?”
“थी । सच पूछिए तो मैंने इस बाबत सागर साहब को चेतावनी भी दी थी ।”
“कैसी चेतावनी ?”
“लोकेश से सावधान रहने की ।”
“आपको अन्देशा था कि लोकेश अपनी धमकी पर खरा उतर सकता था ?”
“था” - वह एकाएक फिर रोने लगी - “देख लीजिए, मेरा अन्देशा सच निकला ।”

भूप सिंह ने एक गहरी सांस ली और असहाय भाव से गर्दन हिलाई । उसने अपने मातहत की तरफ देखा । दोनों में कुछ मूक मन्त्रणा हुई ।

"मैडम" - भूप सिंह गम्भीरता से बोला - "आंसू पोंछ लीजिए और मेरी तरफ देखिए ।"

दीपा ने अपना आंसुओं से भीगा चेहरा ऊपर उठाया । आंसू पोंछने का उपक्रम उसने न किया ।

"आप एक गलत आदमी की खातिर आंसू बहा रही हैं ।"

"जी !"

"जो मैं आपको बताने जा रहा हूं, उसे सुनना आपके लिए भारी सदमे की बात साबित होगा लेकिन हकीकत बयान करना मेरा फर्ज है । वैसे भी सागर साहब की हकीकत आपसे ज्यादा देर छुपी नहीं रहने वाली ।"

"हकीकत ! कैसी हकीकत ?"

"मैं अभी बताता हूं । पहले आप एक बात बताइये ।"

"क्या ?"

"आपको खबर है कि आज सागर साहब में और लोकेश में यहां एक मुलाकात होने वाली थी ?"

"हां । दरअसल लोकेश का फोन मेरे सामने आया था । वह सागर साहब से तनहाई में मिलना चाहता था इसलिए उन्होंने मुझे यहां से रवाना कर दिया था और जाकर ड्राईंगरूम में बन्द हो जाने के लिए कहा था ।"

"यानी कि आपने लोकेश को फ्लैट पर आते नहीं देखा ?"

"नहीं । उसके आने के वक्त से पहले ही मैं यहां से ड्राइंग रूम में चली गयी थी ।"

"बावजूद आपकी चेतावनी के सागर साहब लोकेश से भयभीत नहीं थे ?"

"नहीं । सागर साहब कहते थे कि भय वाली कोई बात नहीं थी । उन्होंने सफर पर रवाना होने से पहले लोकेश से महज एक बिजनेस मीटिंग करनी थी ।"

"कैसी बिजनेस मीटिंग ? सागर साहब ने कुछ बताया तो होगा आपको ?"

"बताया था ।"

"क्या ?"

"बात इतनी नीचताई की है कि जुबान पर नहीं लायी जाती ।"

"कोशिश कीजिये । क्या बात थी ?"

"लोकेश मेरा पीछा छोड़ने की सागर साहब से कोई कीमत चाहता था ।" - दीपा नफरतभरे स्वर में बोली - "सागर साहब उसके मुंह पर चांदी का जूता मारने वाले थे ।"

"ऐसा खुद सागर साहब ने कहा था ?"

"हां !"

"उन्होंने झूठ कहा था । झूठ कहा था उन्होंने । ऐसा उन्होंने लोकेश को आपकी निगाहों से गिराने के लिए कहा था । हकीकत ऐन इससे उलट है । हकीकत यह है कि आपका पीछा छोड़ने के लिए सागर साहब ने लोकेश से चार लाख रुपये की रकम की मांग की थी ।"

"यह नहीं हो सकता ।" - दीपा भड़क कर बोली - "आप झूठ बोल रहे हैं । आप खामखाह..."

“यह एक ऐसी हकीकत है जिसकी तसदीक भी हो चुकी है ।”

“किसने की तसदीक ?”

“हबीब ने । और आपकी जानकारी के लिए हबीब सागर साहब का सिर्फ नौकर ही नहीं था, उनका दोस्त था, उनका राजदां था । अगर वह कहता है कि सागर साहब लोकेश से रुपया झटकने की फिराक में थे तो बात झूठ नहीं हो सकती । सागर साहब ने हबीब को यह तक कहा था कि अब सफर पर जाने की जरूरत नहीं रह जाने वाली थी, उन्हें चार लाख रुपये की कमाई घर बैठे ही हो जाने वाली थी ।”

“यह झूठ है ! झूठ है ! झूठ है ! प्रेम ऐसा नहीं हो सकता ।”

“वो ऐसा ही था । वो इससे कहीं ज्यादा बुरा था । वो आपकी कल्पना से कहीं ज्यादा बुरा था । उसका नाम ही प्रेम सागर था । हकीकत में उसके सागर में प्रेम की एक बूंद भी नहीं थी । इसीलिए मैंने अभी थोड़ी देर पहले कहा था कि आप एक गलत आदमी के लिए आंसू बहा रही हैं ।”

“आप एक मर चुके आदमी के साथ जुल्म कर रहे हैं । क्योंकि वो मर चुका है, आपकी बात नहीं काट सकता, आपके खिलाफ नहीं बोल सकता इसलिए...”

“प्रेम सागर के खिलाफ, उसके घिनौने रूप को उजागर करने वाली यही इकलौती बात नहीं है हमारे पास कि आपको अपने चंगुल से रिहा करने की उसने लोकेश से कोई कीमत वसूलनी चाही थी ।”

“और क्या है आपके पास ?”

“मसलन उसने यही आपसे सफेद झूठ बोला था कि अगर वह विदेश जाकर आपसे शादी करता तो वह गैरकानूनी न होती । ऐसा कोई कानून नहीं, इस बात की तसदीक आप बेशक अभी जाकर दीवान कैलाश नाथ से कर सकती हैं । लोकेश भी वकील है लेकिन उसकी बात पर शायद आपको विश्वास न हो इसलिए मैंने दीवान साहब का नाम लिया । मैडम, एक बीवी के होते दूसरी शादी करना गैरकानूनी है, चाहे वह शादी हिन्दोस्तान में हो, चाहे चांद पर ।”

दीपा के मुंह से बोल न फूटा । अलबत्ता उसके बहते हुए आंसू एकाएक सूख गए ।

“और फिर सौ बातों की एक बात यह है कि प्रेम सागर की कोई बीवी थी ही नहीं । पागल या नापागल कैसी भी किसी बीवी से आज की तारीख में प्रेम सागर नहीं बंधा हुआ था । वह आप से यहीं, इसी वक्त, शादी करने के लिए पूरी तरह आजाद था ।”

“वह पहले से शादी-शुदा नहीं था !” - दीपा होंठों में बुदबुदायी ।

“पहले वह शादी-शुदा था लेकिन चार साल पहले उसकी बीवी ही उसे तलाक देकर छोड़ गयी थी ।” - भूप सिंह ने मेज पर फैले कागजात में से एक कागज उठा कर दीपा की गोद में डाल दिया - “इसे देखिये । यह तलाक की तसदीक करते कोर्ट के डाकूमेंट की एक कापी है जो प्रेम सागर के निजी कागजात में से बरामद हुई है ।”

दीपा ने यूं कांपते हाथों से कागज को सम्भाला और पढा जैसे वह खुद उसकी अपनी मौत का परवाना हो ।

कुछ देर बाद उसने कागज वापिस लौटा दिया ।

“विश्वास नहीं होता ।” - उसके मुंह से निकला ।

“अभी तो आपने मुकम्मल असलियत का एक बहुत छोटा हिस्सा देखा है ।” - भूप सिंह बोला - “हमने प्रेम सागर के निजी कागजात से ऐसी हाहाकारी बातें जानी हैं कि

अगर ये कागजात" - उसने मेज पर पड़े कागजात की तरफ इशारा किया - "उसकी जिन्दगी में हमारे हाथ लग जाते तो वह कम से कम दस साल के लिए जेल में बैठा चक्की पीस रहा होता ।"

दीपा के मुंह से एक तीखी सिसकारी निकली ।

"जी हां ।" - भूप सिंह बोला - "ये कागजात बताते हैं कि भोली भाली लड़कियों को अपने प्रेम जाल में फंसा कर दुबई ले जाना और वहां उन्हें अरब शेखों के हाथ बेच आना उसका कारोबार था । उसकी यह डायरी देखिए" - भूप सिंह ने डायरी उठाकर दीपा की गोद में डाल दी - "उसका हैंडराइटिंग तो आप पहचानती ही होंगी ।"

दीपा ने सहमति में सिर हिलाया ।

"इस डायरी में उसके अपने हैंड राइटिंग में उन दर्जन भर लड़कियों का मुकम्मल कच्चा चिट्ठा दर्ज है जिन्हें वह दुबई ले जाकर बेच चुका है । आप खुदा का शुक्र मनाइये कि आप इस डायरी की तेरहवीं एन्ट्री बनने से बाल-बाल बच गयी हैं ।"

"इसमें" - वह हकलाती हुई बोली - "कि.. किसी अनुराधा नांगिया का जिक्र है ?"

"सरासर है । बारहवीं एन्ट्री वही है । आपसे पहले वह उसी का खाना खराब करके हटा था । आप खुद देख लीजिए ।"

दीपा ने कुछ पन्ने पलटे ।

फिर एकाएक उसका चेहरा कागज की तरह सफेद हो गया । डायरी खुद-ब-खुद उसके हाथ से निकलकर फर्श पर जा गिरी ।

महेश्वरी ने डायरी उठाकर वापिस मेज पर डाल दी ।

"तो" - दीपा फुसफुसाई - "लोकेश ने प्रेम सागर के बारे में जो कहा था, सच कहा था ।"

"अगर" - भूप सिंह बोला - "उसकी इस असलियत के बारे में कुछ कहा था तो यकीनन सच कहा था । मैडम, शुक्र मनाइये कि आपके लिए बड़े सही वक्त पर हुई प्रेम सागर की मौत ने आपको तबाह होने से बचा लिया ।"

"मैं इस आदमी को दिल से चाहती थी" - दीपा यूं बोली जैसे अपना गुनाह कबूल कर रही हो - "कितना प्यार करती थी मैं प्रेम से । वो भी कितना दम भरता था मेरी मुहब्बत का ।"

"जो कि एक धोखा था, छलावा था, फरेब था ।"

"सर" - महेश्वरी ने जैसे अपने उच्चाधिकारी को याद दिलाया - "यह लाख रुपये का सवाल अभी भी हमारे सामने है कि प्रेम सागर का कत्ल आखिर किया तो किसने किया ।"

"जिस किसी ने भी किया होगा" - दीपा लोकेश के बारे में सोचती हुई आतंकित भाव से बोली - "अगर वह पकड़ा जायेगा तो उसका क्या होगा ?"

"यह भी कोई पूछने की बात है ।" - भूप सिंह बोला - "वह कत्ल के इलजाम में फांसी पर चढेगा ।"

"मरने वाला एक बुरा आदमी था ।"

"लेकिन आदमी था । कानून किसी को किसी की जान लेने का हक नहीं देता । सजा देना कानून का काम है । आम शहरी का नहीं ।"

"क्या यह जरूरी है" - दीपा बोली - "कि कत्ल यहां मौजूद किसी शख्स ने ही किया

हो ?”
“क्या मतलब ?” - भूप सिंह बोला ।
“यह भी तो हो सकता है कि हत्यारा कोई बाहर से आया आदमी हो और किसी को उसके यहां आगमन की भनक न लगी हो । जैसे घिनौने चरित्र का आदमी प्रेम सागर अब साबित हुआ है, उसको निगाह में रखते हुए तो उसका कातिल कोई भी हो सकता है । जो आदमी एक दर्जन लड़कियों का खानाखराब कर चुका हो उसके दुश्मनों की क्या इस शहर में कमी होगी !”
“हां” - भूप सिंह गम्भीरता से बोला - “विचार तो इस सम्भावना पर भी किया जा सकता है ।”
दीपा खामोश रही ।
“आपके ख्याल से कातिल लोकेश भार्गव हो सकता है ?” - एकाएक महेश्वरी ने सवाल किया ।
“मेरे ख्याल से !” - दीपा हड़बड़ा कर बोली - “मेरा इस बारे में जो ख्याल है, वो मैं पहले ही जाहिर कर चुकी हूं ।”
“यह कि हत्यारा कोई बाहर से आया आदमी हो सकता है ?”
“हां ।”
“आपको यह तो अहसास है न कि लोकेश के पास हत्या का तगड़ा उद्देश्य है ।”
“इतने से क्या कोई हत्यारा साबित हो जाता है ?”
“जिस आदमी को अभी तक आप बहुत बुरा भला कह रही थीं, आप एकाएक उसकी बहुत हिमायत करने लगी हैं, मैडम ।”
दीपा खामोश रही ।
“ऐनी वे” - एकाएक भूप सिंह बोला - “देखते हैं क्या होता है ।”
“आपने मुझसे और कुछ पूछना है ?”
“फिलहाल नहीं । लेकिन अभी आप ठहरियेगा ।”
“मैं कब तक...”
“घबराइये नहीं । हम बहुत जल्द आपको रुख्सत कर देंगे ।”
दीपा उठी ।
भूप सिंह खुद उसे दरवाजे तक छोड़ने गया ।
उसके दरवाजे के बाहर निकल जाने के बाद भूप सिंह ने दरवाजा भीतर से बन्द कर दिया ।
“बेचारी को बड़ा भीषण झटका लगा ।” - वह वापिस लौट कर बोला ।
“सर्वनाश से तो यह झटका अच्छा ही है ।” - महेश्वरी बोला ।
“हां, यह भी ठीक है ।”
“इसे अभी दोहरा झटका तो तब लगेगा अगर हमने लोकेश को गिरफ्तार कर किया ।”
“तुम्हारे ख्याल से हत्यारा लोकेश है ?”
“वैसे तो, सर, अभी कुछ कहना मुहाल है । लेकिन लड़की के व्यवहार में एकाएक जो तब्दीली आयी थी, उससे लगता है कि कम से कम उसे जरूर लगने लगा है कि यह काम लोकेश का हो सकता है । हबीब का भी पूरा-पूरा शक लोकेश पर ही है । और जहां तक

हत्या के उद्देश्य का सवाल है, वह भी सिर्फ लोकेश के पास ही दिखाई दे रहा है । वह जानता था कि दीपा, जिसे कि वह चाहता था, प्रेम सागर के साथ तबाही और बरबादी की राह पर कदम रख रही थी और वह उसे उसके उस घिनौने अंजाम से हर हाल में बचाना चाहता था ।"

"लड़की की इस बात में तुम्हें कोई दम दिखाई देता है कि हत्यारा कोई बाहरी आदमी हो ?"

"इस सम्भावना को जेहन में रखा जा सकता है ! लेकिन मुझे इसमें कोई दमखम दिखाई नहीं देता । मुझे तो यह हर रुख से लोकेश की करतूत लगती है । हम पहले ही यह फैसला कर चुके हैं कि कातिल न दीवान साहब हो सकते हैं और न हबीब । लड़की भी कातिल नहीं हो सकती । बच-खुच कर लोकेश ही रह जाता है ।"

"लेकिन हालात से तो यह नामुमकिन लगता है कि उसने कत्ल किया हो ।"

"फिलहाल लगता है, सर क्योंकि अभी हमने लोकेश को अच्छी तरह से नहीं टटोला है ।"

"हां ।" - भूपसिंह ने कबूल किया - "यह बात तो है । ज्यादा हमने उसे इसलिए नहीं टटोला था क्योंकि सबसे पहले हमें उसका ही कातिल होना असम्भव लगा था । उसका एलीबाई एक दम चौकस जो है ।"

"सर, हमें उसकी एलीबाई की चौकसी का रोब नहीं खाना चाहिए । हमें उसे और अच्छी तरह से टटोलना चाहिए और अच्छी तरह से टेस्ट करना चाहिए ।"

कुछ हासिल होगा ?" - भूपसिंह संदिग्ध भाव से बोला ।

"शायद हो ।"

"ठीक है । इस हासिल की खातिर ही तुम एक काम करो ।"

"क्या ?"

"प्रैस क्लब का चक्कर लगा कर आओ । देखते हैं वहां से लोकेश भार्गव के बयान की तसदीक होती है या नहीं ।"

"ठीक है ।" - महेश्ववरी उठ खड़ा हुआ ।

"और जाते-जाते लाकेश को यहां भेजते जाना ।"

"बेहतर ।"

Chapter 3

महेश्वरी रायसीना रोड पर स्थिेति प्रैस क्लब में पहुंचा । उस वक्त वहां उल्लू बोल रहे थे ।

वह क्लब के सैक्रेट्री से मिला ।

सैक्रेट्री लोकेश से वाकिफ था । उसने इस बात की तसदीक की कि लंज के वक्त लोकेश वहां था ।

“भार्गव साहब यहां से गए कितने बजे थे ?” - महेश्वरी ने सवाल किया ।

“तीन बजने में दस मिनट पर ।” - सैक्रेट्री निसंकोच बोला ।

“आपको वक्त की ऐसी गारन्टी कैसे है ?”

“क्योंकि यहां से रवाना होते वक्त उन्होंने मेरे से वक्त पूछा था । तब मेरी घड़ी में तीन बजे थे ।”

“अगर तीन बजे थे तो...”

“मैं अपनी घड़ी दस मिनट आगे रखता हूं । आदतन । अगर मेरी घड़ी में तब तीन बजे थे तो असल वक्त तीन बजने में दस मिनट का था ।”

“ओह ! भार्गव साहब ने आपसे टाइम क्यों पूछा ? क्या उनके पास घड़ी नहीं थी ।”

“थी ।”

“तो !”

“वो क्या है कि क्लब का बार ढाई बजे बन्द होता है । अभी कुछ दिन पहले भार्गव साहब दो चालीस पर बार में पहुंचे थे तो बारमैन ने उन्हें ड्रिंक यह कहकर सर्व नहीं की थी कि बार बन्द हो चुका था । आज बार क्लोजिंग टाइम से काफी देर बाद तक चलता रहा था । टाइम की तरफ मेरी तवज्जो दिलाकर भार्गव साहब दरअसल यह शिकायत करना चाहते थे कि आज बार दो पचास तक भी खुला था जबकि उन्हें दो चालीस पर बन्द हो चुका होने का फतवा सुना दिया गया था ।”

“हूं । तो भार्गव साहब दो पचास पर निश्चित रूप से यहां से रवाना हो गए थे ।”

“हां ।”

“कैसे ?”

“टैक्सी पर । क्लब की बगल में ही टैक्सी स्टैण्ड है । मैंने उन्हें दरबान को अपने लिए टैक्सी बुलाने को कहते सुना था - सैक्रेट्री एकाएक हंसा - “बाद में दरबान कह रहा था कि भार्गव साहब जरूर किसी छोकरी से मिलने जा रहे थे ।”

“ऐसा क्यों कहा उसने ?”

“क्योंकि भार्गव साहब ने टिप के तौर पर उसे दस रुपये दिए थे ।”

“दरबान को दस रुपये की टिप ज्यादा मानी जाती है ?”

“हां । यह कोई होटल तो है नहीं । अमूमन तो यहां लोग दरबान को टिप देते ही नहीं । देते हैं तो एक या दो रुपये ।”

“भार्गव साहब ने यहां से कहीं फोन किया था ?”

“हां । किया होगा । वक्त की बाबत मेरे से बातचीत उन्होंने फोन बूथ से निकल कर ही की थी ।”

“यहां पब्लिक टेलीफोन का बूथ है ?”

“जी हां । वैसे क्लब से अपना टेलीफोन भी है लेकिन बाज मेम्बरान बूथ से फोन करना पसन्द करते हैं । प्राइवेसी की खातिर । बूथ में से आवाज बाहर जो नहीं आती ।”

“आई सी । शुक्रिया, जनाब ।”

महेश्वरी ने सैक्रेटरी से विदा ली ।

उसने दरबान से भी बात कि लेकिन दरबान ने भी लोकेश की वहां से रवानगी के वक्त की पूरी तसदीक की ।

खाली हाथ वह वापिस लौटा ।

***

“बैठिए ।” - भूपसिंह बोला - “बैठिए, भार्गव साहब ।”

“शुक्रिया” - लोकेश बोला और निर्देशित कुर्सी पर बैठ गया ।

“आप जान ही चुके होगे कि यह आत्महत्या का केस नहीं है ।”

“जी हां ! चर्चा हुआ तो था ड्राईंगरूम में ।”

“आपका बयान तहरीरी तौर पर हमारे पास मौजूद है लेकिन मौजूदा है लेकिन मौजूदा हालात में अगर हम आपके बयान के कुछ या तमाम पहलुओं की आपसे दोबारा तसदीक चाहें तो आपको कोई एतराज !”

“मुझे क्या एतराज होगा । आप जो जी में आये पूछिये । दोबरा पूछिये या हजारबारा पूछिये ।”

“शुक्रिया ! सबसे पहले मैं आपसे आपकी आज की मूवमेंट्स के बारे में ही सवाल करूंगा ।”

“जरूर कीजिये ।”

“बकौल आपके, लंच आपने प्रैस क्लब में किया था ।”

“जी हां ।”

“आप वहां के मेम्बर हैं ?”

“जी हां ।”

“फिर तो वहां काफी लोग आपको जानते होंगे ?”

“जी हां । काफी लोग जानते हैं ।”

“काफी लोगों में कौन लोग शामिल हुए ?”

“दूसरे मेम्बरान । बेयरे । क्लब में दफ्तर का स्टाफ । दरबान वगैरह ।”

“आज लंच में आप वहां थे ?”

“जी हां ।”

“जहां से कि आप एक टैक्सी पर सवार होकर सीधे यहां आये थे ?”

“हां ।”

“किस वक्त ?”

“मैं तीन बजने में दस मिनट पर सागर साहब से फोन पर मुलाकात तय कर चुकने के बाद क्लब से रवाना हुआ था । क्लब से यहां का पांच मिनट का रास्ता है । इस लिहाज से मैं तीन बजने में पांच मिनट पर यहां पहुंच गया था ।”

“आप टैक्सी पर क्यों आये ? इतना मामूली फासला तो आप चलकर भी आ सकते थे ।”

“मुझे जल्दी थी ।”

"किस बात की ?"
"सागर साहब से मिलने की । उन्होंने चार बचे की ट्रेन पकड़नी थी । वे अपेक्षाकृत जल्दी भी फ्लैट से स्टेशन को रवाना हो सकते थे । मैं उन्हें मिस नहीं करना चाहता था इसलिए मैंने वाक में वक्त जाया करना मुनासिब नहीं समझा था ।"
"दीवान कैलाश नाथ यहां आप से पहले पहुंचे हुए थे ?"
"जी हां । हमने पांच मिनट यहां सागर का इन्तजार किया था । फिर दीवान साहब उतावले होने लगे थे तो हम यहां से उनके आफिस के लिए यह सोचकर रवाना हो गये थे कि कहीं सागर साहब दीवान साहब के आफिस में न पहुंच गये हों । हमने उन्हें वहां न पाया तो हम वापिस लौटे और फिर यहां सागर साहब का इन्तजार करने लगे । फिर यहां दीपा भी पहुंच गयी । वह सागर साहब की फ्लैट से गैरमौजूदगी से बहुत चिन्तित थी । उसी ने बैडरूम के दरवाजे को धक्का दिया था तो उसे खुला पाया था, हालांकि जब वह दरवाजा पहले ट्राई किया गया था तो बन्द पाया गया था ।" - लोकेश एक क्षण ठिठका और फिर बोला - "फिर लाश बरामद हो गयी ।"
"आपको वक्त की बाबत कोई गलतफहमी तो नहीं ? यह पक्की बात है कि आप तीन बजने में पांच मिनट पर यहां पहुंचे थे ?"
"गलतफहमी का सवाल ही नहीं । मैंने कहा न कि तीन बजने में दस मिनट पर मैं क्लब से चला था, टैक्सी से पांच मिनट का रास्ता..."
"जी हां ! जी हां ! जो आपने कहा वो मैंने सुना । तो यहां पहुंचने और लाश की बरामदी के बीच का सारा वक्फा आप दीवान साहब के साथ थे ।"
"जी हां !"
तभी महेश्वरी ने वहां कदम रखा ।
"शुक्रिया !" - एकाएक भूपसिंह बोला - "शुक्रिया, भार्गव साहब ! आप फिलहाल ड्राईंगरूम में तशरीफ ले जाइये । मैंने अपने मातहत से कुछ जरूरी गुफ्तगू करनी है । उसके बाद मैं आपको फिर तलब करूंगा ।"
"ठीक है ।" - लोकेश बोला और वहां से विदा हो गया ।
महेश्वरी अपने उच्चाधिकारी के पास पहुंचा । उसने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की ।
"इसकी एलीबाई में तो कोई खोट नहीं, महेश्वरी ।" - भूपसिंह बोला - "इसके बयान की तो तुम क्लब से मुकम्मल तसदीक करके आये हो । तीन बजने में दस मिनट का यह क्लब में था । अगले पांच मिनट यह टैक्सी में था । तुमने इस बात की खुद तसदीक की है कि गाड़ी से क्लब से यहां तक आने में पांच मिनट ही लगते हैं । तीन बजने में पांच मिनट पर जब यह यहां पहुंचा था तो दीवान साहब यहां पहले ही पहुंचे हुए थे । उसके बाद लाश बरामद होने तक हर क्षण यह दीवान साहब की सोहबत में था । इसका कातिल होना तो नामुमकिन लगता है ।"
"एलीबाई घड़ी जा सकती है ।" - महेश्वरी जिदभरे स्वर में बोला ।
"यह तो घड़ी हुई एलीबाई नहीं मालूम होती ।"
"अगर लोकेश कातिल नहीं तो फिर यहां मौजूद लोगों में से कातिल कोई भी नहीं । अगर इन्हीं चारों में से कोई कातिल है तो लोकेश है । उसी के पास कत्ल का तगड़ा उद्देश्य है ।"
"कहीं ऐसा तो नहीं कि लोकेश को आया समझकर किसी बाहरी आदमी को प्रेम

सागर में घर में घुसा लिया हो और वहीं उसका कत्ल करके चलता बना हो ।"

"कत्ल तो, सर, प्रेम सागर की अपनी रिवाल्वर से हुआ है । रिवाल्वर यहां उपलब्ध न होती तो कातिल क्या बिना कत्ल किए यहां से लौट जाता ।"

"वह खुद भी हथियार से लैस होकर आया होगा लेकिन जब उसने यहां प्रेम सागर की रिवाल्वर उपलब्ध पाई होगी तो उसने उससे कत्ल करना ज्यादा मुनासिब समझा होगा ।"

"वह आनन फानन कैसे जान सकता था कि यहां रिवाल्वर कहां उपलब्ध थी !"

"शायद प्रेम सागर ने रिवाल्वर निकालकर उसकी तरफ तानी हो और बाहर से आया आदमी किसी तरह वह रिवाल्वर छीनने में कामयाब हो गया हो ।"

"घन्टी की तार काटने से पहले या बाद में ?"

"क्या फर्क हुआ ?"

"बहुत फर्क हुआ । कत्ल के बाद घन्टी की तार काटना बेमानी थी । कत्ल से पहले जब रिवाल्वर उसकी तरफ तनी होगी तो वह घन्टी की तार क्यों कर काट पाया होगा ?"

"घन्टी की तार उसने खामखाह केस को उलझाने के लिए कत्ल के बाद काट दी होगी ।"

"लिफ्टमैन के बयान में ऐसे किसी आगन्तुक का जिक्र नहीं ।"

"लिफ्टमैन के बयान में तो लोकेश भार्गव का भी जिक्र नहीं । जैसे वह सीढियों के रास्ते आया था, वैसे ही वह बाहरी आदमी भी सीढियों के रास्ते आया हो सकता है ।"

"और लौटा भी ?"

"हां ।"

"फिर सीढियां चढते लोकेश से वो क्यों नहीं टकराया ?"

"क्या पता टकराया हो । सीढियों पर आवाजाही तो रहती ही है । सीढियों में टकराये किसी व्यक्तिा को देखकर यह भला कैसे कहा जा सकता है कि वह तीसरी मंजिल से आया है या आठवीं से ।"

"क्या बात है, सर ! आप एकाएक इस थ्योरी पर बहुत बल देने लगे हैं कि हत्यारा कोई बाहर से आया आदमी हो सकता है ।"

"लोकेश भार्गव जैसे ठोस एलीबाई रखने वाले शख्स पर शक करना भी तो बेकार सा ही है ।"

"वह चालाक आदमी है । उसके खून में नौजवानी की गर्मी है । वह दीपा से मुहब्बत करता है । ऊपर से वह प्रेम सागर की हकीकत जान गया था लेकिन उसकी बदकिस्मती कि उस हकीकत पर वह दीपा को यकीन नहीं दिला पा रहा था । वह वकील है । तोड़ फोड़ का, दावं पेचों का, उसका दिमाग आदी है । कत्ल की कोई फूलप्रूफ स्कीम सोच लेने का उसके पास वक्त था । उसकी एलीबाई यकीनन बहुत ठोस है । हद से ज्यादा ठोस है । इतनी ठोस है कि हम उसमें कोई छेद नहीं कर पा रहे । क्यों है उसके पास ऐसी ठोस एलीबाई । खामखाह ! सर ऐसा खुशकिस्मत क्यों कर हुआ वो ?" - महेश्वरी एक क्षण ठिठका और फिर बोला - "देखिये । वो यहां पहुंचा तो ऐसी जगह से जहां कि हर कोई उसे खूब जानता है । वहां से रवाना होने से पहले वह क्लब के सैक्रेट्री से टाइम पूछता है ताकि सैक्रेट्री को उसकी रवानगी का वक्त याद रहे । वह दरबान को दस रुपये टिप देता है ताकि उस असाधारण टिप की वजह से दरबान को याद रहे कि तीन बजने में दस मिनट

पर उसने भार्गव साहब को वहां से रवाना होते के लिए टैक्सी मंगाकर दी थी । यहां वह दीवान कैलाश नाथ के 'बाद' पहुंचता है और आकर उनकी तवज्जो भी टाइम की तरह दिलाता है ताकि रिकार्ड हो जाये कि वह तीन बजने में पांच मिनट पर दीवान साहब के बाद, उनकी मौजूदगी में, वहां पहुंचा था । इस प्रकार बार-बार उसके द्वारा टाइम की स्थापना क्या यह सोचने पर मजबूर नहीं करती कि उसे मालूम था, अच्छी तरह से मालूम था, कि निकट भविष्य में ऐसा कुछ होने वाला था जिसकी वजह से इन तमाम बातों की बाबत उससे सवालात किये जाने वाले थे । सर, उसकी सारी एलीबाई वक्त की किसी जादूगरी पर आधारित है । उसने जरूर वक्त के साथ कोई मदारी जैसी हेर फेर की है जिसकी वजह से जो उसे दिखाई देता है वो हमें नहीं दिखाई देता और जो हमें दिखाई देता है वो हकीकत नहीं है ।"

"लेकिन हम साबित नहीं कर सकते कि वो हकीकत नहीं है ।"

"कोशिश तो करनी चाहिये, सर ! हमें एक बार फिर कोशिश करनी चाहिये उसे उसकी एलीबाई से हिलाने की ।"

भूप सिंह गहरी सोच में पड़ गया ।

"मैं उसे बुलाऊं ?" - महेश्वरी आशापूर्ण स्वर में बोला ।

"नहीं । पहले दीवान साहब को फिर बुलाओ ।"

"दीवान साहब ।" - भूपसिंह चिकने चुपड़े स्वर में बोला - "मैं बहुत शर्मिन्दा हूं आपसे कि मुझे यूं बार-बार आपको तकलीफ देनी पड़ रही है । मैं..."

"नैवर माइन्ड दैट ।" - दीवान साहब भूपसिंह के सामने कुर्सी पर बैठते हुए बोले - "यू आर डुईंग युअर ड्यूटी ओनली ।"

"आपकी मेहरबानी है जो आप ऐसा सोचते हैं ।"

"अब क्या है । अब फिर कोई ऐसी कौड़ी तो नहीं हाथ आ गयी जो मुझे कातिल करार दे सकती हो ।"

"ऐसी कोई बात नहीं, दीवान साहब ! हम आपको कातिल नहीं समझ रहे लेकिन यह जरूर समझ रहे हैं कि आपका बयान कातिल का चेहरा नुमायां करने में मददगार साबित हो सकता है ।"

"अच्छा !"

"जी हां । कोई छोटे-छोटे नुक्ते हैं जिन्हें बार-बार चैक किया जाना हमें जरूरी महसूस हो रहा है । मिसाल के तौर पर क्या आप बता सकते हैं कि ठीक किस वक्त लोकेश भार्गव यहां पहुंचा था ?"

"मैं तो घड़ी पहनता नहीं लेकिन मुझे याद है कि लोकेश के यहां पहुंचने के बाद मैंने घड़ियाल की तरफ निगाह उठाई थी तो उस पर दो बजकर छप्पन मिनट बजे पाये थे ।"

"तब तक लोकेश को यहां पहुंचे कितना वक्त हो चुका था ?"

"मुश्किल से एक मिनट ।"

"यानी कि वह दो पचपन पर वहां पहुंचा था ।"

"जाहिर है ।"

"घड़ियाल की तरफ आपकी तवज्जो कैसे गयी थी ?"

"मेरे ख्याल से प्रेम सागर की नालायकी का जिक्र हो रहा था कि वह हमें बुलाकर खुद कहीं खिसक गया था । तब लोकेश ने कहा था कि कोई ज्यादा देर तो नहीं हुई थी,

देखिये घड़ियाल अभी दो छप्पन ही तो बजा रहा है ।"
"यानी कि लोकेश ने आपकी तवज्जो घड़ियाल की तरफ दिलाई थी ?"
"यही समझ लीजिये ।"
"हूं । फिर आप और लोकेश यहां से विदा किस वक्त हुए ये ?"
"यही कोई तीन बजे ।"
"पक्की बात ?"
"हां ।"
"तब भी टाइम का जिक्र लोकेश भार्गव ने ही किया था ?"
"हां ! शायद ।"
"दीवान साहब अब मेरे अगले सवाल का जवाब जरा गौर से दीजियेगा ।"
"क्यों नहीं ! जरूर ! मैं आपके हर सवाल का जवाब गौर से दे रहा हूं ।"
"क्या यह सच नहीं कि जब जब वक्त का जिक्र आया था, वह लोकेश भार्गव के उठाये आया था, उसी ने हर बार जान बूझ कर आपकी तवज्जो वक्त की तरफ दिलाई थी ?"
"हां, सच तो है लेकिन..." - एकाएक दीवान साहब ने बेचैनी से पहलू बदला - "इसमें आप नतीजा क्या निकालना चाहते है ?"
"अभी हम कोई नतीजा नहीं निकालना चाहते । अभी हम सिर्फ सवाल कर रहे हैं । आप से । मौकायेवारदात पर मौजूद बाकी तीन लोगों से । सब से ।"
"हूं ।"
"तो यह सच है कि वक्त की तरफ आपकी तवज्जो हमेशा लोकेश भार्गव ने दिलाई ?"
"हां" - दीवान साहब का स्वर विचलित था - "सच है ।"
"कैसे ? पहली बार वक्त का जिक्र कैसे आया था ?"
"मैंने अभी बताया तो कि..."
"फिर बता दीजिए ।"
"वो यहां पहुंचा था । प्रेम सागर के फ्लैट में न होने का जिक्र आया था । उसकी लापरवाही का जिक्र आया था । तब लोकेश ने घड़ियाल की तरफ घूमते हुए कहा था कि कोई ज्यादा देर तो नहीं हुई थी । देखिए घड़ियाल तो अभी दो छप्पन ही बजा रहा है ।"
"वो जानता था कि आप घड़ी नहीं पहनते ।"
"वो क्या, दिल्ली शहर में वकालत के पेशे का हर शख्स जानता है ।"
"घड़ियाल पर आपने खुद निगाह डाली थी कि महज मान ली थी लोकेश की बात ?"
"नहीं, मैंने खुद घूमकर घड़ियाल की तरफ देखा था । उसमें वही टाइम हुआ था जो लोकेश बता रहा था ।"
"दो बजकर छप्पन मिनट ?"
"हां ।"
"फिर वक्त देखने के तुरन्त बाद क्या वार्तालाप हुआ था ?"
"मेरे ख्याल से मैंने लोकेश को कहा था कि लोकेश वहां पहले भी आ चुका था ।"
"जी !" - भूपसिंह चौंककर बोला ।
भूपसिंह के यूं चौंकने पर दीवान साहब सकपकाये ।

"मैंने कोई गलत बात कह दी ?" - वे बोले ।

"जी ! जी नहीं । जी नहीं । ऐसी कोई बात नहीं । अब आप यह बताइए कि आपने ऐसा क्यों कहा ?"

"क्योंकि मुझे पहले ऐसा लगा था ।"

"पहले कब ?"

"जब प्रेम सागर ने मुझे फोन किया था । वार्तालाप में उसने कहा था लोकेश कहता है पैदल भी सिर्फ पांच मिनट का रास्ता है । उसकी उस बात से मुझे लगा था कि लोकेश पहले ही फ्लैट पर पहुंच चुका था और उस वक्त उसके पास मौजूद था । यह तो मुझे बाद में यहां आकर पता लगा था कि ऐसा नहीं हो सकता था । लोकेश तो सीधा प्रेस क्लब से यहां आया था और मेरे बाद यहां पहुंचा था । प्रेम सागर की फोन काल के वक्त लोकेश उसके पास यहां मौजूद नहीं हो सकता था ।"

"फिर प्रेम सागर ने ऐसा कहा क्यों ?"

"उसने यह नहीं कहा था कि लोकेश उसके पास मौजूद था । उसने कहा था कि लोकेश कहता है..."

"उसने ऐसा भी क्यों कहा ?

"क्या पता क्यों कहा ?"

"हूं । अब अगला सवाल । लोकेश जब क्लब से यहां पहुंचा था तो आपने उसमें कोई असाधारण बात नोट की थी ?"

"कैसी भी ?"

"इन्स्पेक्टर, पहले एक सवाल मेरा ?"

"फरमाइए ?"

"आप लोकेश के बारे में - खास लोकेश के बारे में - इतने सवाल क्यों पूछ रहे हैं ?"

"कोई खास वजह नहीं । सिवाय इसके कि केस की तफ्तीश के दौरान सवाल पूछना मेरा फर्ज है । मेरा धन्धा है । मेरी नौकरी का हिस्सा है । इन्हीं बातों की तो मैं तनख्वाह पाता हूं ।"

"मैं लोकेश को बहुत अच्छी तरह से जानता हूं । बहुत अच्छा लड़का है वो । जज्बाती है लेकिन जहीन है । अगर आप समझते हैं कि कत्ल उसने..."

"नहीं, नहीं । ऐसी कोई बात नहीं । फिलहाल ऐसी कोई बात नहीं । हम सिर्फ तफ्तीश कर रहे हैं । हर किसी को अच्छी तरह से एग्जामिन करना मेरी ड्यूटी है ।"

दीवान साहब चुप रहे ।

"आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया ।"

"भई, वो क्या है कि वो जरा अपसैट था, हांफ रहा था । मैंने उससे पूछा भी था कि वह हांफ क्यों रहा था ? जवाब में उसने कहा था कि वह सीढियां चढ कर अया था इसलिए हांफ रहा था ।"

"बस ! इतनी ही बात थी अपसेट होने की ?"

"हां । और क्या बात होती ?"

"वह घबराया या बौखलाया नहीं लग रहा था ?"

"नहीं ।"

"या कांप रहा हो ? या उसका जिस्म रह रह कर झुरझुरी ले रहा हो ?"

"नहीं । कतई नहीं ।"
"अब एक आखिरी सवाल ।"
"वह भी पूछिए ।"
"लोकेश आपका अजीज है, आप पुराने वाकिफ हैं उससे, आप उसके किसी हित को निगाह में रखते हुए झूठ बोल सकते हैं ।"
"जवाब डिटेल में जाकर दूं या संक्षेप में ?"
"संक्षेप में ।"
"तो मेरा जवाब है - नहीं ।"
"शुक्रिया, दीवान साहब । मैं मशकूर हूं आपका आपकी मदद के लिए ।"
दीवान साहब उठ खड़े हुए ।
"लोकेश को जरा भेज दीजिएगा ।"
"बेहतर ।"
दीवान साहब वहां से बाहर निकल गए ।
"देखा, सर ।" - महेश्वरी बोला - "हमेशा वो शख्स किसी न किसी बहाने किसी न किसी की तवज्जो वक्त की तरफ दिलाता रहा ।"
भूप सिंह ने सहमति में सिर हिलाया ।
"क्यों ? खामखाह !"
"खामखाह तो नहीं हो सकता ऐसा ।" - भूपसिंह बड़ी गम्भीरता से बोला ।
"टाइम पर सारा जोर जरूर यह स्थापित करने के लिए है कि हत्या के वक्त यानी कि तीन बजकर पांच मिनट पर वह घटना स्थल पर नहीं था । ऐसा जबरन स्थापित करने की कोशिश वही कर सकता है जिसके मन में चोर हो । लोकेश की हर हरकत जाहिर करती है कि उसे एडवांस में मालूम था कि अपने बचाव के लिए उसे एक ठोस एलीबाई की जरूरत पड़ने वाली थी । ऐसी तभी मुमकिन है जब कि वह खुद कातिल हो ।"
"लेकिन उसने कत्ल किया कब हो सकता है ?"
"यकीनन दीवान साहब से मुलाकात होने से पहले । क्योंकि उसके बाद तो लाश की बरामदी तक दोनों एक साथ थे । लोकेश को क्योंकि प्रेम सागर खुद दरवाजा खोलने वाला था इसलिए उसका तीन बजने में पांच मिनट से पहले का यहां आगमन छुपा रह सकता था । वह जरूर पहले चुपचाप यहां आया होगा । उसने प्रेम सागर का कत्ल किया होगा और फ्लैट से बाहर निकल कर सीढियों में कहीं छुप गया होगा । उसने दीवान साहब को यहां आते देखा होगा और फिर उनके पीछे-पीछे ही वह भी यहां पहुंच गया होगा ।"
"महेश्वरी" - भूप सिंह असहाय भाव से बोला - "वक्त इस थ्योरी को सहारा नहीं दे रहा । यहां आने से पहले तो वह क्लब में था । बीच का वक्फा वह टैक्सी में था, उसे कत्ल के लिए वक्त कब को..."
तभी लोकेश ने फिर स्टडी में कदम रखा ।
बार-बार के बुलावों से लोकेश तनिक भी घबराया नहीं था । उसे मालूम था कि कत्ल के बाद उस पर शक होना था और उस शक के दौरान उससे तगड़ी पूछताछ होनी ही थी । वह खुश था कि वह हर तरह की पूछताछ के लिए तैयार था । कत्ल की उसकी फूलप्रूफ योजना कारगर साबित हुई थी । कोई ऐसा सवाल नहीं था जिसकी उसे पहले से अपेक्षा

नहीं थी या जिसका मुनासिब जवाब उसने पहले से ही सोचा नहीं हुआ था । ये पुलिसिये जितनी बार मर्जी उसे तलब करते, उसे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था ।

उसकी निगाह में सबसे अहम बात यह थी कि दीपा अब सुरक्षित थी ।

स्टडी में दाखिल होते ही अपने आप उसकी निगाह 'अपने दोस्त' घड़ियाल की तरफ उठ गयी ।

ठीक पौने छ: बजे थे ।

इन्स्पेक्टर के संकेत पर वह उसके सामने बैठ गया ।

"पुलिस की" - लोकेश सहज स्वर में बोला - "मेरे पर कुछ खास मेहरबानी हो रही मालूम होती है ।"

"सच पूछिए तो, हां ।" - भूप सिंह बड़ी संजीदगी से बोला ।

"वजह ?"

"वजह आपको मालूम है । हमसे जानना चाहते हैं तो वजह यह है कि हमें आप ही हत्या के सबसे ज्यादा सम्भावित कैन्डीडेट लग रहे हैं ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि सिर्फ आप के पास हत्या को कोई उद्देश्य है ।"

"मेरी बदकिस्मती ।"

"इसीलिए हम आपके बयान को ज्यादा से ज्यादा बारीकी से टैस्ट करने की जरूरत महसूस कर रहे हैं ।"

"एसिड टैस्ट कीजिए, जनाब । तेजाब में डाल कर देखिए कि मेरा बयान उसमें घुलता है या नहीं ।"

"ऐसा ही कुछ करने का इरादा है हमारा । और फिर उसमें आप ही का फायदा है ।"

"मेरा फायदा ?"

"हां । आपके बयान की सच्चाई ही तो आपको कत्ल के इलजाम से बरी करायेगी ।"

"ओह ! आई सी । आई सी ।"

"हमारी तफ्तीश बताती है कि लाश की बरामदी से पहले आप जहां भी रहे, किसी न किसी की तवज्जो आप वक्त की तरफ दिलाते रहे । क्लब में आपने क्लब के सैक्रेट्री की टाइम की तरफ तवज्जो दिलाई । ऐसा ही यहां आपने दीवान साहब के साथ किया । ऐसा क्यों कर हुआ ?"

"इत्तफाक से हुआ !" - लाकेश बोला - "और मेरी खुशकिस्मती से हुआ ।"

"आपकी खुशकिस्मती बड़े अनोखे वक्त आपके काम आई ।"

"तभी तो इसका नाम खुशकिस्मती है । ऐसा न हुआ होता तो यकीनन आपने अभी तक मुझे गिरफ्तार कर लिया होता ।"

"ऐसा इत्तफाक आपके साथ अक्सर होता है ?"

"होता है । नहीं भी होता । वैसे मौजूदा हालात में टाइम के जिक्र को पूरी तरह से इत्तफाक तो नहीं कहा जा सकता ।"

"क्यों ?"

"देखिये । क्लब के सैक्रेट्री से टाइम का जिक्र इसलिए आया था क्योंकि वहां बार बन्द होने के वक्त के बाद भी बार खुला था और मैंने बतौर शिकायत सैक्रेट्री की तवज्जो टाइम की तरफ दिलाई थी । दीवान साहब मेरे बुजुर्ग हैं । यह मेरी नालायकी

होती कि मैं उन्हें इन्तजार करवाता । इसलिए उनके सामने टाइम का जिक्र इसलिए आया था ताकि उन्हें यह अहसास हो सके कि मैं उनके बाद तो पहुंचा था लेकिन मेरी वजह से उन्हें इन्तजार नहीं करना पड़ा था ।"

"वक्त आपने या तो क्लब के सैक्रेट्री से पूछा या घड़ियाल में देखा । इस काम के लिए आपने अपनी घड़ी क्यों नहीं देखी ।"

"क्योंकि इस पर मैं जब भी निगाह डालता यह सवा ग्यारह बजे का ही वक्त बताती ।"

"मतलब ?"

"घड़ी बिगड़ गयी है । आज ही बिगड़ी है । देख लीजिए ।" - लोकेश ने अपनी कलाई इन्स्पेक्टर के आगे फैलाई - "यह अभी भी सवा ग्यारह पर रुकी हुई है ।"

"बिगड़ी हुई घड़ी कलाई पर लगाये रखने का मतलब !"

"जेब में रखने से अच्छा है कि यह कलाई पर लगी रहे । यूं मुझे याद तो रहेगा कि मैंने इसे मरम्मत के लिए घड़ीसाज को देना है ।"

"दीवान साहब कहते हैं कि जब आप फ्लैट पर पहुंचे थे तो आप बहुत अपसैट लग रहे थे और आपकी सांस उखड़ रही थी । उन्होंने इब बाबत आपको टोका भी था ।"

"अपसैट में नहीं था । अपसैट होने की तो वजह ही नहीं थी । अलबत्ता हांफ मैं जरूर रहा था ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मैंने दौड़कर तीन मंजिल सीढियां चढी थीं । जब मैं लिफ्ट के करीब पहुंचा था तो लिफ्ट को मैंने ऊपर को जाता पाया था । मैंने यही समझा था कि लिफ्ट दीवान साहब को ऊपर ले जा रही थी । उन्हें मेरा इन्तजार न करना पड़े इसलिए मैंने दौड़कर सीढियां चढी थीं ।"

"आपने सागर साहब को जान से मार देने की धमकी दी थी ?"

"धमकी देना और उस पर खरा उतर कर दिखाना दो जुदा बातें होती हैं, इन्स्पेक्टर साहब ।"

"मैं जानता हूं ।" - भूपसिंह शुष्क स्वर में बोला - "कोई नई बात नहीं बता रहे हैं आप मुझे ।"

लोकेश खामोश रहा ।

"आपने फोन करके सागर साहब से मुलाकात निर्धारित की थी । उसी मुलाकात की खातिर आप यहां पधारे थे । सागर साहब के कत्ल की वजह से यह मुलाकात न हो पाई । मुलाकात होती तो आप ऐसा क्या कहते या करते जिससे कि दीपा बर्बादी की राह पर कदम उठाने से बच जाती ?"

"कुछ भी कहता या करता, उसका कत्ल न कर पाया होता मैं । इतना हौसलामन्द मैं नहीं ।"

"तो फिर कैसे बात बनती ?"

"मेरा इरादा पैसे से उसका मुंह बन्द करने का था ।"

"पैसे से ? पैसा कहां है आपके पास ? पैसा आपके पास होतो तो कहानी पहले ही न खत्म हो जाती ।"

"मैं उनसे पैसे की अदायगी का वादा कर सकता था ।"

"एक मुफलिस का ऐसा वादा वे मान लेते ?"
"मैं उन्हें किसी की गारण्टी दिलवा सकता था । यूं बात शायद न बनती लेकिन और कोई चारा भी तो नहीं था मेरे पास ।"
"आपने ऐसा इन्तजाम किया था कि दीवान साहब यहां मौजूद हों । दीवान साहब आपकी हर मूवमेन्ट के गवाह हैं और बहुत पक्के, बहुत भरोसे के गवाह हैं । इसे भी मैं इत्तफाक मानूं या आपकी खुशकिस्मती कि ऐसा महत्वपूर्ण गवाह ऐन बवक्ते जरूरत आपको हासिल था ?"
पहले तो लोकेश सकपकाया, फिर जैसे उसके दिमाग में बिजली सी कौंधी ।
"इन्स्पेक्टर साहब, दीवान साहब मेरे गवाह नहीं, मेरे जामिन थे ।"
"मतलब ?"
"मैंने अभी अर्ज किया था कि सागर साहब को चार लाख रुपए की आदयगी की मैं किसी से गारण्टी दिलवाना चाहता था । वह कोई और नहीं, दीवान साहब थे ।"
"आप दीवान साहब से सागर साहब को रकम की गारन्टी दिलाना चाहते थे ?"
"हां ।"
"लेकिन दीवान साहब तो कहते हैं कि उन्हें यही नहीं मालूम था कि उन्हें यहां बुलाया क्यों गया था ।"
"उन्हें इस बाबत मैंने एडवांस में इसलिए नहीं बताया था क्योंकि मुझे डर था कि कहीं वे बहाना बना कर बात को टाल न जायें । उनके यहां पहुंच जाने के बाद मैं एकाएक उनके सामने यह दरख्वास्त रखता तो उनके पिघल जाने की ज्यादा सम्भावना थी ।"
"आपके पासस हर सवाल का बड़ा नपा-तुला, बड़ा चौकस जवाब मौजूद है, मिस्टर भार्गव ।"
लोकेश चुप रहा ।
"खैर, आइये अब नया सवाल ट्राई करें । आपने कहा था कि क्योंकि चार बजे सागर साहब की ट्रेन छूटती थी इसलिए आपको यहां पहुंचने की जल्दी थी और इसीलिए आपने क्लब से यहां तक का मामूली फासला टैक्सी से तय किया ?"
"हां ।"
"आपको कैसे मालूम था कि सागर साहब ने चार बजे की गाड़ी पकड़नी थी ? ऐसा क्या उन्होंने फोन पर कहा था ?"
"न.. नहीं ।"
"तो फिर आपको कैसे मालूम हुआ ? सागर साहब तो आपके आगमन पर यहां मरे पड़े पाये गऐ थे ।"
"मैंने रेवले इन्क्वायरी का नम्बर मिलाकर बम्बई की गाड़ी की रवानगी का वक्त पूछा था ।"
"हूं । बहरहाल जब आप यहां तीन बजने में पांच मिनट पर पहुंचे थे तो वह यहां आज की तारीख का आपका पहला फेरा था ? आप पहले एक बार यहां आकर जा नहीं चुके थे ?"
"हरगिज भी नहीं ।"
"हबीब का ऐसा ख्याल क्यों है ?"
"उसका ख्याल गलत है । मैं एक ही बार यहां आया था । तीन बजने में पांच मिनट

पर । क्लब से सीधा ।"

"जब सागर साहब ने दीवान साहब को फोन किया था, उस वक्त आप सागर साहब के पास नहीं थे ?"

"सवाल ही नहीं पैदा होता ।"

"नहीं थे ?" - भूप सिंह ने जिद की ।

"नहीं ।"

"तो फिर सागर साहब ने फोन पर दीवान साहब को यह क्यों कहा कि लोकेश कहता है कि पैदल सिर्फ पांच मिनट का रास्ता है ? इससे तो यही लगता है कि आप सागर साहब के साथ थे और आपने उसी क्षण सागर साहब को यह बात सुझाई थी ।"

लोकेश का दिल लरजा । अपने दिल के भाव अपने चेहरे पर प्रकट होने से रोके रखना उसे बहुत कठिन काम लगने लगा ।

भूपसिंह अपलक उसे देख रहा था और उसके जवाब की प्रतीक्षा कर रहा था ।

लोकेश जानता था कि जवाब में देरी भी शक का बायस बन सकती थी ।

"यह बात मैंने" - लोकेश अपने स्वर को भरसक सन्तुलित रखता हुआ बोला - "सागर साहब से फोन पर बात करते समय उन्हें सुझाई थी । सागर साहब न जरूर फोन पर मेरे से हुई बात का हवाला दीवान साहब को दिया होगा ।"

ऊपर से लोकेश सन्तुलित था लेकिन मन-ही-मन वह महसूस कर रहा था कि वह चूहे-बिल्ली का खेल अब किसी भी क्षण उसे तोड़कर रख सकता था । ऊपर से वह इन्स्पेक्टर इतना काईयां था कि उसके व्यवहार से यह पता नहीं लगता था कि कौन सा जवाब उसे जंचा था और कौन सा नहीं जंचा था ।

"इस लिहाज से तो" - भूपसिंह बोला - "सागर साहब के दीवान साहब को फोन करने से 'पहले' आपने सागर साहब को फोन किया होगा ।"

"जाहिर है ।" - लोकेश बोला ।

"जाहिर नहीं है । हां या न में जवाब दीजिए, भार्गव साहब ।"

"हां ।" - लोकेश कठिन स्वर में बोला । पता नहीं अब यह इन्सपेक्टर किस फिराक में था ।

"तो फिर बरायमेहरबानी यह बताइये" - भूप सिंह तनिक आगे को झुक कर उसे घूरता हुआ बोला - "कि फिर दीवान साहब आप से पहले यहां कैसे पहुंच गये ?"

लोकेश का दिल जोर से उछला ।

"क.. क्या... क्या मतलब ?"

"आपने क्लब से सागर साहब को फोन किया और टैक्सी पर सवार होकर अपने पांच मिनट के यहां तक के सफर पर रवाना हो गये । आप से फोन पर बात हो चुकने के बाद सागर साहब ने दीवान साहब को फोन किया और फिर दीवान साहब अपने पांच मिनट के सफर पर यहां के लिए रवाना हो गये । फिर भी दीवान साहब आपसे पूरा एक मिनट पहले यहां कैसे पहुंच गये ?"

भीतर से लोकेश को लग रहा था जैसे उसे शिकंजे में कसा जा रहा था और वह आजाद होने के लिए तड़फड़ा रहा था ।

"सागर साहब को फोन करने के बाद" - एकाएक उसे जवाब सूझ गया - "एक फोन मैंने और किया था ।"

“बावजूद इसके कि आपको सागर साहब से मिलने की बहुत जल्दी थी, आपको और फोन करने के लिए वहां अटके रहना सूझा !”

“मुलाकात की वो जल्दी उस दूसरी फोन काल के बाद ही पैदा हुई थह, इन्स्पेक्टर साहब ।”

“जी !”

“वो दूसरी फोन काल मैंने रेलवे इन्क्वायरी को की थी । तभी मुझे सागर साहब की गाड़ी के छूटने का वक्त मालूम हुआ था । तभी मैंने यह निर्णय लिया था कि एक क्षण भी बर्बाद किये बिना मुझे सागर साहब से मिलने पहुंच जाना चाहिए था । तभी मैंने टैक्सी बुलवाई थी ।”

कितनी ही देर भूप सिंह के मुंह से बोल न फूटा ।

“वाकेई” - फिर वह बोला - “आप के पास हर सवाल का जवाब है ।”

लोकेश खामोश रहा ।

“आप हमें कुछ और बताना चाहते हो ?”

“मैंने क्या बताना है । मैं तो जो कुछ जानता था, आपको कई-कई बार बता चुका हूं । आप ही बताइये, आप मेरे से कुछ और पूछना चाहते हैं ।”

“नहीं । फिलहाल नहीं ।”

“फिलहाल । अभी भी फिलहाल ।”

भूप सिंह ने असहाय भाव से कन्धे झटकाये और बड़े खेदपूर्ण ढंग से मुस्कराया ।

“ठीक है” - लोकेश उठता हुआ बोला - “ऐसे ही सही ।”

“असुविधा के लिये हमें खेद है ।”

“वो तो होगा ही ।”

वह वहां से विदा हो गया ।

“अब ?” - स्टडी का दरवाजा फिर बन्द हो गया तो भूपसिंह अपने मातहत की तरफ घूमा ।

“आप बोलिये, सर ।” - महेश्वरी खोखले स्वर में बोला ।

“मैं भी क्या बोलूं ?”

“वैसे हद है, सर । उसके पास तो हमारे हर सवाल का बड़ा फैंसी, बड़ा सजता हुआ जवाब है । हमारी हर शंका का समाधान है उसके पास । पट्ठा फंस ही नहीं रहा किसी तरीके से ।”

“क्या पता वो सच ही बोल रहा हो ।”

“मेरा दिल नहीं मानता । पेच कहीं वक्त में ही है, सर ।”

“हां । शायद” - भूप सिंह आह भर कर बोला - “लेकिन बात समझ में आये तो कैसे आये ।”

महेश्वरी की निगाह अपने आप घड़ियाल की तरफ उठ गई ।

“क्या पता” - वह बोला - “इस घड़ियाल के साथ कोई छेड़खानी की गई हो ।”

भूप सिंह ने भी घड़ियाल की तरफ देखा ।

“सर, लोकेश की अपनी घड़ी रुकी हुई है, दीवान साहब घड़ी बांधते नहीं । हमारे पास जितने वक्तों का हवाला है, वे सब इस घड़ियाल में ही देखे गए थे । इस बात की क्या गारन्टी है कि घड़ियाल ने हर वक्त ठीक बताया था ।”

"घड़ियाल" - भूप सिंह अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डालता हुआ बोला - "बिल्कुल सही टाइम दे रहा है ।"

"अब, सर, अब सही टाइम दे रहा है । लेकिन इसकी क्या गारन्टी है कि यह तब भी सही टाइम दे रहा था जब लोकेश यहां पहुंचा था या जब वह दीवान साहब के साथ यहां से विदा हुआ था ।"

भूप सिंह सोचने लगा ।

"एक बात की तो गारन्टी ? कि कत्ल अगर लोकेश भार्गव ने किया है तो ऐसा उसने दीवान साहब से यहां मुलाकात से होने पहले किया था । क्या पता लोकेश घड़ी में अपना कोई खास पसन्दीदा वक्त सिर्फ दीवान साहब को दिखाने के लिए बजाने में कामयाब हो गया हो ! मेरा मतलब है, पहले उसने घड़ी को पीछे कर दिया हो और फिर उसी हिसाब से आगे कर दिया हो !"

"यह तो बहुत चालाकी की बात होगी ।"

"लोकेश भार्गव भी कोई कम चालाक नहीं दिखाई दे रहा सर ।"

"हूं ।"

"इस सारे केस का एक ही हल है, सर कि इस घड़ियाल के साथ कोई छेड़खानी की गई है ।"

"की गई है तो इसे साबित कैसे किया जाए ? यह तो ऐसा ही है जैसे किसी लड़की की सूरत देखकर यह बताना कि इसे थोड़ी देर पहले किस किया गया था या नहीं ।"

"लड़की की लिपस्टिक उतर कर दूसरे के मुंह पर लग जाती है, सर ।"

"लेकिन घड़ियाल तो लिपस्टिक भी नहीं लगाता ।"

"उस पर उंगलियों के निशान..."

"कहां मिलेगे । टाइम में छेड़ाखानी करने के लिए सिर्फ मिनट की सुई को छूना काफी होगा । उस सुई को तो एक उंगली से आगे पीछे धकियाया जा सकता है । एक उंगली भी जरा सी कहीं सुई से छुएगी । उंगलियों के निशान - वो भी बहुवचन में जरूर ही मिलेंगे घड़ियाल की मिनट की सुई पर ।"

"सर कोई तो बात होती होगी जो यह बता सके कि घड़ियाल की सुईयों को पहले पीछे और फिर आगे सरकाया गया था ।"

"मुझे तो कोई ऐसी बात नहीं मालूम । ऊपर से हमें यह बात मालूम हो भी जाये कि घड़ियाल की सुईयों के साथ छेड़छाड़ की गयी थी तो अपनी इस जानकारी को इस्तेमाल करने का कोई कारआमद तरीका भी तो हमारे पास होना चाहिये ।"

"पहले असलियत मालूम हो, फिर तरीका भी सूझ जायेगा ।"

"हवा में मछलियां पकड़ रहे हो, बेटा ।"

"सर, फिर भी..."

"क्या फिर भी ?"

"मुझे एक बात सूझी है ।"

"क्या ?"

"जरा लड़की के पहले बयान को याद कीजिये । उसने कहा था कि वह लोकेश और दीवान साहब के आफिस का चक्कर काट कर लौट आने के बाद यहां आयी थी । उससे पहले उसने एक बार तब स्टडी में कदम रखा था जब वह अपने पासपोर्ट की खातिर यहां

आयी थी और उसने स्टडी को खाली पड़ा पाया था । इस दो फेरों के बीच के वक्त वह ड्राईंगरूम में थी और उसका अन्दाजा है कि वह कोई बीस मिनट वहां मौजूद रही थी जब कि वह वहां म्यूजिक सुनती रही थी ।"

"ठीक है । मुझे याद है लड़की का बयान । क्या खामी है इसमें ?"

"खामी अभी आगे आती है, सर ! सुनिये ।"

"मैं सुन रहा हूं । तुम कुछ कहो भी ।"

"जब वह पहली बार यहां आयी थी, मेरा मतलब है जब उसने कमरा खाली पाया था, उसके कथनानुसार तब घड़ियाल तीन बज कर तीन मिनट बजा रहा था ।"

"वक्त तीन बजकर तीन मिनट और कमरा खाली । जाहिर है कि यह तो वो वक्त हुआ जब लोकेश दीवान साहब के साथ उनके आफिस का चक्कर लगाने गया हुआ था ।"

"हुआ । सर, जिस खामी का इन्तजार आप कर रहे थे, वो अब यहां आती है ।"

"मतलब ?"

"लोकेश और दीवान साहब तीन बजे के करीब यहां से गये थे । लड़की तीन बज कर तीन मिनट पर यहां आती है । इसका मतलब है लोकेश और दीवान साहब को तब तक यहां से गये तीन मिनट हो भी चुके थे । दीवान साहब के आफिस का चक्कर लगाकर लौटना कुल जमा दस मिनट का काम था जिसमें से तीन मिनट लड़की के पहले फेरे तक हो भी चुके थे । उन लोगों के लौटने के बाद वह दोबारा यहां आ गयी थी । वह कहती है कि वह कम से कम बीस मिनट बाहर रही थी जब कि हमारा हिसाब बताता है कि उसके दो फेरों के बीच ज्यादा से ज्यादा सात या आठ मिनट का वक्फा होना चाहिए ।"

"शायद उसे वक्त की बाबत कोई धोखा हुआ हो ।"

"खामखाह धोखा काहे को होगा, सर !"

"बात तो तुम्हारी सही । हर बात लोकेश की सहूलियत के लिए ही भला कैसे हो सकती है ? हम यह मानकर चलते हैं कि लड़की को वक्त का धोखा नहीं हुआ । इस लिहाज से उन दोनों की यहां से गैरहाजिरी के दौरान लड़की यहां आयी नहीं हो सकती । वह बहुत पहले, सम्भवत: दीवान साहब और लोकेश के आगमन से भी पहले यहां आयी थी ।"

"लेकिन लड़की को अच्छी तरह से याद है कि उसने घड़ियाल को तीन बज कर तीन मिनट बजाते देखा था । और यह वो वक्त था जब कि दीवान साहब और लोकेश यहां आकर जा भी चुके थे ।"

"यह कैसे सम्भव हो सकता है ?"

"एक तरीके से यह सम्भव हो सकता है, सर ।"

"कैसे ?"

"घड़ियाल ने दो बार तीन बजकर तीन मिनट बजाये थे । एक बार वह वक्त उस पर जबरन बनाया गया था और दूसरी बार वह घड़ियाल का स्वाभाविक वक्त था ।"

"यानी कि किसी ने अपनी सहूलियत के मुताबिक घड़ियाल की सुइयों के साथ छेड़ाखानी की ।"

"यकीनन की । यही इस गोरखधन्धे का हल है । घड़ियाल ने दो बार तीन बजकर तीन मिनट का समय दिखाया था । एक बार तब जब लोकेश और दीवान साहब यहां से दीवान साहब के आफिस का चक्कर काटने गये थे और जब उनकी गैरहाजिरी में घड़ियाल

में तीन बजकर तीन मिनट बजे थे । अब तक हम यह सोच रहे थे कि यह वो वक्त था जब दीपा पहली बार यहां आयी थी जो कि अब लगता है कि नहीं हो सकता । वह उनकी गैरहाजिरी में यहां आयी होती तो उसके दोबारा यहां आने तक बीस मिनट न गुजरे होते । वह उस वक्त से पहले यहां आयी थी और घड़ियाल में तब भी तीन बज कर तीन मिनट बजे उसने देखे थे ।"

"वह वक्त कौन-सा रहा होगा ?"

"निश्चय ही दीवान साहब के आगमन से पहले का कोई वक्त ।"

"लेकिन तब प्रेम सागर यहां होना चाहिए था । आखिर यहीं से उसने दीवान साहब को फोन किया था और दीवान साहब पांच मिनट में यहां पहुंच गये थे ।"

"ऐग्जेक्टली । सर, प्रेम सागर को तब यहां होना चाहिए था लेकिन वह नहीं था । तब कमरा खाली था । क्या इसी से साबित नहीं होता कि प्रेम सागर तब बैडरूम में मरा पड़ा था । घड़ियाल तब तीन बजकर तीन मिनट दिखा रहा था इससे सिद्ध होता है कि हत्यारे को अभी तक घड़ियाल के टाइम में हेराफेरी करने का मौका नहीं मिल पाया था लेकिन हेराफेरी हुई थी, वह हेराफेरी कर के गया था वर्ना दीवान साहब के आगमन के वक्त घड़ियाल अभी तीन से भी कम वक्त न दिखा रहा होता, और हत्यारा वह हेराफेरी करने के लिए वहां मौजूद था ।"

"कहां ?"

"ऐसी एक हो जगह मुमकिन है ।"

"बैडरूम में लाश के साथ ?"

"जी हां । वहीं वह कत्ल कर चुकने के बाद एकाएक स्टडी में पहुंच गयी दीपा के लौट जाने का इन्तजार कर रहा था । फिर जब लड़की चली गयी तो वह बाहर निकला, उसने घड़ी को पीछे किया ताकि वह दोबारा तीन बजकर तीन मिनट बजाने को तैयार हो सके और फ्लैट से बाहर निकल गया ।"

"लोकेश !"

"वाई नाट ?"

"यानी कि अगर हम यह साबित कर सकें कि लड़की का स्टडी में पहला फेरा जिस तीन बजकर तीन मिनट पर लगा था वह वक्त दीवान साहब के आगमन से पहले का था न कि बाद का तो हम यह साबित हुआ मान सकते हैं कि घड़ियाल के साथ छेड़ाखानी की गई थी ।"

"यस, सर । फिर लोकेश की एलीबाई जो सिर्फ घड़ियाल के वक्त पर निर्भर है, भक्क से उड़ जायेगी ।"

"लेकिन हम यह साबित कैसे कर सकेंगे ?"

"साबित होगा, सर । मैं लड़की को फिर बुलाता हूं ।"

***

"माफ कीजियेगा, मैडम" - भूप सिंह सहज स्वर में बोला - "एक छोटी-सी बात आपसे पूछनी भूल गयी थी ।"

"पूछिए वह भी ।" - दीपा तिक्त स्वर में बोली ।

"आपने कहा था कि जब आप अपने पासपोर्ट के बारे में सागर साहब से पूछने के लिए यहां आई थीं तो उस वक्त इस घड़ियाल में तीन बजकर तीन मिनट हुए थे । दुरुस्त

?”
“जी हां ।”
“जरा याद कीजिए कि आपने यहां क्या किया था ।”
“करना क्या था मैंने ! मैंने कमरा खाली पाया था । यह सोचकर कि वे शायद बेडरूम में हों, मैंने सागर साहब को एकाध आवाज लगाई थी ।”
“ऊंचे स्वर में ! जो कि बैडरूम में सुनाई दे सके ?”
“हां । मैंने बैडरूम के दरवाजे पर दस्तक भी दी थी लेकिन कोई जवाब नहीं मिला था । तब मुझे नहीं मालूम था लेकिन अब मैं जानती हूं कि वो तो तभी बैडरूम में मरे पड़े थे ।”
“फिर ?”
“फिर मुझे पासपोर्ट मेज पर पड़ा दिखाई दे गया था । मैं पासपोर्ट के लिए ही यहां आई थी । मैंने पासपोर्ट उठाया और यहां से चली गई ।”
“बैडरूम से जवाब न मिलने पर आपने उस वक्त क्या सोचा था ?”
“उस वक्त तो मैंने यही सोचा था कि सागर साहब या तो टायलेट में होंगे या कोई और जरूरी काम कर रहे होंगे । पासपोर्ट मिल जाने के बाद क्योंकि मैंने आवाज देकर यह कहा था - ‘पासपोर्ट मेज पर पड़ा मिल गया है । मैं इसे लेकर जा रही हूं ।’ - तो उन्होंने दरवाजा खोलना बेमानी समझा होगा । तब एक ख्याल यह भी मेरे मन में आया था कि शायद वे वहां थे ही नहीं ।”
“वो किस लिए ?”
“क्योंकि यह लोकेश के वहां से विदा होने का भी वक्त था । लोकेश वहां उनसे मिलने आने वाला था लेकिन उन्होंने कहा था कि वे तीन बजे तक हर हाल में उसे चलता कर देंगे । मैंने समझा था कि वे लोकेश को बाहर तक छोड़ने के लिए चले गए थे ।”
“घड़ियाल की तरफ आपकी तवज्जो कैसे गई थी ?”
“लोकेश की वजह से । वह तीन बजे तक चला जो जाने वाला था । टाइम की तरफ मेरा ध्यान यही जानने के लिए गया था कि मैं उसके चले जाने के वक्त से पहले तो वहां नहीं आ गयी थी ।”
“तब घड़ी में तीन बजकर तीन मिनट हुए थे ?”
“हां ।”
“आपको ठीक से याद है कि पासपोर्ट की बाबत यही फिकरा कहा था - पासपोर्ट मेज पर पड़ा मिल गया है, मैं इसे लेकर जा रही हूं ?”
“हां ।”
“आप पासपोर्ट उठाकर वापिस ड्राईंगरूम में चली गई थीं ?”
“हां ।”
“अब पासपोर्ट कहां है ?”
“मेरे बैग में ।”
“थैंक्यू । थैंक्यू वैरी मच । आपने बहुत मदद की हमारी । अब आप जा सकती हैं ।”
दीपा उठ खड़ी हुई लेकिन उसने वहां से जाने का उपक्रम नहीं किया ।
भूप सिंह ने प्रश्नसूचक नेत्रों से उसकी तरफ देखा ।
“मैं एक बात कहना चाहती हूं ।” - वह कठिन स्वर में बोली ।

"जरूर कहिये । बेहिचक कहिये ।"

"मैं लोकेश की बाबत बहुत अनाप-शनाप बक चुकी हूं । मेरी प्रार्थना है कि आप उसे खातिर में न लाइयेगा । तब मैं बहुत गुस्से में थी और तब अभी मैं मरने वाले की असलियत से वाकिफ नहीं थी । उस वक्त मेरी मानसिकता ऐसी थी कि मैं किसी पर भी कातिल होने का इलजाम लगा सकती थी ।"

"आई अण्डरस्टैण्ड ।"

"लोकेश ने जो कुछ कहा या किया मुझे बचाने के लिए किया । तब मेरे पर सागर साहब का जादू सवार था इसलिए मैंने उसकी एक न सुनी और खुद भी उसे बहुत बुरा-भला कहा । अब मेरी आंखें खुल चुकी हैं । मैंने उसके बारे में जो कुछ कहा, गुस्से में कहा, न कि तथ्यों के आधार पर कहा । इसलिए मेरी आप से प्रार्थना है कि आप मेरे बयान को, जो कि बयान कम था, एक विक्षिप्त व्यक्ति का प्रलाप ज्यादा था, उसके खिलाफ इस्तेमाल करने की कोशिश न कीजियेगा ।"

"आप निश्चिन्त रहिये, लोकेश के साथ ऐसी कोई ज्यादती नहीं होगी ।"

"शुक्रिया !"

वह वहां से विदा हो गयी ।

भूप सिंह की निगाह ने दरवाजे तक उसका पीछा किया और फिर वापिस अपने मातहत पर लौटी ।

"अब तो बात साफ है, सर !" - महेश्वरी तनिक उत्तेजित स्वर में बोला ।

"कैसे ?" - भूप सिंह बोला ।

"लड़की का पासपोर्ट यह फैसला कर सकता है कि लोकेश भार्गव गुनहगार है या बेगुनाह ।"

"कैसे ?"

"हम उससे यह सवाल करेंगे कि जब वह यहां आया था तो उसने मेज पर पासपोर्ट पड़ा देखा था या नहीं ।"

"उससे क्या होगा ?"

"सर, प्लीज, जरा समझने की कोशिश कीजिये । अगर लोकेश हत्यारा है तो लड़की के पासपोर्ट लेने आयी होने के वक्त वह बैडरूम के दरवाजे के पीछे प्रेम सागर की लाश के साथ मौजूद रहा होगा और उसे मालूम होगा कि लड़की पासपोर्ट मेज पर से उठा कर ले गयी थी । इस प्रकार पासपोर्ट तब मेज पर पड़ा नहीं हो सकता था जब कि वह कहता है कि वह पहली बार यहां पहुंचा था ।"

"दीवान साहब के आगमन के बाद ।"

"जी हां ।"

"लेकिन अगर वह कहता है कि पासपोर्ट उसने मेज पर पड़ा देखा था तो इसका मतलब होगा कि वह उसके वहां आगमन के बाद और फिर उसके और दीवान साहब के वहां से विदा हो जाने के बाद वहां से उठाया गया था । यानी कि जब घड़ियाल सच में ही तीन-तीन बजा रहा था । इसका मतलब यह होगा कि घड़ियाल के साथ कोई छेड़ाखानी नहीं हुई थी और उसकी एलीबाई चौकस थी ।"

"यानी कि अगर वह कहता है कि अपने आगमन पर उसने पासपोर्ट मेज पर पड़ा नहीं देखा था तो वह गुनहगार है । अगर वह कहता है कि उसने पासपोर्ट मेज पर पड़ा

देखा था तो वह बेगुनाह है ।"

"जी हां ।"

"ठीक है । बुलाओ उसे ।"

लोकेश फिर इन्स्पेक्टर के सामने पेश हुआ । इस बार वह बहुत ज्यादा थका-मांदा और टूटा हुआ लग रहा था ।

"हां तो, भार्गव साहब" - भूप सिंह बोला - "आपका कहना है कि आप सागर साहब से आज इसलिए मिलने आये थे ताकि आप उन्हें मना कर सकें कि वे दीपा साही को अपने साथ लेकर पहले बम्बई और फिर दुबई न जायें ।"

"यह सवाल कम से कम बीसवीं बार पूछ रहे हैं आप ।" - लोकेश तिक्त स्वर में बोला ।

"जब इतनी बार यह सवाल पूछा जा चुका है तो एक बार और सही ।"

"जी हां । यही बात थी । मैं इसीलिए सागर साहब से मिलने आया था ।"

"आज चार बजे के बाद सागर साहब दिल्ली शहर में उपलब्ध न होते ।"

"जाहिर है ।"

"यानी कि वह आखिरी मौका था आपके पास उन्हें मनाने का ।"

"जी हां ।"

"भार्गव साहब" - एकाएक भूप सिंह का स्वर बदला - "यह सच नहीं है ।"

"जी ।"

"सागर साहब ब्लफ मार रहे थे । उन्होंने आपसे झूठ बोला था कि वे आज ही सफर पर रवाना हो रहे थे ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है ?" - लोकेश आवेशपूर्ण स्वर में बोला ।

"ऐसा ही था । कम से कम आज का दिन दीपा सेफ थी । दीपा को आज वे अपने साथ नहीं ले जा सकते थे ।"

"क्यों ? क्यों ?"

"क्योंकि अभी दीपा का पासपोर्ट जरूरी एन्डोर्समेंट के बाद पासपोर्ट आफिस से वापिस नहीं आया था ।"

"गलत । पासपोर्ट वापिस आ चुका था । मैंने खुद अपनी आंखों से उसे यहां मेज पर पड़ा देखा था । मैंने खुद..."

वह बोलता-बोलता यूं रुका जैसे किसी ने उसे बिजली का नंगा तार छुआ दिया हो । एक अजीब-सी नाकाबिलेबर्दाश्त सनसनी एड़ी से चोटी तक उसके जिस्म में दौड़ गयी । उसका दिल धाड़-धाड़ उसकी पसलियों से टकराने लगा और हथौड़े की चोट की तरह कनपटियों में खून बजने लगा । तीर कमान से छूट चुकने के बाद उसे अपनी गलती का अहसास हुआ था । उसे अब साफ लग रहा था कि उसने खुद अपनी पोल खोल दी थी हालांकि उसे कुछ भी पता नहीं था कि उससे किस मन्तव्य के अन्तर्गत नयी जवाबतलबी हो रही थी । उसने मेज पर पड़ा दीपा का पासपोर्ट तब देखा था जब वह प्रेम सागर का शूट करने की तैयारी कर रहा था और जब दुनिया की निगाह में वह वहां नहीं था । दोनों पुलिसियों के चेहरों पर वह एकाएक एक बड़ी अजीब चमक आयी देख रहा था । जरूर पासपोर्ट वहां देखा होने की हामी ने उनकी निगाहों में उसे हत्यारा साबित कर दिया था ।

लेकिन हकीकतन दोनों पुलिसियों का इस बात की तरफ ध्यान ही नहीं था कि लोकेश

बोलता-बोलता बीच में रुक गया था ।

"सुना, महेश्वरी !" - भूप सिंह कह रहा था - "सुना भार्गव साहब ने क्या कहा ? जब ये फ्लैट में आये थे तो पासपोर्ट मेज पर था ।"

"जी हां । सुना ।" - महेश्वरी बोला ।

"अब क्या कहते हो ?"

"अब क्या कहना बाकी रह गया, साहब ! अब कहानी खतम ।"

कहानी खतम - लोकेश ने मन ही मन दोहराया - खेल खतम ।

"मैं अपने आपको गिरफ्तार समझूं ?" - प्रत्यक्षत: वह बोला ।

"काहे को !" - भूपसिंह हैरानी से बोला - "भार्गव साहब, अब तो हम आपके बयान से पूरी तरह सन्तुष्ट हैं ।"

"जी !" - लोकेश भौंचक्का सा कभी भूपसिंह का तो कभी महेश्वरी का मुंह देखने लगा । उसे अभी भी अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था । ऐसा करिश्मा क्योंकर हो गया था - "आपका मतलब है ।" - वह बड़ी कठिनाई से कह पाया - "कि आप मुझे शक से बरी कर रहे हैं ।"

"हां !" - भूपसिंह बोला ।

"बावजूद इसके कि हत्या का उद्देश्य सिर्फ मेरे पास है ।"

"आपके पास हत्या का तगड़ा उद्देश्य है लेकिन उससे तगड़ी आपके पास अपने बचाव के लिए एलीबाई है । हमने आपकी एलीबाई को बहुत बारीकी से चैक किया है और उसे एकदम चौकस पाया है ।"

"तो फिर हत्यारा कौन है आपके ख्याल से ?"

"यहां मौजूद चारों लोगों में से कोई नहीं । जैसी जिन्दगी मरने वाला जी रहा था, उसमें उसके दुश्मनों का क्या घाटा होगा इस शहम में । हमारा ख्याल है कि यह काम किसी बाहरी आदमी का है ।" - भूप सिंह एकाएक उठ खड़ा हुआ - "हम उस बाहरी आदमी को तलाश करके रहेंगे । बहरहाल अब यहां हमारी मौजूदगी बेमानी है । महेश्वरी, ये कागजात सम्भाल लो । हम चल रहे हैं ।"

लोकेश ने चैन की सांस ली ।

वह नहीं जानता था कि कैसे पासपोर्ट की बाबत किसी और सन्दर्भ में दिया उसका जवाब पुलिसियों की तसल्ली कर सका था और उसकी जानबख्शी हुई थी ।

तभी वहां दीवान साहब और दीपा ने कदम रखा ।

घड़ियाल उस वक्त छ: बजने में तीन मिनट बजा रहा था ।

"लोकेश ।" - दीपा लोकेश के करीब आ खड़ी हुई - "क्या हुआ ? क्या ये लोग..."

"कुछ नहीं हुआ ।" - लोकेश हंसने का असफल प्रयास करता हुआ बोला - "पुलिस को सबसे ज्यादा शक मुझ पर था लेकिन अब इन्होंने मुझे शक से बरी कर दिया है ।"

"शक तो" - दीवान साहब बोले - "इन्हें हम सब पर था । लेकिन तुम्हारे पर शक किसलिए ? तुम तो हर वक्त मेरे साथ थे । तुम्हारे पर शक करना तो नादानी है ।"

"नादानी वाली कोई बात नहीं, जनाब ।" - भूप सिंह बोला - "शक भी खामखाह नहीं होता । शक की भी हमेशा कोई बुनियाद होती है । हमें हर बात की तफ्तीश बड़े गौर से, बड़ी जिम्मेदारी से करनी पड़ती है । आप लोगों पर क्या हमें तो इस घड़ियाल पर भी शक था ।"

“इस पर क्या शक था !” - दीवान साहब बोले - “कि यह सही टाइम नहीं दे रहा था ?”

“कि इसके वक्त के साथ हेराफेरी की गई थी, कि इसकी सुइयों के साथ छेड़ाखानी की गई थी ।”

“छेड़ाखानी ! कैसी छेड़ाखानी ?”

“कि आपके आगमन से पहले इसकी सुइयों को पहले पीछे सरकाया गया था और फिर बाद में किसी वक्त आगे कर दिया गया था ।”

“ऐसा भी हो सकता है !” - दीपा हैरानी से घड़ियाल की ओर देखती हुई बोली ।

“सम्भावना थी लेकिन अब हम साबित कर चुके हैं कि ऐसा किया नहीं गया था ।”

“ओह !”

“सहयोग के लिए शुक्रिया, साहबान ।”

“मैं तो चलूं” - दीवान साहब जल्दी से बोले - “दफ्तर में मेरे क्लायन्ट मेरा इन्तजार करते-करते रोने लगे होंगे । जाकर उनके आंसू पोंछूं । बहुत वक्त बरबाद हो गया यहां । थैंक्यू इंस्पेक्टर । गुडबाई, दीपा । सी यू, लोकेश ।”

वे लम्बे डग भरते हुए वहां से विदा हो गए ।

महेश्वरी मेज पर फैले कागजात एक ब्रीफकेस में भर रहा था । भूपसिंह बड़े उतावलेपन से उसका काम खतम होने की प्रतीक्षा कर रहा था ।

“लोकेश !” - दीपा धीरे से बोली ।

लोकेश ने उसकी तरफ देखा ।

“मुझे माफ कर दो ।”

“किस बात के लिए ?” - लोकेश बोला ।

“मैंने तुम्हारे साथ बहुत नाइंसाफी की । बहुत उल्टा-सीधा बोला मैंने तुम्हारे बारे में । बहुत...”

“छोड़ो अब । जो हो गया सो हो गया ।”

“तुम मुझसे खफा तो नहीं ?”

“हरगिज भी नहीं ।”

“फिर मैं जाती हूं । मैं बहुत थक गई हूं । हबीब को कहो मेरे लिए एक टैक्सी मंगवा दे ।”

तभी घड़ियाल की सुइयां छ: बजे का टाइम दिखाने लगी ।

घड़ियाल बजने लगा ।

“टन्न - टन्न - टन्न ।”

दीपा एक कुर्सी के करीब खड़ी थी । घड़ियाल की टन्न-टन्न के साथ वह कुर्सी की पीठ पर थाप देने लगी ।

“टन्न - टन्न - टन्न ।”

तब तक ठिठके खड़े लोकेश ने आगे बढने के लिए कदम उठाया लेकिन एकाएक उसका कदम हवा में ही उठा रह गया ।

“टन्न !”

दीपा चिहुंककर घड़ियाल की तरफ घूमी । उसके चेहरे पर सख्त हैरानी के भाव थे ।

घड़ियाल की सुइयां पूरे छ: बजा रहीं थीं ।

"सात !" - वह फुसफुसाई ।
घड़ियाल सात बार खड़का था लेकिन उस पर टाइम छः का अंकित था ।
एकाएक उसका दिल जोर से उछला । उसके नेत्र दहशत से फट पड़े ।
तो आखिरकार छेड़ाखानी की ही गई थी घड़ियाल के साथ !
"लोकेश !" - वह फुसफुसाई ।
लोकेश उसकी तरफ घूमा ।
"तुमने..."
लोकेश ने सिर झुका लिया ।
दीपा को उसका जवाब मिल चुका था ।
उसने पुलिस वालों की तरफ देखा ।
दोनों कागजात सम्भालने में इतने मग्न थे कि अभी-अभी घड़ियाल ने जो लोकेश की चुगली की थी, उसकी तरफ दोनों में से किसी का भी ध्यान नहीं गया था ।
हकीकत से पुलिस वाले बेखबर थे लेकिन वह हकीकत जान चुकी थी । उसका फर्ज था पुलिस को हकीकत की खबर करना ।
उसने भूपसिंह की तरफ कदम बढाया ।
"महेश्वरी !" - भूप सिंह भुनभुनाया - "जल्दी करो । देर हो रही है । सात बज गए हैं ।"
"सात !" - महेश्वरी हड़बड़ा कर अपनी कलाई घड़ी देखता हुआ बोला - "सात कहां बजे हैं ! छः ही तो बजे हैं, सर ।"
"छः ! कमाल है । मुझे तो अभी यूं लगा था जैसे घड़ियाल सात बार खड़का हो ।"
तभी उसकी तवज्जो अपने समीप आ खड़ी हुई दीपा की तरफ गई ।
"आपको वहम हुआ है" - वह जबरन हंसती हुई बोली - "घड़ियाल छः ही बार बजा था । मुझे घड़ियाल के स्ट्रोक गिनने की आदत है । मैंने इस बार भी आदतन गिने थे । घड़ियाल छः ही बार खड़का था ।"
"हां" - भूप सिंह घड़ियाल की तरफ देखता हुआ बोला - "मैंने ही गलत सुना । छः ही तो बजे हैं ।"
"मैं तैयार हूं, सर ।" - महेश्वरी बोला ।
"गुड" - भूप सिंह लोकेश की तरफ घूमा और फिर बोला - "खुशकिस्मत हो, दोस्त ।"
"जी !" - लोकेश बोला ।
"जो हमारे इस निहायत खतरनाक सब-इन्स्पेक्टर से बच गए । इसे बड़ी मायूसी है कि यह तुम्हें हथकड़ियां डालकर अपने साथ नहीं ले जा रहा । इसका बस चलता तो यह अभी भी तुम्हें साथ लेकर ही जाता ।"
"काश, मैं आपके सब-इन्स्पेक्टर साहब की यह ख्वाहिश पूरी कर सकता ।"
भूप सिंह हंसा ।
"गुड लक" - वह बोला - "एण्ड गुडबाई ।"
दोनों पुलिस अधिकारी वहां से विदा हो गये ।
पीछे लोकेश और दीपा अकेले रह गए ।
कितनी ही देर दोनों बुत से बने एक दूसरे के सामने खड़े रहे ।
कमरे में मरघट का सा सन्नाटा छाया रहा ।

फिर लोकेश ने सन्नाटा तोड़ा ।

"आई एम सारी, दीपा, मैं..."

"कत्ल तुमने किया ।" - वह लगभग फुसफुसाती हुई बोली ।

"तुम्हारी खातिर ।" - लोकेश भर्राये स्वर में बोला ।

"लेकिन किया ।"

"हां ।"

"तुम्हारी छेड़ाखानी की वजह से घड़ियाल छ: बजे सात बार खड़का था ?"

"हां ! ऐसा चार और पांच बजे भी हुआ होगा जब कि चार बजे यह पांच बार खड़का होगा और पांच बजे छ: बार लेकिन जाहिर है कि पुलिसियों की इस तरफ तवज्जो नहीं गयी थी । जितनी बार घड़ियाल खड़का होगा उन्होंने वही टाइम मान लिया होगा । घड़ियाल की सुइयों की तरफ निगाह उठाने की फुरसत उन्हें नहीं रही होगी । या उन्होंने घड़ियाल के स्ट्रोक गिने ही नहीं होंगे ।"

"क्या किया था तुमने ?"

"कत्ल के वक्त तीन बज कर चार मिनट हुए थे । मैंने घड़ियाल की सुइयों को पीछे घुमा कर उनमें वक्त दो बज कर चौवन मिनट कर दिया था ।"

"यानी कि मिनट की सुई तीन बजाने को बारह के अंक पर से दो बार गुजरी ?"

"हां ! इसी वजह से घड़ियाल में एक स्ट्रोक एक्स्ट्रा रिकार्ड हो गया । शुक्र है इस बात की अहमियत तुम्हारे सिवाय किसी ने न समझी ।"

"तुम खूनी हो ।"

"दीपा, तुम्हारी जिन्दगी को तबाह होने से बचाने का यही एक तरीका था मेरे पास ।"

"खून !"

"हां ! प्रेम सागर और किसी तरीके से बाज नहीं आने वाला था । वह चार लाख की रिश्वत से बाज आ सकता था लेकिन मैं गरीब आदमी चार लाख रुपये कहां से लाता । तुम्हें समझाने से बात बन सकती थी लेकिन तुम समझना तो दूर, मेरी बात तक सुनने को तैयार नहीं थीं ।"

वह खामोश रही ।

"दीपा, मैंने जो कुछ किया, तुम्हारी खातिर किया, तुम्हारी मुहब्बत की खातिर किया ।"

"मेरी मुहब्बत की खातिर !"

"हां । जिस पर मुझे उम्मीद है अब तक तुम्हें विश्वास हो गया होगा । मैं तुमसे मुहब्बत करता हूं, दीपा । मैं तुम्हें हासिल करना चाहता हूं । मैं तुम से जल्दी से जल्दी शादी करना चाहता हूं ताकि फिर कोई और प्रेम सागर आकर हमारी मुहब्बत के बीच में दीवार न बन जाये ।"

"मैं एक खूनी से शादी नहीं कर सकती ।"

"दीपा !" - लोकेश आहत भाव से बोला - "तुम क्यों बार-बार मुझे खूनी-खूनी कह रही हो ? खून क्या मैंने अपने किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए किया ? खून मैंने तुम्हारी खातिर किया । तुम्हें तबाह होने से बचाने के लिए किया । और जो अधम, मोरी का कीड़ा मरा है, वह मर ही जाने के लायक था ।"

"मैं अपनी कल्पना एक खूनी की पत्नी के तौर पर नहीं कर पा रही ।"

“कौन जानता है मैं खूनी हूं ?”
“मैं जानती हूं । हमेशा जानती रहूंगी । कभी न भूल पाऊंगी । हर रात तुम्हारे पहलू में लेटते वक्त मुझे यही अन्देशा रहेगा कि अभी तुमने मेरा गला दबाया कि दबाया ।”
“दीपा !” - लोकेश के मुंह से कराह-सी निकली ।
“नहीं, लोकेश । तुम्हारा मेरा साथ अब मुमकिन नहीं ।”
“यह तुम्हारा आखिरी फैसला है ?”
“हां ।”
“एक बार फिर सोच लो ।”
“मैं सोच चुकी हूं ।”
“हमारे साथ की कोई सूरत नहीं ?”
“नहीं ।”
“मैंने नाहक एक खून किया । मैंने खामखाह एक आदमी की जान ली ।”
“हां ।”
“इस अहसास के साथ जीना मेरे लिए भी मुमकिन न होगा । तुम मुझे न ठुकराओ तो मैं समझूंगा कि जो कुछ मैंने किया किसी मिशन की खातिर किया, किसी उद्देश्य की खातिर किया ।”
“सारी लोकेश, फारगेट मी ।”
“आखिरी बार पूछ रहा हूं । हमारे साथ की कोई सूरत नहीं ?”
“नहीं ।”
“फिर मैं पुलिस वालों के साथ ही जाता हूं ।”
उसने स्टडी की एक दीवार पर से छत से लेकर फर्श तक खिंचा परदा सरकाया । आगे एक बन्द दरवाजा था जो बाल्कनी में खुलता था । दरवाजा खोलकर वह बाल्कनी में पहुंचा । बाल्कनी का रुख इमारत के मुख्यद्वार की तरफ था ।
उसने नीचे झांका ।
ड्राइव वे में एक जीप खड़ी थी । उसके देखते-देखते इंस्पेक्टर भूप सिंह और सब-इन्स्पेक्टर महेश्वरी इमारत में से निकले और जीप की तरफ बढे ।
“इन्स्पेक्टर साहब !” - लोकेश उच्च स्वर में बोला ।
दोनों ठिठके । दोनों पुलिसियों ने सिर उठाकर ऊपर देखा ।
लोकेश ने हाथ हिलाकर उनका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया ।
“इन्स्पेक्टर साहब !” - वह पूर्ववत उच्च स्वर में बोला - “जरा रुकिये, अपने सब-इन्स्पेक्टर की ख्वाहिश पूरी करते जाइये ।”
“क्या ?” - भूप सिंह चिल्लाया ।
“इसे कहिये मुझे अपने साथ लेकर जाये । मैं आ रहा हूं ।”
लोकेश रेलिंग फांद गया ।
तीन मंजिल ऊपर से लोकेश की शरीर सब-इन्स्पेक्टर महेश्वरी के कदमों में आकर गिरा ।
पीछे स्टडी में पत्थर की बेहिस मूर्ति बनी दीपा खड़ी रही ।